राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

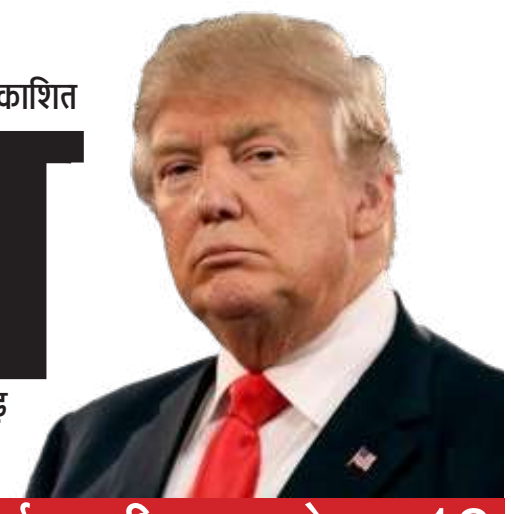

11 नेपाल की चुनौती को काबूकर बांग्लादेश सुपर ...

ट्रंप ने किया इतिहास का सबसे बड़ा निर्वासन अभियान चलाने का ... 12

वर्ष : 12 | अंक : 67 | पटना, मंगलवार, 18 जून, 2024 | विक्रम संवत 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,340
चांदी	55,350
सेंसेक्स	63,327
निफ्टी	18,816

संक्षिप्त खबरें

जम्मू-कश्मीर के बांदीपोरा में सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में आतंकवादी ढेर

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के बांदीपोरा जिले में सोमवार को सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में एक आतंकवादी मारा गया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद सुरक्षा बलों ने रविवार रात जिले के अरागाम इलाके में घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया, जिसके बाद मुठभेड़ शुरू हो गई। सेना की श्रीनगर स्थित चिनार कोर ने बताया कि एक आतंकवादी मारा गया है। उसने बताया कि अंतिम रिपोर्ट मिलने तक अभियान जारी था। चिनार कोर ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में विशेष खुफिया जानकारी के आधार पर, भारतीय सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस द्वारा 16-17 जून की रात को गुरीहाजिन, अरागाम बांदीपोरा में एक संयुक्त अभियान शुरू किया गया; एक आतंकवादी मारा गया, अभियान जारी है। अधिकारियों ने बताया कि आतंकवादियों द्वारा सुरक्षाकर्मियों पर गोलीबारी शुरू करने के बाद मुठभेड़ शुरू हो गई। उन्होंने बताया कि मारे गए आतंकवादी की पहचान अभी नहीं हो पाई है।

ट्रेन हादसा : पश्चिम बंगाल में मालगाड़ी ने कंचनजंगा एक्सप्रेस को पीछे से मारी टक्कर

मालगाड़ी और कंचनजंगा एक्सप्रेस में टक्कर से 15 लोगों की मौत, 60 घायल

प्रात : किरण

न्यू जलपाईगुड़ी/कोलकाता/एजेंसी। पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले में सोमवार को सुबह एक मालगाड़ी की टक्कर लगने के कारण सियालदह जाने वाली कंचनजंगा एक्सप्रेस के पीछे के तीन डिब्बे पटरी से उतर गए, जिससे कम से कम 15 यात्री मारे गए और 60 अन्य घायल हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।उन्होंने बताया कि मरने वालों की संख्या बढ़ सकती है, कई लोग अभी भी डिब्बों में अंदर फंसे हुए हैं। राज्य और केंद्र की विभिन्न एजेंसियां स्थानीय लोगों के साथ मिलकर राहत और बचाव कार्य में युद्धस्तर पर लगी हैं। एक वरिष्ठ रेलवे अधिकारी ने बताया कि मृतकों में मालगाड़ी का पायलट और सह-पायलट भी शामिल है। पुलिस ने बताया कि दुर्घटना में घायल हुए लोगों को उत्तर बंगाल मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल ले जाया जा रहा है। अधिकारी ने बताया कि उत्तर बंगाल के न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन से लगभग 30 किलोमीटर दूर रंगापानी स्टेशन के पास ही मालगाड़ी के इंजन द्वारा पीछे से टक्कर मारे जाने के कारण कंचनजंगा एक्सप्रेस ट्रेन के तीन डब्बे पटरी से उतर गए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट में कहा, पश्चिम बंगाल में रेल दुर्घटना दुखद है। जिन लोगों ने इस हादसे में अपने प्रियजनों को खो दिया है, उनके प्रति मेरी संवेदना है। उन्होंने आगे कहा, मैं प्रार्थना करता हूं कि हादसे में घायल हुए लोग जल्द से जल्द ठीक हो जाएं। मैंने अधिकारियों से बात की और स्थिति का जायजा लिया। प्रभावितों का सहायता के लिए बचाव अभियान जारी है। प्रधानमंत्री ने यह भी घोषणा की कि इस दुर्घटना में जान गंवाने वाले लोगों के परिजनों को दो-दो लाख रुपये की अनुग्रह राशि दी जाएगी, जबकि घायलों को 50 हजार रुपये प्रदान किए जाएंगे। रेल अधिकारियों से प्राप्त प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, यात्री ट्रेन पटरी पर खड़ी थी, तभी मालगाड़ी ने पीछे से उसे टक्कर मार दी। भीषण टक्कर के कारण कंचनजंगा एक्सप्रेस के दो पिछले डिब्बे तुरंत ही पटरी से उतर गए, जबकि एक अन्य डिब्बा मालगाड़ी के इंजन के ऊपर, अधर में लटक गया।

अधिकारियों ने बताया कि इलाके में खराब मौसम के कारण बचाव कार्य में बाधा आ रही है। इस दुर्घटना ने एक वर्ष पहले ओडिशा के बहनागा बाजार के निकट हुए कोरोमंडल एक्सप्रेस दुर्घटना की यादों को ताजा कर दिया है। इस हादसे में लगभग 300 लोग मारे गए थे तथा 1,000 से अधिक लोग घायल हुए थे।

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोशल मीडिया मंच ह्यएक्सह्ण पर किए पोस्ट ने कहा, ह्यअभी-अभी दार्जिलिंग जिले के फांसीदेवा इलाके में एक दुखद रेल दुर्घटना होने के बारे में जानकर स्तब्ध हूं। विस्तृत जानकारी का इंतजार है, बताया जाता है कि कंचनजंगा एक्सप्रेस को एक मालगाड़ी ने टक्कर मार दी है। उन्होंने आगे लिखा, ह्यजिलाधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, डॉक्टर, एंबुलेंस और आपदा टीमों को बचाव, राहत और चिकित्सा सहायता के लिए घटनास्थल पर भेज दिया गया है। युद्धस्तर पर कार्रवाई शुरू कर दी गई है। इस दुर्घटना के कारण उत्तर बंगाल और देश के पूर्वोत्तर भाग से लंबी दूरी की रेल सेवाएं प्रभावित हुई हैं।

राज्य सरकार के अधिकारियों ने बताया कि प्रभावित यात्रियों के परिवहन के लिए आपातकालीन आधार पर क्षेत्र से अतिरिक्त बस सेवाएं शुरू की जा रही हैं। शुरूआती खबरों से पता चला है कि मालगाड़ी के लोको पायलट ने शायद सिग्नल को पार कर लिया होगा। हालांकि, इस बात की पुष्टि नहीं हो पाई है कि सिग्नलिंग सिस्टम में कोई समस्या थी या नहीं या इस बात का कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है कि एक ही ट्रैक पर दो ट्रेनें एक-दूसरे के इतने करीब कैसे आ गईं।

दार्जिलिंग से भाजपा सांसद राजू बिस्ता उन नेताओं में शामिल हैं जो बचाव कार्यों का निरीक्षण करने के लिए तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे। कंचनजंगा एक्सप्रेस के कोच संख्या एस6 में सवार अगरतला के एक यात्री ने बताया कि उसे अचानक तेज झटका महसूस हुआ और भीषण आवाज के साथ डिब्बा रुक गया। उसने यह भी दावा किया कि राहत और बचाव कार्यों में देरी हुई।

एक टेलिविजन चैनल से बात करते हुए यात्री ने कहा, मेरी पत्नी, बच्चा और मैं किसी तरह क्षतिग्रस्त कोच से बाहर निकले। हम अभी भी परेशान ही हैं। बचाव कार्य भी काफी देर से शुरू हुआ।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने रेल दुर्घटना स्थल का दौरा किया: कोलकाता। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सोमवार अपराह्न पश्चिम बंगाल में न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन के पास रंगापानी में ट्रेन दुर्घटना स्थल का दौरा कर स्थिति का जायजा लिया।

सड़क बड़े वाहनों के चलने के लिहाज से संकरी होने के कारण रेल मंत्री को दुर्घटना स्थल तक पहुंचने के लिये कुछ दूरी मोटरसाइकिल के पीछे बैठकर तय करनी पड़ी। पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे (एनएफआर) के एक अधिकारी के अनुसार, सोमवार सुबह रंगापानी स्टेशन के पास एक मालगाड़ी सियालदह जाने वाली कंचनजंघा एक्सप्रेस से पीछे से टकरा गई, जिसके परिणामस्वरूप कई लोगों की मौत हो गई और कई घायल हो गए।

प्रधानमंत्री मोदी ने रेल हादसे में लोगों की मौत पर जताया शोक, मुआवजे की घोषणा की: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को पश्चिम बंगाल में रेल हादसे में लोगों की मौत पर शोक जताया और कहा कि उन्होंने अधिकारियों से बात कर स्थिति का जायजा लिया तथा उन्हें आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही प्रधानमंत्री कार्यालय ने प्रत्येक मृतक के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से 2-2 लाख रुपये और घायलों को 50 हजार रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की। मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, पश्चिम बंगाल में हुआ रेल हादसा बहुत ही दुखद है।

उन लोगों के प्रति संवेदना जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया। घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूं।उन्होंने कहा, अधिकारियों से बात की और स्थिति का जायजा लिया। प्रभावितों की सहायता के लिए बचाव कार्य जारी है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव भी दुर्घटनास्थल पर पहुंच रहे हैं।बाद में प्रधानमंत्री कार्यालय ने मृतकों के परिजनों और घायलों के लिए मुआवजा राशि की घोषणा की। पीएमओ ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने घोषणा की है कि पश्चिम बंगाल में रेल दुर्घटना में मारे गए प्रत्येक मृतक के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से 2-2 लाख रुपए दिए जाएंगे। घायलों को 50,000 रुपए दिए जाएंगे।

रेल दुर्घटना पर राष्ट्रपति मुर्मू ने शोक व्यक्त किया: राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोमवार को पश्चिम बंगाल में हुई रेल दुर्घटना में लोगों की मौत पर शोक व्यक्त किया और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। पुलिस ने बताया कि पश्चिम बंगाल में रंगापानी स्टेशन के पास सोमवार को एक मालगाड़ी और सियालदह जाने वाली कंचनजंगा एक्सप्रेस के बीच टक्कर हो गई, जिसमें कम से कम पांच लोग मारे गए और करीब 30 अन्य लोग घायल हो गए।

बंगाल ट्रेन हादसा: प्रशासन ने जारी किये हेल्पलाइन नंबर: पश्चिम बंगाल के न्यू जलपाईगुड़ी के समीप हुए ट्रेन हादसे के बाद राहत एवं बचाव का काम जोर-शोर से जारी है तथा राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ), राज्य आपदा प्रक्रिया बल (एसडीआरएफ और 15 एम्बुलेंस घटनास्थल पर पहुंच गई हैं।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव इस घटना के बारे में पल-पल की जानकारी ले रहे हैं। वे वॉर रूम में मौजूद हैं और राहत एवं बचाव कार्यों की निगरानी कर रहे हैं।

प्रशासन ने पीड़ितों की सहायता के लिए हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। न्यू बोंगाईगांव स्टेशन हेल्पलाइन नंबर 9435021417 9287998179 हैं। वहीं अलुआबारी रोड इमरजेंसी नंबर- 8170034235, किशनगंज इमरजेंसी नंबर- 7542028020 और 06456-226795, दालखोला इमरजेंसी नंबर- 8170034228 बारसोई इमरजेंसी नंबर- 7541806358 और सैमसी इमरजेंसी नंबर- 03513-265690 03513- 265692 हैं।

दार्जिलिंग रेल दुर्घटना पर धनखड़ ने जताया दुख: उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग में हुई रेल दुर्घटना पर गहरा दुख प्रकट किया है। श्री धनखड़ ने सोमवार को एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि दार्जिलिंग में रेल दुर्घटना में लोगों का मारा जाना दुखद है। उन्होंने कहा, मेरी संवेदनाएं पीड़ित परिजनों के साथ है। उन्होंने घायलों के शीघ्र समस्त होने की कामना भी की। दार्जिलिंग में कंचनजंगा एक्सप्रेस रेलगाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई जिसमें कई लोगों के हताहत होने की खबरें हैं।

रेलवे बोर्ड अध्यक्ष ने आठ लोगों के मरने की पुष्टि की

नई दिल्ली। रेलवे बोर्ड अध्यक्ष एवं सीईओ जया वर्मा सिन्हा ने सोमवार को पश्चिम बंगाल में न्यू जलपाईगुड़ी के समीप ट्रेन हादसे में आठ लोगों के मरने की पुष्टि की है। सुश्री सिन्हा ने कहा, प्रथम दृष्टया मानवीय भूल इसकी वजह मानी जा रही है। शुरूआती संकेत से पता चलता है कि यह सिग्नल की अनदेखी का मामला है। कवच को पश्चिम बंगाल के लिए योजना के अनुसार प्रचारित किया जाना चाहिए।

ट्रेन हादसे को लेकर कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों ने सरकार पर साधा निशाना

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी रेलवे स्टेशन के पास सोमवार को भीषण ट्रेन हादसे को लेकर कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खरगे और राहुल गांधी ने मोदी सरकार पर निशाना साधा है। कांग्रेस नेताओं ने अनुसार यह केंद्र सरकार के घोर कुप्रबंधन का नतीजा है।

रेलवे मंत्रालय में घोर कुप्रंबधन- मल्लिकार्जुन खरगे: खरगे ने इस दुखद हादसे पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि पीड़ितों के परिजनों को तत्काल मुआवजा प्रदान किया जाए। उन्होंने आरोप लगाया कि बीते 10 वर्षों में मोदी सरकार ने रेलवे मंत्रालय में घोर कुप्रबंधन किया है। खरगे ने आगे कहा ह्यमोदी सरकार ने रेल मंत्रालय को कैमरे से संचालित होने वाले मंच में बदल दिया है। आज का हादसा इस स्याह सच की बानगी पेश करता है। कांग्रेस नेता अपने सवालों पर कायम रहेंगे और भारतीय रेलवे के कुप्रबंधन के लिए मोदी सरकार को जवाबदेह बनाएंगे।

बीते 10 वर्षों में रेल हादसों में बढ़ोतरी- राहुल गांधी : उधर राहुल गांधी ने भी इस हादसे के बाद केंद्र सरकार को आड़े हाथों लिया है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के कुप्रबंधन और लापरवाही की वजह से बीते 10 वर्षों में रेल हादसों में बढ़ोतरी हुई है। इस वजह से आए दिन लोगों की मौत हो रही है। राहुल गांधी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा ह्यआज की दुर्घटना इस वास्तविकता का एक और उदाहरण है। एक जिम्मेदार विपक्ष के रूप में, हम इस घोर लापरवाही पर सवाल उठाते रहेंगे और इन दुर्घटनाओं के लिए मोदी सरकार को जिम्मेदार ठहराएंगे। कांग्रेस नेता ने इस हादसे पर शोक प्रकट किया।

रेल मंत्रालय को यात्रियों की सुरक्षा की परवाह नहीं- ममता बनर्जी

उधर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी इस हादसे पर दुख जताया। उन्होंने कहा कि रेल मंत्रालय को यात्रियों की सुरक्षा की कोई परवाह नहीं है। यहां तक कि रेलवे मंत्रालय को अपने अधिकारियों, इंजीनियरों, कर्मचारियों और श्रमिकों की भी परवाह नहीं है। ममता बनर्जी ने आगे कहा कि वे पूरी तरह से रेलवे कर्मचारियों और रेलवे अधिकारियों के साथ हैं। लेकिन केंद्र सरकार को सिर्फ चुनाव की चिंता है। पश्चिम बंगाल की सीएम ने केंद्र सरकार पर आरोप लगाया कि केंद्र सरकार को इस बात की फिक्र रहती है कि चुनाव में हेरफेर और धांधली कैसे करनी है।

लालू यादव ने उठाए सवाल: लालू प्रसाद ने सोशल मीडिया एक्स पर एक लाइन का मैसेज पोस्ट किया है, जिसमें लिखा है- 'देश में लगातार हो रहे रेल हादसों का जिम्मेवार कौन है ? लालू प्रसाद के इस ट्विट पर लोग उन्हें ट्रोल भी कर रहे हैं। एक यूजर जीतेंद्र प्रसाद सिंह, जिसने बायो में खुद को मोदी समर्थक लिखा है ने लालू प्रसाद यादव के कार्यकाल में हुए रेल दुर्घटनाओं का लिस्ट जारी करते हुए सवाल किया है क्या लालू प्रसाद ने इन दुर्घटनाओं के बाद इस्तीफा दिया था। वहीं कुछ यूजर्स ने लालू यादव के कार्यकाल को बेहतर बताया।

भीषण गर्मी के कारण आठवीं कक्षा तक सभी स्कूल बंद

पटना और गया के डीएम ने जारी किया आदेश

प्रात : किरण

पटना। बिहार में झुलसाने वाली गर्मी पड़ रही है। आसमान से आग बरस रहे हैं। पटना समेत कई जिलों में भीषण गर्मी का रेड अलर्ट जारी किया गया है। कई लोग लू लगने से बीमार पड़ रहे हैं। पटना और गया में प्रचंड गर्मी को देखते हुए जिला प्रशासन सभी स्कूल बंद करने का आदेश जारी किया है। उन्होंने कहा कि 18 और 19 जून तक उष्ण लहर की स्थिति बने रहने की सूचना मिली है। इसलिए 19 जून तक सभी स्कूल में आठवीं कक्षा तक अवकाश घोषित कर दिया गया है।

शैक्षणिक गतिविधियों पर रोक लगाया गया

पटना के डीएम शीर्षत कपिल अशोक ने कहा कि उष्ण लहर के कारण छात्रों के स्वास्थ्य और जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना है। इसलिए आठवीं कक्षा तक स्कूल में पढ़ाई 19 जून तक बंद रखने का आदेश जारी किया गया है। इस अवधि में अपने कार्यालय कार्य कर सकते हैं। साथ ही ऑनलाइन माध्यम से कक्षाओं के संचालन की छूट होगी। 19 जून तक प्रभावी रहेगा।

प्रचंड गर्मी व लू से जन जीवन बेहाल : राजधानी पटना सहित पूरे प्रदेश में प्रचंड गर्मी व लुक कहर जारी है जंजीवाद जनजीवन पूरी तरह बेहाल है। लोगों का जीना दुश्वार हो गया है। पूरा बिहार भीष्म उष्ण लहर और उष्ण लहर की चपेट में है। आग बरस रहे आसमान से आमजनों के साथ पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, और जानवर तक परेशान हैं। बारिश के बिछड़ते इस मौसम में खेतों में दरार पड़ते जा रहे हैं। खेती की समय सीमा एक सप्ताह शेष रह गई है। अगर ऐसी स्थिति में मानसून बिहार में प्रवेश नहीं करती है तो किसानों को अपने धन के बीज रोकने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है और किसान खेती कार्य में पिछड़ सकते हैं। कुछ किसानों का यह मानना है कि अपनी बोरिंग से वह अपने खेत में पानी का पटवन करके धान का बीज तो डाल चुके हैं लेकिन, तेज धूप और भीषण उष्ण लहर के कारण धान के पौधे जलने लगे हैं। मौसम विश्लेषण के अनुसार दक्षिण पश्चिम भाग के बक्सर, भोजपुर, रोहतास, भभुआ, औरंगाबाद और अरवल जिले में अधिकतम तापमान 42 से 45 डिग्री सेल्सियस जबकि दक्षिण मध्य भाग के पटना, गया, नालंदा, शेखपुरा, नवादा, बेगूसराय, लखीसराय, जहानाबाद में अधिकतम तापमान 42 से 44 डिग्री रहने की संभावना है।

पेपर लीक रोकने को नया कानून बनाएगी नीतीश सरकार

जल्द ही 1 लाख 99 हजार नियुक्ति पत्र वितरण की तैयारी

प्रात : किरण

पटना। विभिन्न परीक्षाओं में पेपर लीक आम बात हो गई है। पेपर लीक पर रोक लगाने को लेकर नीतीश सरकार गंभीर है लाख प्रयासों के बाद भी पर्चा लीक नहीं रूक रहा। ऐसे में नीतीश सरकार सख्त कानून बनाने जा रही है। अगले विधानमंडल सत्र में इस संबध में सरकार बिल पेश करेगी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को इस संबंध में अपनी मंशा स्पष्ट कर दिया है

अगले विधानमंडल सत्र में आयेगा प्रस्ताव : मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंत्रियों और अधिकारियों की बैठक में स्पष्ट तौर पर कहा कि नियुक्ति के लिए आयोजित परीक्षाओं में पूर्ण पारदर्शिता बनी रहे। परीक्षा में किसी प्रकार की अनियमितता और प्रश्न पत्र लीक न हो, इसको लेकर उन्होंने एक सख्त कानून बनाने का निर्देश दिया है। नीतीश कुमार ने कहा है कि इससे संबंधित प्रस्ताव आगामी विधानसभा के सत्र में लाया जाय।

सरकारी नौकरी का खुलने वाला है पिटारा :

बिहार में सरकारी नौकरी का पिटारा खुलने वाला है। बहुत जल्द 1 लाख 99 हजार नियुक्ति पत्र वितरण की तैयारी है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आज सरकारी नौकरी और रोजगार देने को लेकर दोनों डिप्टी सीएम, मंत्रियों और विभाग के प्रधान सचिवों को युद्द स्तर पर लगने को कहा है। विस चुनाव से पहले तक नीतीश सरकार 10 लाख की बजाय 12 लाख लोगों को सरकारी नौकरी देगी। सीएम नीतीश कुमार ने सात निश्चय- 2 के अन्तर्गत 10 लाख सरकारी नौकरी और 10 लाख रोजगार देने का लक्ष्य निर्धारित किया था। इस संबंध में मुख्यमंत्री ने उप मुख्यमंत्री, संबंधित विभागों के मंत्रीगण, मुख्य सचिव, संबंधित विभागों के अपर मुख्य सचिव/प्रधान सचिव/ सचिव के साथ बैठक कर आगामी एक वर्ष में लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बचे हुये नौकरी एवं रोजगार देने के काम को कार्ययोजना बनाकर मिशन मोड में पूर्ण करने का निर्देश दिया है।

उन्होंने बताया कि अब तक 5 लाख 16 हजार लोगों को सरकारी नौकरी दी जा चुकी है। इसके अतिरिक्त 1 लाख 99 हजार सरकारी नौकरी से संबंधित नियुक्ति हेतु प्रक्रिया पूर्ण कर ली गयी है। अगले तीन महीने के अंदर नियुक्ति पत्र वितरित करने का लक्ष्य रखा गया है। नियुक्ति करने वाले विभिन्न आयोगों को 2 लाख 11 हजार नई नियुक्ति हेतु अधियाचना भेजी जा चुकी है। इसके अतिरिक्त अगले एक महीने में 2 लाख 34 हजार रिक्तियों की अधियाचना विभिन्न आयोगों को भेजी जायेगी। साथ ही आगामी वर्ष में नियुक्ति हेतु 72 हजार और रिक्तियां होने का अनुमान है, जिसकी अधियाचना अगले वर्ष भेजी जायेगी।

बता दें, सात निश्चय- 2 के अन्तर्गत 5 लाख 16 हजार नियुक्तियां की जा चुकी है। इसके अतिरिक्त 1 लाख 99 हजार नियुक्ति पत्र वितरण के लिये तैयार है। साथ ही 5 लाख 17 हजार रिक्तियों के विरूद्ध नियुक्ति प्रक्रियाधीन है यानी (5 लाख 16 हजार + 1 लाख 99 हजार + 5 लाख 17 हजार) कुल 12 लाख से अधिक सरकारी नौकरी देने का लक्ष्य वर्ष 2024-25 तक रखा गया है। इस प्रकार मुख्यमंत्री के सात निश्चय 2 के अन्तर्गत 10 लाख सरकारी नौकरी देने का जो लक्ष्य निर्धारित किया गया था, उसे पार करते हुये वर्ष 2024-25 तक 12 लाख से अधिक लोगों को सरकारी नौकरी दे दी जायेगी। सात निश्चय - 2 के अन्तर्गत 10 लाख रोजगार देने का लक्ष्य रखा गया था। अब तक सात निश्चय- 2 के अन्तर्गत 22 लाख से अधिक रोजगार सृजित किये जा चुके हैं और आने वाले एक वर्ष में 11 लाख से अधिक रोजगार के अवसर सृजित किये जायेंगे।

दौरा बिहार में बुधवार को नालंदा विश्वविद्यालय परिसर का उद्घाटन करेंगे पीएम

पीएम मोदी आज और कल उत्तर प्रदेश और बिहार का करेंगे दौरा

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज और कल उत्तर प्रदेश और बिहार का दौरा करेंगे। इस दौरान वह पीएम किसान की 17वीं किस्त के तहत 20 हजार करोड़ रुपये से अधिक की राशि जारी करेंगे, स्वयं सहायता समूहों की 30 हजार से अधिक महिलाओं को कृषि सखियों के रूप में प्रमाण पत्र प्रदान करेंगे और बिहार में नालंदा विश्वविद्यालय परिसर का उद्घाटन करेंगे। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने सोमवार को एक बयान में यह जानकारी दी।पीएमओ के मुताबिक, प्रधानमंत्री 18 जून को शाम लगभग पांच बजे अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी में पीएम किसान सम्मान सम्मेलन में भाग लेंगे। शाम करीब सात बजे प्रधानमंत्री दशाश्वमेध घाट पर गंगा आरती देखेंगे और रात करीब आठ बजे काशी विश्वनाथ मंदिर में पूजा और दर्शन भी करेंगे।लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद मोदी की वाराणसी की यह पहली यात्रा है।

शपथ लेने के बाद, प्रधानमंत्री ने किसान कल्याण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दशार्ते हुए पीएम किसान निधि की 17 वीं किस्त जारी करने के लिए अपनी पहली फाइल पर हस्ताक्षर किए थे। पीएमओ ने कहा कि इस प्रतिबद्धता को जारी रखते हुए, प्रधानमंत्री प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के माध्यम से ह्यप्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) के तहत लगभग 9.26 करोड़ लाभार्थी किसानों को 20,000 करोड़ रुपये से अधिक की 17 वीं किस्त जारी करेंगे। अब तक 11 करोड़ से अधिक पात्र किसान

परिवारों को पीएम-किसान के तहत 3.04 लाख करोड़ रुपये से अधिक का लाभ मिला है। इस दौरान, प्रधानमंत्री कृषि सखियों के रूप में स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की 30 हजार से अधिक महिलाओं को प्रमाण पत्र भी प्रदान करेंगे।पीएमओ ने कहा कि ह्यकृषि सखी कन्वर्जेंस प्रोग्राम(केएससीपी) का उद्देश्य कृषि सखियों को प्रशिक्षण और प्रमाणन प्रदान करके ग्रामीण महिलाओं को कृषि सखी के रूप में सशक्त बनाकर ग्रामीण भारत को बदलना है। यह प्रमाणन पाठ्यक्रम लखपति दीदी कार्यक्रम के उद्देश्यों से जुड़ा है।अगले दिन बुधवार को सुबह लगभग 9.45 बजे प्रधानमंत्री नालंदा का दौरा करेंगे। वह सुबह करीब 10.30 बजे बिहार के राजगीर में नालंदा विश्वविद्यालय के परिसर का उद्घाटन करेंगे और एक सभा को भी संबोधित करेंगे। विश्वविद्यालय की कल्पना भारत और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) देशों के बीच संयुक्त सहयोग के रूप में की गई है। उद्घाटन समारोह में 17 देशों के मिशन प्रमुखों सहित कई प्रतिष्ठित लोग भाग लेंगे।

परिसर में 40 कक्षाओं के साथ दो शैक्षणिक ब्लॉक हैं जिनकी कुल बैठने की क्षमता लगभग 1900 है। इसमें दो सभागार हैं जिनमें प्रत्येक में 300 सीटों की क्षमता है। इसमें लगभग 550 छात्रों की क्षमता वाला एक छात्र छात्रावास है। इसमें इंटरनेशनल सेंटर, एम्फीथिएटर सहित कई अन्य सुविधाएं भी हैं। पीएमओ ने कहा कि यह परिसर एक नेट जीरोह्ण ग्रीन कैंपस है। यह सौर संयंत्र, घरेलू और पेयजल उपचार संयंत्र, अपशिष्ट जल के पुनः उपयोग के लिए जल पुनर्चक्रण संयंत्र, 100 एकड़ जल निकायों और कई अन्य पर्यावरण अनुकूल सुविधाओं से लैस है। विश्वविद्यालय का इतिहास से गहरा संबंध है। लगभग 1600 साल पहले स्थापित मूल नालंदा विश्वविद्यालय को दुनिया के पहले आवासीय विश्वविद्यालयों में से एक माना जाता है। साल 2016 में, नालंदा के खंडहरों को संयुक्त राष्ट्र विरासत स्थल के रूप में घोषित किया गया था।

वायनाड से चुनाव लड़ेंगी प्रियंका गांधी वाड्रा

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने किया ऐलान

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस के शीर्ष नेताओं ने सोमवार को पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के आवास पर बैठक की और राहुल गांधी की संसदीय सीट को लेकर फैसला किया। बैठक के बाद खरगे ने कहा कि राहुल गांधी वायनाड सीट छोड़ेंगे और रायबरेली अपने पास रखेंगे। इसके बाद प्रियंका गांधी वाड्रा वायनाड लोकसभा सीट से कांग्रेस की उम्मीदवार होंगी। इस मीटिंग में सोनिया गांधी के साथ राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा और केसी वेणुगोपाल भी शामिल हुए। खरगे ने मीडिया से बातचीत के दौरान कहा कि हम सबने बैठक में यह तय कर लिया कि राहुल गांधी रायबरेली सीट अपने पास रखेंगे, क्योंकि रायबरेली पहले से भी उनके काफी नजदीक रही है। उस परिवार के साथ जुड़ाव है और पीढ़ियों से वहां से लड़ते आए हैं। इसलिए वहां

के लोगों और पार्टी के लोगों का भी कहना है कि वह रायबरेली की सीट अपने पास रखें। वायनाड के लोगों का प्यार भी राहुल को मिला है। वे लोग चाहते हैं कि राहुल वायनाड में ही रहें, लेकिन कानून इसकी इजाजत नहीं देता। इसलिए वायनाड सीट से प्रियंका गांधी वाड्रा चुनाव लड़ेंगी।

राहुल गांधी ने कहा कि उनके लिए यह एक मुश्किल फैसला था क्योंकि रायबरेली और वायनाड, दोनों से उनका भावनात्मक लगाव है। उन्होंने कहा, ह्यह्यवायनाड से सांसद के तौर पर पिछले पांच साल बहुत शानदार और सुखद अनुभव वाले रहे हैं। वायनाड के लोगों ने मुझे बहुत कठिन समय में लड़ने के लिए समर्थन और ऊर्जा दी। मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा।" उन्होंने कहा, ह्यह्यमैं वायनाड का दौरा करना जारी रखूंगा और वायनाड से किये गए वादे पूरे किए जाएंगे। राहुल ने आगे कहा कि रायबरेली और वायनाड को ह्यह्यदो-दो सांसद मिलेंगे।" उन्होंने कहा, ह्यह्यरायबरेली से मेरा पुराना नाता है और मुझे बहुत खुशी है कि मैं इसका प्रतिनिधित्व करूंगा। यह कोई आसान फैसला नहीं था, क्योंकि मेरा लगाव दोनों (वायनाड और रायबरेली) से है ह्णह्ण

बैठक के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए प्रियंका ने कहा कि मैं इस फैसले से बहुत खुश हूं। वायनाड का प्रतिनिधित्व करना मेरे लिए गर्व की बात होगी। मैं एक अच्छा प्रतिनिधि बनने की कोशिश करुंगी। रायबरेली से मेरा पुराना रिश्ता है और मैंने रायबरेली और अमेठी के लिए काफी काम किया है।

संक्षिप्त खबरें

दीदारगंज में लूट व डकैती का फरार अभियुक्त गिरफ्तार

पटना सिटी, दीदारगंज थाना की पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर लूट और डकैती मामले में फरार एक आरोपित को गिरफ्तार किया है। थानाध्यक्ष मिथिलेश कुमार ने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि जीवनचक का रहने वाला लूट और डकैती मामले में फरार मनीष कुमार गांव में मौजूद है। इसी सूचना के आधार पर पुलिस की टीम का गठन करते हुए छापेमारी की गई। इसमें आरोपित मनीष को गिरफ्तार किया गया। छापेमारी दल में थानाध्यक्ष के साथ दारोगा धीरज कुमार, सुजीत कुमार, सअनि कृष्णा राय, सिपाही ललन किशोर यादव, निवास कुमार पंडित व रोहित कुमार शामिल थे। थानाध्यक्ष ने बताया कि गिरफ्तार मनीष के खिलाफ लगभग एक दर्जन आपराधिक मामला दर्ज है। गिरफ्तार से पूछताछ करने के बाद पुलिस ने उसे जेल भेज दिया है।

फुट ओवर ब्रिज के नीचे से भारी मात्रा में अंग्रेजी शराब बरामद

दानापुर खगौल रेल थाना के अंतर्गत सोमवार को रेलवे प्लेटफॉर्म पर विशेष चेकिंग के क्रम में प्लेटफार्म नंबर 1 पर पूर्वी फूड ओवर ब्रिज के नीचे चार बैग व चार झोले से लावारिश हालत में बैग और झोले से 209 पीस 8 स्रे टेट्रा पैक 8 स्रे.. गोल्ड 180े' व्हिस्की 48 पीस 8 स्रे..ब्लैक 180े' व्हिस्की 20 पीस रॉयल स्टैग750े' व्हिस्की 6 पीस ब्लेंडर प्राइस 375 े' 7 पीस ब्लेंडर प्राइस व्हिस्की चार बोतल किंगफिशर बियर 17 पीस कुल मात्रा 69.610 लीटर अंग्रेजी शराब में बरामद किया गया लावारिस हालत में बरामद किया गया जीआरपी थाना प्रभारी सुधीर कुमार सिंह ने बताएं की अज्ञात के विरुद्ध मामला दर्ज कर ली गई है

ट्रैक्टर और ऑटो की टक्कर में एक महिला की मौत

दानापुर। नगर के अंतर्गत सैनिक चौक पर सोमवार को अहले सुबह एक ट्रैक्टर कट मारकर निकलने के दौरान आटो में जोरदार टक्कर मार दिया। जिससे ऑटो के परखच्चे निकल पड़े। घटना में एक दंपति समेत पांच लोग आटो मे सवार गंभीर रूप से जख्मी हो गए। सभी जख्मी को अनुमंडलीय अस्पताल से पीएमसीएच रेफर कर दिया गया।रास्ते में मनेर थाना क्षेत्र के छितनावां निवासी 60 वर्षीय किस्मतिया देवी की रास्ते में ही मौत हो गई। घटना घटते ही ट्रैक्टर चालक ट्रैक्टर छोड़कर भाग निकला। घटना की सूचना मिलते ही दानापुर पुलिस और ट्रैफिक पुलिस मौके पर पहुंची। सभी घायलों को अनुमंडलीय अस्पताल भेज दिया। सभी की गंभीर स्थिति को देखते हुए पीएमसीएच रेफर कर दिया है।घायलों में शत्रुघ्न कुमार,मुकेश कुमार,अनिशा देवी, सविता देवी को इलाज के लिए पीएमसीएच इलाज के लिए भर्ती कराया गया है। घटना सोमवार को अहले सुबह चार बजे के आसपास घटी।बताया जाता है कि दानापुर बस पड़ाव से सवारी लेकर एक आटो मनेर जा रहा था। सैनिक चौक के पास पहुंचा था तभी मनेर क्षेत्र से ईंट लेकर एक ट्रैक्टर तेजी में आ रही थी। सैनिक चौक को घुमने के बजाए कट मारकर जाने लगी वहीं दोनों में जोरदार टक्कर हो गई।जिससे ऑटो सवार सभी गंभीर रूप से जख्मी हो गए।ऑटो सवार सभी कहीं से पूजा करके अपने घर छितनांवा लौट रहे थे। पुलिस ने ट्रैक्टर और ऑटो दोनों को जब्त कर लिया।

ईदगाह में अदा की गई बकरीद की नमाज

फतुहा। प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न मस्जिदों सहित खासकर रायपुरा स्थित ईदगाह में सोमवार को बकरीद की नमाज अदा की है। समुदाय के लोगों ने नमाज के बाद कुबार्नी दी। मुस्लिम बस्ती में पूरे उत्साह के साथ बकरीद का त्योहार मनाया गया। समुदाय के लोगों ने निर्धारित समय पर ईदगाह एवं मस्जिदों में सामूहिक रूप से ईद-उल-अजहा की नमाज अदा की और एक-दूसरे को गले मिलकर बधाई दी। ईद-उल-अजहा के बारे में मो. अमजद रजा ने बताया कि इस्लाम की मान्यता के अनुसार ईद के 70 दिन बाद बकरीद मनाई गई। इस दिन सबसे प्रिय वस्तु की कुबार्नी देने की परंपरा रही है। बकरीद मनाने के पीछे हजरत इब्राहिम के जीवन से जुड़ी एक बड़ी घटना है। बकरीद को लेकर बड़ी संख्या में पुलिस पदाधिकारी जवानों के साथ मस्जिद के बाहर तैनात थे। नमाज अदा करने के बाद कुबार्नी दी गई।

जन्म से मुड़े पैरों वाले बच्चों की पहचान व इलाज का अभियान जारी

- आरबीएसके के तहत ऐसे बच्चों का होता है निःशुल्क पूरा इलाज
- हेल्दी स्टेप, हेल्दी लाइफ की थीम पर पूरे जून चलेगा अभियान

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। सूबे में अभी क्लब फुट से ग्रस्त बच्चों को खोजकर उनका इलाज करने का अभियान चल रहा है। क्लब फुट जन्मजात विकार है जिसमें नवजात का पैर मुड़ा रहता है। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके) के तहत ऐसे बच्चों का सम्पूर्ण इलाज निशुल्क होता है। द लेसेंट की एक रिपर्ट के अनुसार, पूरे विश्व में कम व मध्यम आय वाले प्रति हजार बच्चों में 0.5 से 2.0 बच्चों में क्लब फुट होने की आशंका रहती है। पटना में क्लब फुट पर काम कर रही संस्था क्योर इंडिया की प्रतिनिधि लक्ष्मी डिक्सन ने बताया कि पटना जिले में पांच हजार से ज्यादा क्लब फुट के बच्चे हैं। इनमें करीब 3 हजार से ज्यादा क्लब फुट के बच्चों का सफल इलाज कराया जा चुका है।

आथोर्पेडिक विभाग में आयोजित होंगे कार्यक्रम

दरअसल, हेल्दी स्टेप, हेल्दी लाइफह्न की थीम पर राज्य में जून माह को ह्वराष्ट्रीय क्लब फुट जागरूकता माहह्न के रूप में मनाया जा रहा है। इस माह के तहत क्लब फुट के प्रति जागरूकता के साथ क्लब फुट से ग्रसित बच्चों की खोज कर उनका समुचित इलाज कराने की योजना है। इसके लिए राज्य स्वास्थ्य समिति ने मेडिकल कॉलेजों के अलावा सात जिलों क्रमशः औरंगाबाद, बेगूसराय, जहानाबाद, जमुई, पूर्णिया, रोहतास और शिवहर को पत्र लिखा है। इस पत्र के आलोक में मेडिकल कॉलेजों और अन्य स्वास्थ्य संस्थानों के आथोर्पेडिक विभाग में क्लब फुट के साथ जी रहे बच्चों के लिए विशेष गतिविधियां की जा रही हैं। गतिविधियों में क्लब फुट के प्रति जागरूकता के लिए कार्यशाला का आयोजन, इलाज व प्रबंधन के लिए शिविर का आयोजन और बीच में इलाज छोड़कर चले जाने वाले बच्चों का फॉलोअप भी किया जा रहा है।

क्या है क्लबफुट

क्लब फुट एक जन्मजात विकृति है। इसमें नवजात के पैर जन्म के समय से ही मुड़े रहते हैं। यह जन्म-दोष एक या दोनों पैरों को प्रभावित कर सकता है। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके) के तहत ऐसे बच्चों की सर्जरी कर निशुल्क उपचार किया जाता है।

आपसी भाईचारे के साथ मनाया बकरीद पर्व

प्रात :किरण संवाददाता

जन्दाहा।सदियों से चली आ रही पआपसी भाई चारे के साथ मनाया गया।बकरीद पर्वरम्परा के अनुरूप इद उल इज्हा (बकरीद)पर्व पूरे प्रखंड क्षेत्र में मुस्लिम समुदाय द्वारा आपसी भाई चारे के साथ मनाया गया।बकरीद पर्व के अवसर पर जंदाहा पुरानी बाजार स्थित ईदगाह में बड़ी संख्या में मुस्लिम समुदाय के श्रद्धालुओं ने नमाज अदा कि उसके बाद सभी नमाजियों ने सभी जाती धर्म के लोगों से मिलकर कुबार्नी पर्व बधाई दी।इस मौके पर समाजसेवी व वार्ड पार्षद पुत्र जमशेद आलम ने बताया की नमाज अदा करने के साथ देश दुनियां में शान्ती और आपसी भाईचारा कायम रहने की दुआ की गई साथ हीं नौशाद टेलर ने भी बताया की पवित्र कुबार्नी पर्व शांतिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हो गया। वहीं बकरीद पर्व को शांतिपूर्ण संपन्न कराए जाने के उदेश्य से जंदाहा थाना पुलिस द्वारा नमाज स्थल से लेकर सभी चौक चौरहों पर पुलिस बल तैनात किए गए थे।

शरारती तत्वों ने गांधी मूर्ति तोड़ी लोगों में आक्रोश व्याप्त

इसके पूर्व में भी तोड़ी गई है बापू की प्रतिमा

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

मनोज कमलिया स्टेडियम में करीब 70 वर्षों से स्थापित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की मूर्ति एवं शेड को असामाजिक तत्वों ने हथौड़ा, लाठी आदि से प्रहार कर तोड़ डाला।

मूर्ति टूटने की खबर सुनते ही सुबह से स्टेडियम में आक्रोशित भीड़ जुटने लगी। लोगों ने असामाजिक तत्वों को गिरफ्तार करो के नारे लगाने लगे। परिषद महासचिव संजीव कुमार यादव सहित विभिन्न संस्थाओं के लोगों ने कहा कि अहिंसा के पुजारी बापू पर ताबड़तोड़ हिंसात्मक प्रहार कर मूर्ति एवं शेड को तोड़ अशोभनीय कार्य किया है। यह बेहद निंदनीय वि चिंतनीय है। अध्यक्ष डॉ टीपी गोलवारा, वरिष्ठ पत्रकार कुमार दिनेश, नवीन रस्तोगी, शिक्षाविद् विजय कुमार सिंह, गोविंद कानोडिया, प्रो विनय कुमार यादव, शिक्षक राजदीप कुमार, योग शिक्षक सत्येंद्र कुमार, रेणु देवी सहित यहां के प्रबुद्धजनों ने प्रशासन से मांग की है कि शीघ्र अपराधी को गिरफ्तार कर कानूनी करवाई करे तथा मूर्ति का जीर्णोद्धार कर सम्मानजनक रूप से पुनः स्थापित किया जाए।

कंचनजंघा एक्सप्रेस के दुर्घटना के कारण परिवर्तित मार्ग से चलायी जा रही ट्रेनें

प्रात :किरण संवाददाता

हाजीपुर। कटिहार मंडल के रंगापाणी स्टेशन और चटेर हाल्ट के मध्य सियालदह जा रही गाड़ी सं. 13174 कंचनजंघा एक्सप्रेस और मालगाड़ी के मध्य टक्कर हो जाने के कारण इस मार्ग से गुजरने वाली निम्नलिखित ट्रेनों का परिचालन परिवर्तित मार्ग से किया जा रहा है - न्यू जलपाईगुड़ी-सिलीगुड़ी-बागडोगरा-अलुआबाड़ी रोड के रास्ते चलायी जाने वाली ट्रेनें - 17 जून को न्यू जलपाईगुड़ी से खुल चुकी 19602 न्यू जलपाईगुडी-उदयपुर सिटी एक्सप्रेस। 16 जून को डिब्रूगढ़ से खुल चुकी 20503 डिब्रूगढ़-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस। 16 जून को डिब्रूगढ़ से खुल चुकी 12423 डिब्रूगढ़-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस। 16 जून को अगरतला से खुल चुकी 01666 अगरतला-रानी कमलापति स्पेशल।

अलुआबाड़ी रोड-बागडोगरा-सिलीगुड़ी -न्यू जलपाईगुड़ी के रास्ते चलायी जाने वाली ट्रेनें -

16 जून को सियालदह से खुल चुकी 12377 सियालदह-न्यू अलीपुरद्वार एक्सप्रेस। 14 जून को नागरकोविल से खुल चुकी 06105 नागरकोविल-डिब्रूगढ़ स्पेशल 16 जून को नई दिल्ली से खुल चुकी 20506 नई दिल्ली-डिब्रूगढ़ राजधानी एक्सप्रेस। 16 जून को नई दिल्ली से खुल चुकी 12424 नई दिल्ली-डिब्रूगढ़ राजधानी एक्सप्रेस। 17 जून को हावड़ा से खुल चुकी 22301 हावड़ा-न्यू जलपाईगुड़ी वंदे भारत एक्सप्रेस।

अकीदत के साथ अदा की गई ईद की नमाज

एक-दूसरे से गले मिल व हाथ मिला दी बधाई, घर जाकर पकवान का लिया स्वाद, दी गई कुबार्नी

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

कुरबानी का पर्व बकरीद सोमवार को अकीदत के साथ मनाया गया। सुबह में ही हुए ईद उल अजहा की नमाज के लिए लोग घरों से खानाकाह व ईदगाह के लिए निकल चुके थे। मितन घाट स्थित खानकाहे मुनएमिया के सज्जादानशीं सैयद शाह शमीमउद्दीन अहमद मुनएमी, वारगाहे इश्क तकिया शरीफ मितन घाट में सज्जादानशीं आमिर शाहिद, खानकाह फैयाजिया सिमली के सज्जादानशीं सैयद शाह फैयाज हुसैन फैयाजी व दरगाह शाह अरजानी के गद्दीनशीं सैयद प्रो शाह हसीन अहमद, मंगल तालाब स्थित खानकाह एमादिया के सज्जादानशीं सैयद शाह मिस बाह उल हक एमादी ने नमाज पढ़ायी। इस दौरान तकरीर की गई। इसके अलावा शनिचरा ईदगाह, शाही ईदगाह गुलजारबाग, चौक मदरसा गली स्थित जामा मस्जिद, खानाकाह पीरदमरिया के साथ अन्य खानकाह व ईदगाह में बकरीद की नमाज अदा की गई।शिया समुदाय की ओर से कबूतरी मस्जिद, काठ के पुल, बावली इमामबाड़ा, गुलजारबाग बफ्फ इस्टेट, नौजर कटरा मस्जिद, पत्थर की मस्जिद, मुरादपुर मस्जिद, गोलकपुर महेंद्रू मस्जिद व हज्जन साहिब की मस्जिद पश्चिम दरवाजा में भी नमाज अदा की गई। शिया मस्जिद के मौलाना सैयद मुजफ्फर रजा ने नमाज में तकरीर की। दूसरी ओर त्योहार के दौरान विधि-व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस प्रशासन के अधिकारी मुस्तैद दिखे। एसडीओ गुंजन सिंह ने बताया कि चिह्नित जगहों पर दंडाधिकारी व पुलिस पदाधिकारी की तैनाती थी। संवेदनशील स्थानों पर कड़ी निगरानी थानाध्यक्षों की ओर से बरती जा रही थी। त्योहार को लेकर मुस्लिम मुहल्लों में चहल-पहल दिख रहा था। फौजदारी कुआं, दोरूखी गली में महताब आलम, हमाम स्थित ऑल इंडिया जामियातुस सब्बाग रंगरेज ऑर्गेनाइजेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष रजी अहमद सिद्दीकी व शारीफ अहमद रंगरेज, मदरसा गली में साजिदा बानो, पूर्व पार्षद मुमताज जहां व मोहम्मद जावेद, मो साबिर अली, परवेज अहमद, मेराज जेया के यहां सहित अन्य जगहों पर आयोजित त्योहार में दूसरे संप्रदाय के लोगों ने भी भाग लिया।

पाटलिपुत्र खेल व सांस्कृतिक परिसर में 5 दिवसीय योग शिविर शुरू

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

21 जून को आयोजित अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के पूर्वाभ्यास और जन जागरण की दृष्टि से सोमवार की सुबह से पाटलिपुत्र खेल एवं सांस्कृतिक परिसर, गांधी सरोवर में पांच दिवसीय योग शिविर शुरू हुआ। अध्यक्ष डॉ टीपी गोलवारा, महासचिव संजीव कुमार यादव, रोटरी सिटी सम्राट अध्यक्ष मनोज कुमार तथा इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी के अध्यक्ष गोविंद कनोडिया ने इस अवसर पर आयुर्वेदिक पौधों में जलार्पण कर विधिवत उद्घाटन किया। श्री यादव ने योग को लोकप्रिय बनाने में स्वामी रामदेव और विभिन्न संगठनों के योगदान की सराहना की और कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने योग को अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। पतंजलि योग केंद्र के आचार्य कृष्ण मुरारी, प्रशिक्षिका रेणु जी एवं योग शिक्षक सत्येंद्र कुमार के सान्निध्य में पहले दिन लोगों ने स्कन्ध चक्र, कटिशक्ति संचालन, ताड़ासन, भुजंगासन सहित अनेक आसनों का अभ्यास किया। धन्यवाद ज्ञापन शिव प्रसाद मोदी ने किया। इस दौरान रोटरी सिटी सम्राट, पाटलिपुत्र योग सेंटर, सिटी फिसिकल ट्रेनिंग सेंटर, स्काई क्लब और अतुल कराटे सेंटर के सदस्यों ने भी योग शिविर में भाग लिया।

बकरीद की नवाज अदा करने के बाद गले लगा कर दी बधाई

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर खगौल। नगर के अंतर्गत सोमवार को बकरीद पर्व को लेकर ईदगाह में नवाजियों की भीड़ उमड़ पड़ी ईदगाह पर नवाज खत्म होने के बाद लोग एक दूसरे को गले लगा कर बकरीद की बधाई दी छोटी खगौल, बड़ी खगौल, शैदा नगर, जमालुद्दीन चक, बड़ी बदलपुरा एवं रेलवे कॉलोनियों से मुसलमान भाई बकरीद की नमाज पढ़ी फिलहाल गर्मी और धूप की तपिश से नमाजियों के लिए ईदगाह इंतेजामिया कमिटी की ओर से पानी की टैंकर की व्यवस्था की गई है खगौल के कमिटी ने ईद की नमाज का वक़्त सुबह 07:30 बजे पढ़ा गया है ईदगाह में नमाज अदा करने के बाद सामाजिक कार्यकर्ता मोहम्मद शाहनवाज उर्फ रिंकू व चंदू प्रिन्स ने बताया कि आगामी 3 दिनों तक बकरीद की त्यौहार हम लोग मिलजुलकर भाईचारा एवं प्रेम पूर्वक एक दूसरे के गले लगाकर बकरीद का पर्व मनाते हैं नवाज अदा करने के बाद सभी धर्म के लोग एक दूसरे के गले लगाकर बकरीद की मुबारकबाद देते हैं। और हषो उल्लास के साथ बकरीद मानते हैं जिसमें ईदगाह कमेटी के सचिन शोएब कुरैशी संयुक्त सचिव इरफान सिद्दीकी मोहम्मद शमसुद्दीन उर्फ पिंटू मोहम्मद विक्की मोहम्मद शकील अहमद सज्जाद आलम उर्फ गुड्डू मोहम्मद सुल्तान उर्फ विक्की पूर्व नगर परिषद उपाध्यक्ष सुनील कुमार,अजय कुमार यादव, अबू बकर, उमा गुप्ता,मोहम्मद बादल मोहम्मद सद्दाब, ओम नंदन तिवारी,मोहम्मद नसीम , मुन्ना यादव, मोहम्मद गुड्डू, मोहम्मद गोल्डन,सहित लोग शामिल हुए।

नशा मुक्ति भारत अभियान के तहत एसएसबी जवानों ने निकाला साइकिल रैली

प्रात :किरण संवाददाता

मधुबनी एसएसबी 48वीं वाहिनी द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के तहत साइकिल रैली का आयोजन किया गया विवेक ओझा उप कमांडेंट कार्यवाहक कमांडेंट 48वी वाहिनी के निदेर्शानुसार वाहिनी के अधिकारी एवं समस्त जवानों के द्वारा नशामुक्ति का संदेश देते हुए जयनगर कमला बीओपी के द्वार से साइकिल रैली निकाला गया। यह रैली लोकेंद्र कुमार कमला पीओपी के निरीक्षक की अगुवाई में निकल गई बल्दिया चौक, कमला पुल, वॉटर बैच चौक और वापिस कमला बीओपी इसका समापन किया गया । यह रैली लगभग 10 किलोमीटर तक का सफर करते हुए नशामुक्ति विषय पर जन जागृति करते हुए स्थानीय लोगो को नशे के बुरे प्रभाव एवं दुष्परिणामों के विषय में जागृत किया गया। सशस्त्र सीमा बल के जवान भारत-नेपाल सीमा की सुरक्षा के साथ-साथ भारत सरकार द्वारा आदेशित विभिन्न कार्यक्रमों का समय-समय पर आयोजन भी करतें है । इसी कड़ी में आज सशस्त्र सीमा बल के द्वारा नशामुक्ति के विषय पर साइकिल रैली आयोजित कर बॉर्डर के लोगो को नशे के प्रति जागरूक किया और इसके सेवन से बचने के लिए इस कार्यक्रम के माध्यम से सभी को सतर्क किया गया। साथ ही साथ यह रैली 48वी वाहिनी के सभी चौकियों में भी आयोजित कि जा रही है।

शिक्षकों को आदर्श शिक्षक बनने की जरूरत है : अखिलेश मिश्र

डीपीएस कादिराबाद में टीचर्स ट्रेनिंग कार्यक्रम का किया गया आयोजन

प्रात :किरण संवाददाता

दरभंगा।दिल्ली पब्लिक स्कूल कादिराबाद दरभंगा में शिक्षकों के स्किल डेवलपमेंट हेतु कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत रिसोर्स पर्सन डॉ अखिलेश कुमार मिश्र सहायक निदेशक, डिस्टेंस एजुकेशन डिपार्टमेंट, एल.एन.एम.यू. दरभंगा, विद्यालय के निदेशक शोएब अहमद खान, वरिष्ठ प्राचार्य संजय कुमार झा के द्वारा दीप प्रज्वलन एवं आज के मुख्य अतिथि डॉ मिश्र को मिथिला परंपरा के अनुसार पाग-चादर से सम्मानित करने के बाद हुई । लगभग 6 घंटे के आज के टीचर्स ट्रेनिंग कार्यक्रम में शिक्षकों को उनके शिक्षण कार्य में होने वाले परेशानियां एवं निदान पर चर्चा की गई। शिक्षकों के स्किल डेवलपमेंट हेतु उन्हें अलग-अलग ग्रुप में बांट कर विभिन्न प्रकार के एक्टिविटी करवाया गया। डॉ मिश्र ने शिक्षकों को अनेक तरह के टिप्स के साथ-साथ कंटेंट मैनेजमेंट, छात्रों का इंगेजमेंट एवं उनके मन-मस्तिष्क तक पहुंचने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को आदर्श शिक्षक बनने की जरूरत है। हमें बच्चों की आवश्यकताओं को समझना होगा। हमें विश्लेषण करके पता लगाना होगा कि बच्चों की समस्याएं क्या है और उन्हें दूर करने के प्रयास करने होंगे। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्या अनुराधा ने सभी शिक्षकों को आज की ट्रेनिंग टिप्स से लाभ लेते हुए उन्हें स्किल डेवलपमेंट हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम का समापन प्रधानाचार्या के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

चाकू मार युवक की हत्या

घर से फैक्टरी जाने के दौरान घटी घटना

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

मालसलामी थाना क्षेत्र में युवक को अपराधियों ने घर से फैक्ट्री जाने के दौरान युवक को पकड़ लिया और उस पर चाकू से प्रहार कर दिया। इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। बाद में उसकी मौत हो गई। युवक सिमली मुहल्ला में किराए के मकान में रहता था। वह मूल रूप से लखीसराय के कजरा थाना क्षेत्र के रहने वाले बृजनंदन सिन्हा के 40 वर्षीय पुत्र संजीव कुमार सिन्हा की अपराधियों ने गर्दन के पास चाकू मार कर हत्या कर दी। हत्या की घटना को अपराधियों ने गुरु के बाग से शहादरा जाने वाले मार्ग में अंजाम दिया है। हत्या का कारण स्पष्ट नहीं है। पुलिस का कहना है कि लूटपाट या फिर अदावत में यह घटना हुई होगी। परिजनों के बयान से ही मामला स्पष्ट होगा। घटना के संबंध में परिजनों ने बताया कि बीते रविवार को संजीव घर से दीना आयरन फैक्टरी में ड्यूटी करने के लिए लगभग आठ बजे निकला था। परिजनों ने बताया कि पुलिस से सूचना मिली कि संजीव को चाकू मार जख्मी कर दिया गया है। सूचना के बाद परिवार के लोग मौके पर पहुंचे और जख्मी संजीव को इलाज के लिए पहले निजी उपचार केंद्र में ले गए। फिर वहां से नालंदा मेडिकल कॉलेज अस्पताल लेकर गए। यहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस ने सोमवार को मृतक के शव का एनएमसी में पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है। थानाध्यक्ष राजकुमार सिंह ने बताया कि हत्या का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है। पुलिस घटना से जुड़े हर बिंदु पर छानबीन कर रही है। मृतक के भाई राजीव का कहना है कि दोनों भाई उसी फैक्टरी में काम करते हैं। वहीं किराए के मकान में परिवार के सदस्यों के साथ रहते हैं। किसी से उनकी दुश्मनी नहीं है। ऐसे में चाकू से हमला कर हत्या क्यों की गयी है, समझ में नहीं आ रहा है। पुलिस घटना से जुड़े हर बिंदु पर छानबीन और रास्ते में लगे सीसीटीवी फुटेज को भी खंगालने की बात कह रही है।

पूर्व प्रखंड प्रमुख की अध्यक्षता में विकास कार्यों का किया गया समिक्षा

प्रात :किरण संवाददाता

कुशेश्वरस्थान(दरभंगा)।प्रखंड अंतर्गत उसरी पंचायत के मुखिया पूनम देवी के निजी आवास पर पूर्व प्रखंड प्रमुख बिजल पासवान के अध्यक्षता में प्रखंड अंतर्गत सभी पंचायत के मुखिया एवं पंचायत समिति सदस्यों की संयुक्त बैठक आहूत की गई। बैठक मनरेगा योजना ,15वीं , छठी राज्य वित्त आयोग एवं अन्य विषयों को लेकर की गई बैठक शुरू होते ही उपस्थित सदस्यों ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि सभी मुखिया अपने पंचायत में संविधान द्वारा प्रदत्त 29 विषय की निगरानी जिसमें प्रमुख रूप से विकास कार्यों के अतिरिक्त स्वास्थ्य, शिक्षा, आंगनवाड़ी ,कृषि एवं जन वितरण प्रणाली आदि से जुड़े सभी विभागों की समीक्षा एवं निगरानी करेंगे।वहीं सदस्यों ने आक्रोश व्यक्त करते हुए निर्णय लिया कि प्रखंड में पंचायती राज से जुड़े सभी कर्मियों के मनमानी एवं असहयोगात्मक रवैया के विरुद्ध सभी प्रतिनिधि संगठित होकर अपनी आवाज बुलंद कर दोषियों को दंडित करने के लिए तत्पर रहेंगे।बैठक में प्रखंड अंतर्गत मनरेगा योजनाओं से संबंधित विषय पर चर्चा करते हुए सदस्यों ने कहा कि कुशेश्वरस्थान पूर्वी प्रखंड के प्रखंड प्रमुख अंजनी भारती के द्वारा अपने निजी हित को साधने के इरादे से जिला अधिकारी दरभंगा को मनरेगा योजना से संबंधित एक लिखित आवेदन दिया है जिसका कुशेश्वरस्थान पूर्वी के सभी मुखिया एवं उपस्थित पंचायत समिति सदस्य प्रमुख द्वारा लगाए गए आरोप को सिरे से खारिज करते हुए उनके इस रवैया का प्रतिकार किया है. बैठक में मुखिया संघ के अध्यक्ष एवं केवटगामा पंचायत के मुखिया छेदी राय , मुखिया राजेश पासवान, मुखिया मोहम्मद इस्लाम, मुखिया नवल किशोर राय ,मुखिया प्रतिनिधि परमानंद साहू ,पंचायत समिति सदस्य राम बच्चन हजारी, उमेश कुमार मतवाला, मुखिया प्रतिनिधि राम भजन यादव ,पंचायत समिति प्रतिनिधि सुमन कुमार, बबन यादव मोहम्मद इंतजार, रिंकू सदा सहित जनप्रतिनिधि गण उपस्थित थे।

दस अगस्त से राज्य के 13 जिलों में आमजनों को खिलाई जाएगी फाइलेरिया रोधी दवाएं : मंगल

बोलें- फाइलेरिया उन्मूलन को लेकर राज्य सरकार संकल्पित

- आठ जिलों में खिलाई जाएगी दो प्रकार की फाइलेरिया रोधी दवाएं
- पांच जिलों में खिलायी जाएगी तीन प्रकार की दवाएं

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने कहा कि बिहार से फाइलेरिया बीमारी के उन्मूलन को लेकर राज्य सरकार संकल्पित है। इस मुहिम के तहत राज्य के 13 जिलों में आगामी 10 अगस्त से सर्वजन दवा सेवन अभियान (एमडीए) का द्वितीय चक्र का आयोजन किया जाएगा। जिसमें आम जनों को फाइलेरिया रोधी दवाएं खिलाई जाएगी। इस दौरान राज्य के आठ जिलों यानी बक्सर, भोजपुर, किशनगंज, मधेपुरा, मधुबनी, नालंदा, नवादा और पटना में दो प्रकार की दवाएं खिलायी जानी है। जिसमें अल्बेंडाजोल और डीईसी की दवाएं शामिल है। वहीं राज्य के पांच जिलों यानी दरभंगा, लखीसराय, पूर्णिया, रोहतास और समस्तीपुर में तीन प्रकार की दवाएं आमजनों को खिलाई जाएगी। जिसमें डीईसी और अल्बेंडाजोल और साथ आइवरमेक्टिन दवा भी शामिल होगी।

श्री पांडेय ने कहा कि एमडीए अभियान के दौरान चिन्हित 13 जिलों में लगभग 3.5 करोड़ लोगों को फाइलेरिया रोधी दवाएं खिलाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2027 तक फाइलेरिया उन्मूलन का लक्ष्य रखा गया है। इसको लेकर वर्ष 2023 से देशभर में एक साथ 10 फरवरी एवं 10 अगस्त को प्रखंड स्तरीय रणनीति के तहत प्रखंड स्तर पर एमडीए अभियान का आयोजन किया जा रहा है। प्रखंड स्तरीय रणनीति के अंतर्गत चिन्हित 13 जिलों में माइक्रो फाइलेरिया प्रसार दर को जानने के लिए प्रखंड स्तर पर नाईट ब्लड सर्वे भी किया जा रहा है। वहीं नाईट ब्लड सर्वे के बाद जिन प्रखंडों में माइक्रो फाइलेरिया प्रसार दर 1 से कम पाया जाएगा, वहां एमडीए राउंड आयोजित करने की जरूरत नहीं होगी। वर्ष 2023 से पूर्व नाईट ब्लड सर्वे का आयोजन जिला स्तर पर किया जाता था। श्री पांडेय ने कहा कि एमडीए कार्यक्रम के कुशल क्रियान्वयन को लेकर राज्य के द्वारा एक टाइमलाइन का निर्माण कर संबंधित जिलों एवं राज्य स्तरीय अधिकारियों को भेजा गया है। टाइमलाइन में नाईट ब्लड सर्वे, राज्य एवं जिला स्तरीय प्रशिक्षण, बैठक, एमडीए कार्यक्रम की सूक्ष्म कार्ययोजना, फाइलेरिया रोधी दवाओं की ससमय आपूर्ति, एमडीए कार्यक्रम की शुरूआत के साथ कार्यक्रम का कुशल पर्यवेक्षण एवं समीक्षा शामिल है।

रेल हादसे पर मंत्री मंगल पांडेय ने जताया दुख

पटना। स्वास्थ्य एवं कृषि मंत्री मंगल पांडेय ने सियालदह जाने वाली कंचनजंगा एक्सप्रेस की न्यू जलपाईगुड़ी में दुर्घटनाग्रस्त होने पर गहरी संवेदना एवं दुख व्यक्त की है। साथ ही इस हादसे में मृत सभी लोगों के परिजनों के प्रति भी अपनी गहरी संवेदना प्रकट की है। उन्होंने कहा कि इस दुखद घड़ी में सभी पीड़ित परिजनों के लिए ईश्वर से यही प्रार्थना है कि उन्हें दुख सहने की असीम शक्ति प्रदान हो। अब तक 15 लोगों की मौत और 60 लोगों के घायल होने की हृदयविदारक घटना ने स्तब्ध कर दिया है। मुझे उम्मीद है कि घायलों को उचित चिकित्सीय सुविधा मिलेगी। सरकार की ओर से राहत एवं बचाव कार्य जारी है। घायलों को हर संभव मदद व उचित चिकित्सीय सुविधाएं मिल रही हैं।

राजद की संस्कृति, भ्रष्टाचार और अपराध की जमींदारी बढ़ाने की मानसिकता : विजय

राजद मुक्त बिहार, अपराध और भ्रष्टाचार समापन की शुरूआत।

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने राजद पर करारा प्रहार करते हुए कहा है कि राज्य में अपराधी और भ्रष्टाचारी का प्रशिक्षण, संरक्षण एवं मनोबल बढ़ाने में राजद की भूमिका अहम है।

श्री सिन्हा ने कहा कि राजनीति का अपराधीकरण और इन तत्वों को सदन में भेजने में राजद का कोई जोड़ नहीं है। राज्य की जनता अवगत है कि 1990 से शुरू किये गये इनके कारनामों के कारण बिहार हत्या, अपहरण, बलात्कार, लूट जैसे अपराधों में सरगना बन गया। राज्य के अन्दर और बाहर प्रतिष्ठा गिरी और लोग पलायन करने लगे। जातीय उन्माद आपराधिक रूप धारण कर लिया। अपराधियों का सम्मान सत्ता के द्वारा सड़क से सदन तक पहुँचाया। आतंकवादी, उग्रवादी, अपराधी और भ्रष्टाचारी सभी को सत्ता में भागीदार बनाने में राजद की बड़ी उपलब्धि रही। नेता प्रतिपक्ष अपने माता-पिता के कारनामों की निन्दा कर सुधार करेंगे, यह संकल्प लें।

श्री सिन्हा ने कहा कि राजद की संस्कृति में भ्रष्टाचार और अपराध की जमीन्दारी बढ़ाने की मानसिकता है। एनडीए के शासन काल में 2005 से 2010 के बीच बिहार में अपराधियों पर अंकुश लगा दिया गया। पर 2010 से 2024 की अवधि में दो-दो बार सत्ता में आये और अपराधियों को पुनर्जीवित कर दिया और सुधार का अवसर खो दिया।

श्री सिन्हा ने कहा कि राजद मुक्त बिहार होने पर ही बिहार में अपराध और भ्रष्टाचार के समापन की शुरूआत होगी। इसके लिये राज्य की जनता को संकल्प लेना होगा और राज्य से राजद को उखाड़ फेंकना होगा।

हादसे पर राजनीति दुर्भावना से प्रेरित : निखिल

पटना। भाजपा ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ निखिल आनंद ने कहा है कि राजनीति में जातिगत दुर्भावना वाली कुंठा अभिव्यक्ति शर्मनाक और निंदनीय है। भाजपा ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ निखिल आनंद ने एक बयान जारी कर कहा है कि राजनीति में जातिगत दुर्भावना से ग्रसित भेदभावपूर्ण कुंठा अभिव्यक्ति शर्मनाक और निंदनीय है। भाजपा सर्व समाज की पार्टी है और सभी समाज का वोट- समर्थन लेने और सभी का काम करने में विश्वास करती है। निखिल ने कहा कि बिहार में 14 फीसदी आबादी वाली यादव समाज की उपेक्षा कर और हाशिए पर धकेलने का प्रयास कर किसी भी पार्टी या बिहार का भला नहीं हो सकता है। आज केंद्र सरकार में ओबीसी समाज के 27 मंत्री हैं, वही यादव समाज के 4 मंत्री हैं जो नरेंद्र मोदी जी की सामाजिक समरसता की राजनीति के संकल्प को साबित करता है। निखिल आनंद ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की नीति सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास और सबका विश्वास वाली है। नरेंद्र मोदी जी के सरकार की योजनाओं का लाभ सभी समाज के लोगों तक पहुंचा है और जाति- धर्म की भावना से परे सभी समाज के लोगों ने केंद्र सरकार की योजनाओं का लाभ उठाया है।

जदयू सांसद ने संसदीय लोकतंत्र की गरिमा को किया शर्मसार : अरुण

बोलें- घृणित बयान के लिए माफी मांगे जदयू सांसद

राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश प्रवक्ता अरुण कुमार यादव ने जदयू के नवनिर्वाचित सांसद दिवेश चंद्र ठाकुर द्वारा दिये गए बयानों पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि एक जाति, धर्म विशेष पर इस तरह का बयान देकर जदयू सांसद दिवेश चन्द्र ठाकुर में घृणित मानसिकता का परिचय देते हुए संविधान और संसदीय लोकतंत्र की गरिमा को शर्मसार करने का काम किया है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि जदयू सांसद दिवेश चंद्र ठाकुर जाति, धर्म के विरुद्ध उन्माद व नफर फैला रहे है। भाजपा का तो असली चेहरा पहले ही सामने आ गया था, अब जदयू का भी असली चेहरा सामने आने लगा है। दिवेश चंद्र ठाकुर के घृणित बयान से समाज का बहुत बड़ा वर्ग आहत हुआ है। इसलिए जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष को इस बयान के लिए माफी मांगते हुए दिवेश चंद्र ठाकुर को पार्टी से निष्कासित कर देना चाहिए। राजद प्रवक्ता ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का पूरे मामले पर चुप्पी से साफ स्पष्ट होता है कि यह बयान केवल जदयू सांसद का ही नहीं बल्कि एनडीए सरकार का यही मॉडल है। जोकि खुलकर सार्वजनिक रूप से जदयू सांसद दिवेश चंद्र ठाकुर रख रहे हैं। भाजपा के तर्ज पर जदयू ने भी अपने सांसदों को समाज में घृणा और नफरत फैलाने का खुली छूट दे रखी है।

अतिपिछड़ा समाज पर सबसे अधिक टूटा राजद के जंगलराज का कहर : राजीव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता व अतिपिछड़ा समाज के नेता राजीव रंजन ने कहा है कि ऐसे तो राजद के भयावह शासन की आग में बिहार के दलित, पिछड़े समेत सभी वर्गों को झुलसना पड़ा लेकिन इनके जंगलराज का सबसे अधिक कहर अतिपिछड़ा समाज पर ही टूटा। सबसे अधिक हत्याएं इसी समाज की हुई और सबसे अधिक पलायन के लिए भी इसी समाज को मजबूर होना पड़ा। हकीकत में राजद राज में अतिपिछड़ा समाज की हालत बंधुआ मजदूर जैसी थी। न तो उन्हें कानून का संरक्षण प्राप्त था और न ही सरकार उनकी सुध लेती थी और आज उसी राजद के नेताओं का कानून व्यवस्था पर ज्ञान देना एक तरह से उनके राज में पीड़ित हुए बिहारियों के साथ मजाक ही कहा जाएगा।

उन्होंने कहा कि राजद राज में हालात ऐसे थे कि जाति पूछकर लोगों को दिन दहाड़े गोली मार दी जाती थी। नरसंहारों की कहानियों से अखबारों के पन्ने रंगे रहते थें। कोई कभी और कहीं से भी किडनैप कर लिया जाता था और जब मन चाहे उनकी बहु-बेटीयों को उठा लिया जाता था। छोटे-मोटे काम-धंधा करने वाले लोग भी रंगदारी टैक्स देने को मजबूर किये जाते थे। यहां तक कि किसानों की खड़ी फसलों को भी जला दिया जाता था।

जदयू प्रवक्ता ने कहा कि ऐसे भयावह वातावरण में अतिपिछड़ा समाज को कैसी प्रताड़ना से गुजरना पड़ता था उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। लेकिन आज जब नीतीश सरकार में अतिपिछड़ा समाज को उनक वाजिब अधिकार मिल रहा है तो राजद के युवराज की सीने पर सांप लोट रहे हैं। अतिपिछड़ा समाज के जिन लोगों को यह अपने पांव की जूती समझते थे, नीतीश राज में उन्हें बढ़ता देख राजद के लोगों के पेट में मरोड़ उठने लगे हैं। उन्होंने कहा कि हकीकत में बिहार की तमाम जनता, विशेषकर अतिपिछड़ा समाज को राजद से हमेशा सावधान रहना चाहिए। उन्हें जानना चाहिए कि राजद के समाजिक न्याय का मतलब गुंडों और बाहुबलियों को बढ़ाना है। वहीं उनके लिए विकास का मतलब परिवार की संपत्ति में करोड़ों की बढ़ोतरी करना है। न तो यह लोग किसी के सगे हैं और न ही किसी अन्य की तरक्की इन्हें बर्दाश्त हो होती है। ऐसे भी एलइडी के युग में लालटेन का कोई महत्व नहीं है।

चिराग ने दी बकरीद की शुभकामनाएं

पटना। लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री चिराग पासवान ने ईद- उल -अजहा (बकरीद) के अवसर पर देशवासियों तथा प्रदेशवासियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी है। उन्होंने कहा कि कुबार्नी का यह त्यौहार, समर्पण और बलिदान की बेहतर मिसाल है। आगे श्री चिराग ने अपने संदेश में अपील किया कि आपसी भाईचारा एवं सद्भाव के साथ यह पर्व मनाए। यह पर्व को आपसी भाईचारे के साथ मनाने से आनंद और बढ़ जाता है। पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन कुमार ने बताया कि बधाई देने वालों में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष राजू तिवारी ,राष्ट्रीय महासचिव शाहनवाज अहमद कैफी, प्रधान महासचिव संजय पासवान, संसदीय बोर्ड अध्यक्ष हुलास पांडे, प्रदेश उपाध्यक्ष अशरफ अंसारी, युवा प्रदेश अध्यक्ष वेद प्रकाश पांडे, प्रवक्ता दिनेश पासवान, मिडिया प्रभारी कुंदन कुमार, निशांत मिश्रा सहित अन्य नेता प्रमुख है।

अरूंधति रॉय और शेख हुसैन के खिलाफ यूएपीए की अनुमति लोकतंत्र को कुचलने का एक और उदारहण : दीपांकर

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

- 20 जून को होगा देशव्यापी प्रतिवाद
- नीट की पुनःपरीक्षा ली जाए और घोटाले की जांच हो

भाकपा-माले महासचिव का. दीपंकर भट्टाचार्य ने कहा है कि दिल्ली के उपराज्यपाल द्वारा अरुंधति रॉय और शेख शौकत हुसैन के खिलाफ यूएपीए के तहत मुकदमा चलाने की अनुमति देना, लोकतंत्र और मतभिन्नता को कुचलने का एक और उदाहरण है। यह फासीवाद के भारतीय ब्रांड का अवश्यंभावी लक्षण है। यही उपराज्यपाल, मेधा पाटकर के खिलाफ फर्जी मानहानि के उस मुकदमे के भी पीछे हैं, जिसमें उन पर दोष सिद्ध हो गया है और सजा वक्त की बात भर है। भाकपा-माले ऐसे दमनकारी कानूनों के खात्मे तथा सभी राजनीतिक बंदियों की रिहाई के लिए संघर्ष जारी रखेगी। इस घटना के खिलाफ 20 जून को राष्ट्रव्यापी प्रतिरोध का आह्वान केंद्रीय कमिटी ने किया है। भाकपा-माले लोकतंत्र पसंद सभी नागरिकों से दिल्ली के उपराज्यपाल के इस अलोकतांत्रिक फैसले के खिलाफ मजबूती से उठ खड़े होने की अपील करती है। उन्होंने आगे कहा कि लोकसभा का चुनाव परिणाम चाहे जो भी हो, इवीएम पर उठ रहे सवाल खत्म नहीं हो जाते।

भारत को कागज के मतपत्रों की ओर लौटना चाहिए और इवीएम मशीनों को हमेशा के लिए खारिज कर देना चाहिए। चुनाव जीतने या हारने भर का मामला नहीं है बल्कि चुनाव की प्रक्रिया की पारदर्शिता और विश्वसनीयता को बनाए रखने के लिए यह जरूरी है। नीट की परीक्षा में भारी घोटाला व धांधली लाखों छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है। एनटीए ने बार-बार साबित किया है कि वह कोई भी परीक्षा कराने में असमर्थ है। इस मॉडल को तुरंत वापस लेना चाहिए। नीट की पुनःपरीक्षा ली जानी चाहिए और घोटाले की जांच होनी चाहिए।उन्होंने आगे कहा कि बिहार में अपराध की लगातार बढ़ रही घटनाएं बेहद चिंताजनक है। सत्ता संरक्षित अपराधियां द्वारा इस तरह के कारनामों को अंजाम दिया जा रहा है। भाजपा-जदयू शासन का इकबाल पूरी तरह से खत्म हो चुका है।

रेलवे के पुरे ढांचे को हीं नजर अंदाज कर दिया गया है : गगन

राजद प्रवक्ता ने की रेलमंत्री से इस्तीफे देने की मांग

पटना। पश्चिम बंगाल के न्यू जलपाईगुड़ी में हुई रेल दुर्घटना को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए राजद प्रवक्ता चित्तरंजन गगन ने कहा है कि यदि रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव में थोड़ी भी नैतिकता बची हो तो उन्हें इस दुर्घटना की जिम्मेदारी लेते हुए अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। इस हृदयविदारक दुर्घटना से प्रभावित व्यक्तियों के प्रति राजद परिवार संवेदना व्यक्त करते हुए उनके शोक संतप्त परिवारों के साथ खड़ी है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि जबसे अश्विनी वैष्णव रेलमंत्री बने हैं रेल दुर्घटनाओं में बेतहाशा वृद्धि हुई है। और जांच कराने की घोषणा की औपचारिकता पूरी कर सरकार अपनी जिम्मेदारी को पुरा मान लेती है। आए दिन हो रहे इन हादसों पर देश की जनता प्रधानमंत्री और रेल मंत्री जी से कुछ प्रश्नों का उत्तर जानना चाहती है। बताया जा रहा है कि दोनों रेल गाड़ियां एक ही पटरी पर थीं? तो क्या सिग्नल सिस्टम में कोई गड़बड़ी थी? क्या यह मानवीय गलती थी या कोई तकनीकी गड़बड़ी से हुई थी? क्या इन रेल गाड़ियों में एंटी-कॉलीशन डिवाइस लगा हुआ है? जिस कवच डिवाइस की सरकार सालों से बातें कर रही है, उसमें क्या कुछ प्रगति हुई है? वर्षों से जिस एंटी कॉलीशन डिवाइस (कवच प्रणाली) की चर्चा काफी बढ़-चढ़कर केन्द्र सरकार करती रही है। उसकी प्रगति इतनी धीमी क्यों है, क्यों कि जब कभी दुर्घटना होती है तो एक हीं बात कहा जाता है कि काम तेजी से हो रहा है अभी केवल प्रभावित क्षेत्र में काम बचा हुआ है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि अब तो हॉल्ट और सिग्नल का उद्घाटन भी प्रधानमंत्री जी हीं करते हैं तब तो यह स्थिति है। बन्दे भारत ट्रेन के नाम पर रेलवे के पुरे ढांचे को हीं नजर अंदाज कर दिया गया है जिसके परिणामस्वरूप रेलवे का सारा सिस्टम हीं लुंज-पूंज हो गया है।

केंद्र में एनडीए की सरकार बनते ही महँगाई बेकाबू : भाकपा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने कहा कि केंद्र में एनडीए की तीसरी बार सरकार बनते ही महँगाई बेकाबू हो गई है। आम उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतें आसमान छूने लगी है। खानेपीने की चीजों की कीमतें बढ़ने से आम लोगों के जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

भाकपा राज्य सचिव ने कहा कि मई में थोक महंगाई पिछले पंद्रह महीनों के उच्च स्तर पर पहुंच गई। अब यह 2.61 फीसद पर है, जबकि अप्रैल में यह 1.26 फीसद थी। थोक महंगाई पिछले तीन महीने से लगातार बढ़ रही है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय का कहना है कि खाद्य वस्तुओं, खाद्य उत्पादों के विनिर्माण, कच्चे तेल और गैस तथा अन्य विनिर्माण उत्पादों की कीमतों में बढ़ोतरी की वजह से इस वर्ष मई में थोक महंगाई बढ़ी। खासकर सब्जियों की थोक कीमतों में बेतहाशा वृद्धि देखी गई। सब्जियों की थोक महंगाई दर 32.42 फीसद रही। प्याज की थोक महंगाई दर 58.05 फीसद और आलू की 64.05 फीसद दर्ज की गई। खाने-पीने की चीजों की कीमतों में असंतुलन की बड़ी वजह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार है। बाहर से दालों, फलों, खाद्य तेल आदि पर आयात शुल्क घटा या हटा देने की वजह से घरेलू जिन्स की जगह विदेशी चीजें थोक बाजार में अधिक पहुंचने लगी हैं। वैसे खाद्य वस्तुएं जो अपने यहां जरूरत से अधिक पैदा हो रही हैं, उसका घरेलू बाजार में खपत बढ़ाने पर जोर देने के बजाय विदेशी वस्तुओं की आवक क्यों बढ़ाई जाती है। भाकपा राज्य सचिव ने कहा कि केंद्र सरकार महँगाई रोकने में पूरी तरह विफल है। इस सरकार की तीसरी बार सत्ता में आने से लोगों की और मुश्किलें बढ़ेगी।

ऐक्टू राष्ट्रीय पदाधिकारियों की दो दिवसीय बैठक शुरू

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

ऑल इंडिया सेंट्रल कॉउन्सिल ऑफ ट्रेड यूनियन्स (ऐक्टू) के राष्ट्रीय पदाधिकारियों की दो दिवसीय बैठक सोमवार से पटना के दारोगा राय पथ स्थित ऐक्टू राज्य कार्यलाय में शुरू हुआ।बैठक मंगलवार तक जारी रहेगा। विभिन्न राज्यों व सेक्टरों के 50 मजदूर नेता इस बैठक में भाग ले रहे है। ऐक्टू के राष्ट्रीय अध्यक्ष वी.शंकर,महासचिव राजीव डिमरी, एमएलसी सह ऐक्टू राष्ट्रीय सचिव व स्कीम वर्कर्स फेडरेशन राष्ट्रीय महासचिव शशि यादव,ऐक्टू राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सह रसोइया संघ महासचिव सरोज चौबे, ऐक्टू राष्ट्रीय सचिव सह बिहार राज्य महासचिव आर. एन ठाकुर की पांच सदस्यों की अध्यक्षमण्डल की अध्यक्षता में बैठक शुरू हुआ। 2024 चुनाव में जनता ने मोदी सरकार के कारपोरेटपरस्त साम्प्रदायिक विभाजनकारी व तानशाही वाली नीतियों को खारिज कर दिया है और इन नीतियों के खिलाफ दिए गए स्पष्ट जनादेश जिसमे मजदूर -मेहनतकश गरीब जनता के बुनियादी सवाल इस चुनाव का प्रमुख मुद्दा बना ।इन मुद्दों को मुखर आवाज देने और व्यापक अभियान चलाने के सवाल पर ऐक्टू राष्ट्रीय पदाधिकारियों की बैठक में व्याक विचार विमर्श जारी है। इन बहस के मुद्दे खासकर मजदूरों को अधिकारहीन बना पूंजीपतियों को गुलाम बनाने वाला 4 श्रम कोड रद्द करने,बैंक-कोयला- रक्षा उत्पाद वाले कम्पनियों,खदानों समेत देश के पीएसयू के निजीकरण पर रोक, निजीकरण,अग्निवीर व अंधाधुंध ठिकाकरण पर रोक, कम मजदूरी ज्यादा काम, न्यूनतम मासिक मजदूरी 26 हजार,निर्माण सहित असंगठित क्षेत्र के करोड़ों मजदूरों को मासिक 9 हजार पेंशन देने ,ओल्ड पेंशन स्कीम लागू करने जैसे सवालों पर मजदूरों को एकजुट कर मोदी सरकार के खिलाफ व्यापक माहौल बना संघर्ष तेज करने पर चर्चा जारी है। बैठक को ओडिसा से महेन्द्र परिदा, महाराष्ट्र से उदय भट्ट, छतीसगढ़ से बृजेंद्र तिवारी, तमिलनाडु से शंकर पांडियन , यूपी से अनिल वर्मा , बंगाल से एन बनर्जी,झारखंड से गीता मंडल,उतराखंड से के के बोरा, दिल्ली से सुचिता डे, कश्मीर से निर्दोष उप्पल, पंजाब से राजविंदर सिंह राणा ,बिहार से रणविजय कुमार,एसके शर्मा, श्यामलाल प्रसाद आदि नेताओं ने संबोधित किया।

स्वास्थ्य के लिए मिलेट्स फायदेमंद आहार : खादिर वली

रसोई में वैद्य बैठाना चाहता हूँ, ताकि आपको बार - बार डॉक्टर के पास नहीं जाना पड़े

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

मिलेट मैन के नाम से ख्यात पद्मश्री डॉ खादिर वली ने कहा कि मिलेट्स स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद आहार है। खान पान हमारी बीमारियों की जड़ हैं। उचित आहार का उपयोग कर हम बीमारियों से बचाव कर सकते हैं। मैं आपकी रसोई में वैद्य बैठाने की मुहिम में निकला हूँ ताकि आपको बार - बार डॉक्टर के पास जाने की जरूरत न पड़े। डॉ खादिर वली यहाँ रवीन्द्र भवन में आयोजित मिलेट्स महोत्सव के दूसरे दिन उपस्थित जनसमूह को संबोधित कर रहे थे। इसका आयोजन पूर्व सांसद आर के सिन्हा के अवसर ट्रस्ट ने किया है।

डॉ खादिर ने कहा कि बाजार ने हमारा किचन बिगाड़ दिया है और स्वाद ने शरीर। जानते समझते हुए भी फास्ट फूड खाकर हम बीमार हो रहे हैं और जीवन भर की कमाई डॉक्टरों को सौंप कर कंगाल हो रहे हैं। हमें आनेवाली पीढ़ियों की जिन्दगी सुरक्षित बनाने के लिए मिलेट्स को अपने भोजन में अपनाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि खेती का उद्देश्य खाने के लिए होना चाहिए, बेचने के लिए नहीं। शरीर स्वस्थ रहेगा तो किसी भी उपाय से पैसा कमाया जा सकता है लेकिन शरीर खराब रहेगा तो संसार का सारा ऐश्वर्य धरा का धरा रह जाएगा। इसलिए किसानों को अपनी सोच बदलनी होगी। मिलेट्स की खेती के लिए आगे आना होगा। मिलेट्स का रकबा बढ़ाना होगा।

उन्होंने जोर देकर कहा कि देश को निरोग डॉक्टर नहीं किसान बना सकते हैं। डॉक्टर बीमारियों को दवा देकर दबा देते हैं जबकि मिलेट्स बीमारियों को जड़ से समाप्त कर देता है।इसीलिए हमारे प्रधानमंत्री श्री अन्न को बढ़ावा देने की वकालत करते हैं। देश स्वस्थ बनेगा तो समाज खुशहाल बनेगा।

उन्होंने कहा कि वर्षों से हमारे किसान भाई धान और गेहूं की खेती करते रहे हैं। इसमें पानी की खपत ज्यादा होती है। नतीजा यह है कि पानी पाताल में जा रहा है। कई जगह जल संकट या कहें कि सूखे के हालात बनते जा रहे हैं। मिलेट्स की खेती में पानी की खपत कम होती है और उपज भी अधिक होती है। किसानों ने बीज की कमी का सवाल उठाया तो सभागार में उपस्थित बिहार के कृषि सचिव डॉ संजय अग्रवाल ने बताया कि राज्य सरकार मिलेट्स की डेढ़ लाख एकड़ खेती के लिए मुफ्त बीज सुलभ करा रही है और प्रति एकड़ 5 हजार रुपये का अनुदान दे रही है। उन्होंने कहा कि बिहार का कृषि विज्ञान केंद्र मिलेट्स की खेती में मददगार बनेगा।

इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन करते हुए पूर्व सांसद और अवसर ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ आर के सिन्हा ने बताया कि मिलेट्स की खेती के लिए हर तरह की जमीन उपजाऊ होती है। उन्होंने कहा कि मिलेट्स की उत्पादकता बढ़ाने के लिए उसकी तीन बार 21 दिन, 42 दिन और 63 दिन पर छंटाई करनी जरूरी है। उपस्थित किसानों के यह पूछने पर कि मिलेट्स की खरीद के लिए बाजार उपलब्ध नहीं है, श्री सिन्हा ने अवसर ट्रस्ट का मोबाइल नंबर 9999971712 जारी करते हुए कहा कि मिलेट्स की जितनी भी पैदावार होगी, आद्या ऑर्गेनिक उसकी खरीद करेगा।

अलग - अलग मिलेट्स के अलग- अलग फायदे : डॉ सरला

इससे पूर्व डॉ सरला बैंगलोर ने अपने उद्बोधन में कहा कि अलग - अलग मिलेट्स के अलग - अलग फायदे हैं। उन्होंने बताया कि सप्ताह के सातों दिन अलग - अलग मिलेट्स का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है क्योंकि शरीर को हर तरह के पौष्टिक आहार की जरूरत होती है। कोदो मिलेट शरीर के खून को साफ रखता है तो कंगनी मिलेट फेफड़े को मजबूत बनाता है। उन्होंने कहा कि मिलेट्स सिर्फ बीमार लोगों का भोजन नहीं है। डॉ सरला ने बताया कि मिलेट्स को पकाने के पहले कम से कम 6 से 8 घंटे पानी में भिगो लेना चाहिए ताकि उससे बना खाद्य पदार्थ सुपाच्य हो सके। सिर्फ दलिया को 4 घंटे भिगो कर पकाया जा सकता है। उन्होंने यह भी बताया कि जिस पानी में मिलेट्स को भिगोया जाता है, उसे पकाने के लिए उसी पानी का उपयोग उसकी पौष्टिकता को बरकरार रखता है। उन्होंने बताया कि मिलेट्स से चावल, रोट, पूरी, पराठा, इडली, डोसा आदि हर प्रकार का पकवान बनाया और खाया जाता है। डॉ सरला ने अमली की विशेषता बताते हुए कहा कि स्वास्थ्य के लिए अमली अमृत के समान है। छह हफ्ते अमली के सेवन से ब्लड शुगर कंट्रोल होने लगता है। अवसर ट्रस्ट द्वारा आयोजित मिलेट्स महोत्सव को बिहार का कृषि विभाग, एस आई एस ग्रुप, ए सी एफ एल, आद्या ऑर्गेनिक, इंडियन पब्लिक स्कूल, देहरादून और संगत - पंगत ने सहयोग प्रदान किया है। मंच संचालन अवसर ट्रस्ट के सीईओ अनुरंजन श्रीवास्तव ने किया।

बक्सर के किंग बने सुधाकर, विधायक से सीधे संसद का कटाया टिकट

पिता के इच्छा के विरूद्ध सुधाकर सिंह ने लड़ा था विधानसभा का चुनाव

रामाधार प्रसाद

पटना। कारोबार की दुनिया में शोहरत की बुलंदियों को छूने के बाद सुधाकर सिंह ने पिता जगदानंद सिंह की इच्छा के विरुद्ध जाते हुये राजनीति में कदम रखा और सियासी रणभूमि में सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ते हुये विधायक, मंत्री और अब सांसद बन न सिर्फ अपने सपने को पूरा किया, साथ ही अपने पिता की राजनीतिक विरासत भी संभाल ली है। सुधाकर सिंह का जन्म 02 जनवरी 1976 को हुआ और उनका पैतृक निवास स्थान कैमूर जिले के रामगढ़ थाना अंतर्गत साहूका गांव में है। वर्ष 1990 में सुधाकर सिंह मैट्रिक की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उन्होंने इंटरमीडिएट की पढ़ाई पूरी करने के बाद वर्ष 1995 में दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़ीमल कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी की। श्री सिंह को राजनीति विरासत में मिली। वह अपने पिता जगदानंद सिंह के साथ राजनीतिक कार्यक्रमों में जाते रहे हैं, जिसकी वजह से उनकी रुचि हमेशा राजनीति में आने की रही थी। स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद सुधाकर सिंह का झुकाव नौकरी की ओर हुआ लेकिन जिंदगी ने अचानक मोड़ लिया और उन्होंने गांव का रुख किया। सुधाकर सिंह राइस मिल के व्यवसाय से जुड़े। गांव-गांव घुमकर किसानों से धान की खरीद शुरू की। सफलता सुधाकर सिंह के कदमो को चूमती गई और उनकी युवा उद्यमियों की टीम बनती गई। इस क्रम में सुधाकर बिहार राइस मिलर संघ के अध्यक्ष भी रहे। इसी दौर में सुधाकर ने राजनीति में भी दांव आजमाना शुरू कर दिया। सुधाकर सिंह के पिता जगदानंद सिंह रामगढ़ से लगतार छह बार विधायक रहे थे। वर्ष 2009 में जगदानंद सिंह बक्सर के सांसद बने। वर्ष 2010 में राष्ट्रीय जनता दल ने सुधाकर सिंह को रामगढ़ विधानसभा से चुनाव लड़ने को न्यौता दिया। जगदानंद सिंह इसके पक्ष में नहीं थे, उन्होंने कहा कि इससे वंशवाद बढ़ेगा, लिहाजा उन्होंने अंबिका सिंह को राजद का टिकट दिलाया। सुधाकर सिह ने पिता से बगावत कर दी और भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गये। भाजपा ने रामगढ़ से सुधाकर सिंह को उम्मीदवार बना दिया। राजद के दिग्गज नेता जगदानंद सिंह ने अपने पुत्र भाजपा प्रत्याशी सुधाकर सिंह के विपक्ष में प्रचार किया। इस चुनाव में राजद के अंबिका सिंह ने जीत हासिल की। भाजपा के सुधाकर सिंह तीसरे नंबर पर रहे। सुधाकर की हार से ज्यादा चर्चा पिता जगदानंद सिंह के पार्टी के पक्ष में मजबूती से खड़े रहने की हुई। सुधाकर सिंह का नाता बाद में भाजपा से टूट गया। वह राजद में सक्रिय हो गए। वर्ष 2020 में उन्होंने रामगढ़ विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा।

इस बार राजद के सुधाकर सिंह ने बाजी मार ली। कांटे के मुकाबले में उन्होंने बहुजन समाज पार्टी प्रत्याशी अंबिका सिंह को महज 189 मतों के अंतर से शिकस्त दी। सुधाकर सिंह बिहार सरकार में कृषि मंत्री बनाये गये। हालांकि उन्होंने बाद में कृषि मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया। इस बार के आम चुनाव में बक्सर में लगातार दो बार वर्ष 2014 और वर्ष 2019 में जीत का परचम लहरा चुके केन्द्रीय मंत्री अश्विनी कुमार चौबे का टिकट काटकर भाजपा ने उनकी जगह पूर्व विधायक मिथिलेश तिवारी को उम्मीदवार बनाया है। वहीं, राजद ने पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह के पुत्र और रामगढ़ के विधायक सुधाकर सिंह को उम्मीदवार बनाया। राजद प्रत्याशी श्री सिंह ने भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी मिथिलेश तिवारी को कड़े मुकाबले में 30 हजार 91 मतों के अंतर से पराजित किया। इस जीत के साथ ही श्री सिंह पहली बार सांसद तो बने ही साथ ही विधानसभा के बाद लोकसभा मे भी अपने पिता की राजनीतिक विरासत संभाल ली है। बक्सर लोकसभा सीट पर जीत हासिल करने के बाद सुधाकर सिंह ने कहा, मैं भारतीय संसद का सदस्य हूं। इसलिए मेरा पहला काम सभी भारतीय कानूनों को बदलने का होगा, जो किसानों के खिलाफ है। चाहे भूमि अधिग्रहण हो या मंडी कानून का हो या न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) का मामला हो। नई शिक्षा की नीति हो जिसमें ये सरकार उच्च शिक्षा के लिए पैसा नहीं देना चाहती। ये जो बड़े मसले हैं सरकार के जरिए सुलझेंगे। जो छोटे-छोटे काम है मेडिकल कॉलेज का मसला है, नहरों की सफाई का मसाला है इस सभी चीजों को हम अपने व्यक्तिगत प्रयास से हल कराएंगे।

संक्षिप्त खबरें

कंचनजंगा ट्रेन दुर्घटना मृतकों को मुआवजा की मांग

मुजफ्फरपुर। पश्चिम बंगाल मे कंचनजंगा एक्सप्रेस ट्रेन के दुर्घटनाग्रस्त होने जिसमे कई लोगो के मृत्यु एवं अनेक लोग घायल हुये है ।इस दुर्घटना पर कांग्रेस जिलाध्यक्ष अरविंद कुमार मुकुल ने कहा है कि हमे दुर्घटना के मृतक एवं घायलो के परिवारजनो के प्रति पूरी संवेदना है और हम कांग्रेस पार्टी की तरफ से केन्द्र सरकार से मांग करते है कि मृतक एवं घायल लोगो को त्वरित मुआवजा एवं घायल को उच्चस्तरीय ईलाज की व्यवस्था की जाए। उन्होंने कहा कि रेल मंत्री को नैतिकता के आधार पर मंत्री पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। पूर्व में भी इनके कार्यकाल मे कई भीषण दुर्घटना हो चूकी है । लालबहादुर शास्त्री जब रेलमंत्री थे तो एक छोटी रेल दुर्घटना पर नैतिकता के आधार पर इस्तीफा दे दिये थे ।

समाजसेवी बबीता झा ने पुष्प वाटिका में लगायी औषधिय पौधा

बेनीपुर(दरभंगा) ।प्रखंड के पोहद्दी गांव के कमला जीवछ नदी तट पर प्राचीन शिव मंदिर सिद्धेश्वर भूतनाथ महादेव के पुष्प वाटिका में गंगा दशहरा के अवसर पर समाजसेवी बबीता झा सहित कई श्रद्धालुओं ने औषधिय पौधा लगाया, तथा मंदिर में पूजाअर्चना की। जिले के विभिन्न प्रखंड के ग्रामीण क्षेत्र से आए श्रद्धालुओं ने कमला जीवछ नदी की कल कल छल छल पानी में स्नान कर पूजा अर्चना की। श्रद्धालु बबीता ने कहा कि भूतनाथ के पुष्प वाटिका के विकास करवाने में मेरा योगदान रहेगा। यह काफी सिद्ध देव स्थल है। यहां आने वाले श्रद्धालुओं को काफी सुकून मिलता है। प्रकृति ने शिव मंदिर को स्वयं सजाया है। ऐसा विहगम दृश्य कम ही जगह के देवस्थान में देखने को मिलता है। श्रद्धालुओं की मनोकामना श्मशानी पूरा करने के चलते काफी अच्छे खासी भीड़ लगी रहती है।

समाजसेवी रघुवंश नारायण सिंह के निधन पर शोक

सराय ।- बिहार की सक्रिय राजनीतिक में अपना अहम योगदान देने वाले गोरौल प्रखंड के चकव्यास ग्राम के सहकारिता आंदोलन के योद्धा समाजसेवी रघुवंश नारायण सिंह के निधन पर प्रखंड क्षेत्र के लोगो ने गहरा दुःख व्यक्त करते हुए स्वर्ग्ग सिंह कि आत्मा के शांति के लिए ईश्वर से कामना किया। स्वर्ग्ग रघुवंश नारायण सिंह कई महत्वपूर्ण पदों पर आसीन रहे जिसमें बिस्कोमान के निदेशक के पद सहित व्यापार मंडल के कई बार अध्यक्ष रहे, केंद्रीय सहकारिता द्वारा सहकारिता के अध्यन के लिए 40 देशों का भ्रमण कर चुके थे। हमेशा लोगों को प्रोत्साहित करना उनके जीवन शैली थी। वे सुरु से ही समाज सेवा मे लगे हुए थे । उनके निधन पर शोक व्यक्त करने वालो मे भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ठ के बिहार प्रदेश प्रवक्ता सह मानवाधिकार के अध्यक्ष कुणाल कुमार गुप्ता,भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश सह संयोजक सौरभ कुमार सिंह, मानवाधिकार संरक्षण प्रतिष्ठान के प्रभारी राजेश्वर प्रसाद गुप्ता,निर्भय कुमार अमरोही,भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ठ के जिला प्रवक्ता सोनू कुमार सिंह,हरिनारायण केसरी,भाजपा के जिला उपाध्यक्ष पंकज यादव, चितरंजन भगत,भाजपा के मंडल अध्यक्ष विश्वजीत सिंह,साकेत सिंह सहित बड़ी संख्या मे लोगो ने गहरा दुख व्यक्त किया ।

छापेमारी में अवैध शराब बरामद

वैशाली. । वैशाली पुलिस के द्वारा अबैध शराब के सेवन,निर्माण एवं भंडारण के विरुद्ध लगातार अभियान चलाया जा रहा है ।इसी क्रम में वैशाली थाना क्षेत्र के फुलाढ से तीन लोगों को 30 लीटर शराब के साथ गिरफ्तार किया गया है ।वैशाली पुलिस द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार अजय राय पिता जनक राय, चन्दन कुमार पिता महेश राम ,रोहित कुमार पिता महेश राम को गिरफ्तार किया गया है ।इस सम्बंध में वैशाली थाना अध्यक्ष प्रवीण कुमार ने बताया की पिटीसी राजकुमार यादव गत रात्री गश्ती कर रहे थे उसी दौरान मध्य विद्यालय फुलाढ के पास पुलिस गाड़ी देखते तीन लोग भागने लगे जिन्हें पुलिस बल के साथ पकड़ा गया ।इनके पास से टेट्रा पैक ,8पीपीएम गोल्ड,एवं विस्की कुल 30 लीटर शराब बरामद किया गया.सभी को थाने लाया गया ।

केवटी विधायक ने जेईई मेंस व नीट में सफल भाई बहन को किया सम्मानित

● चुनाव के बाद कार्यकर्ताओं के साथ की समीक्षात्मक बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

विधायक डॉ मुरारी मोहन झा ने माधोपुर निवासी कृषि समन्वयक रंजन कुशवाहा व आंगनबाडी सेविका पुनिता कुमारी के पुत्र आतिश रंजन ने जेईई मेंस व पुत्री अंकिता रंजन ने नीट में सफलता प्राप्त करने पर उसके गांव माधोपुर पहुंचकर दोनो भाई बहन को पाग चादर व पुष्प से सम्मानित किया। मेघावी छात्र छात्रा के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ कुशल अभियंता व बेहतर चिकित्सक बनकर गांव समाज की सेवा करने का आशिर्वाद दिया गया ।मौके पर भाजपा मंडल अध्यक्ष विशुनदेव दास, भाजपा युवा मोर्चा अध्यक्ष जटाशंकर सिंह, पूर्व पंचायत समिति नरेश मंडल, पूर्व सरपंच दीपक महतो,पंचायत समिति कन्हैया मिश्र ने कहा माधोपुर बस्तवाड़ा पंचायत पर माता सरस्वती का आशिर्वाद है ।दोनों गांव के युवक व युवती शैक्षणिक गतिविधि में रहकर अपनी योग्यता का परचम लहरा कर गांव को गौरवान्वित कर रहे हैं ।अपने लक्ष्य के प्रति सफल प्रयास को कायम रखने वाले बच्चों की बेहतर कामना करते हैं ।इधर माधोपुर से वापस लौटने के बाद सिमरी चौक पर में कार्यकर्ताओ के साथ लोक सभा चुनाव में एनडीए की ऐतिहासिक जीत व भाजपा के पक्ष में केवटी विधान सभा में डाले गए मतदान की समीक्षा की गई। विधायक ने सभी पंचायत अध्यक्ष, बूथ लेवल कमेटी व भाजपा समर्थकों के कार्य की सराहना कर विधान सभा चुनाव की तैयारी में जुटने का आह्वान किया। केन्द्र व राज्य सरकार की उपलब्धि को जन जन तक पहुंचाने की अपील की ।भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी व विकास पुरुष मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के कार्य काल की सराहना कर विधायक ने कहा आगामी विधान सभा चुनाव में राजग गठबंधन की प्रचण्ड बहुमत से सरकार बनेगी ।राज्य सरकार ने रोजगार अवसर प्रदान किया है वह संसाधनों के बीच पूर्ण कराया जा रहा है ।जनता के इस आशा विश्वास के साथ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन आगामी पांच वर्षों का कार्यकाल मजबूती के साथ चलेगा ।मौके पर नवीन राउत, अजीत झा,विपिन झा,दिलीप यादव ,अमन कुमार सिंह चितरंजन मंडल ,मनोज महतो, किशन गुप्ता,पंचायत समिति कन्हैया मिश्र सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद।

नगर विधानसभा क्षेत्र से ममता ने की दावेदारी

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर ।अपनी खोई हुई नगर विधानसभा सीट को फिर से पार्टी की झोली में डालने की भाजपा की कोशिश शुरू हो चुकी है। भाजपा महिला मोर्चा राष्ट्रीय कार्य समिति सदस्या और आरबीबीएम कॉलेज की प्राचार्या डा .ममता रानी ने केंद्र में तीसरी बार मोदी सरकार के सत्ता सीन होने और बिहार में भाजपा के बेहतर प्रदर्शन पर पार्टी कार्यकताओं और मतदाताओं का आभार जताया है। उन्होंने चंद्रलोक चौक स्थित अपने आवास पर प्रेस वार्ता बुलाकर कहा कि पिछले लोकसभा चुनाव के दौरान उन्होंने मुजफ्फरपुर संसदीय क्षेत्र के प्रत्याशी डॉ राजभूषण चौधरी निषाद के लिए तकरीबन 45 जगहों पर छोटी बड़ी सभाओं को संबोधित किया। उन्हें खुशी है कि संसदीय क्षेत्र के लोगों ने डॉ निषाद को बिहार में सर्वाधिक मतों से विजय दिलाई और संयोग है कि पहली ही बार लोकसभा पहुंचने वाले डॉ राजभूषण केंद्रीय राज्य मंत्री भी बनाए गए हैं। महिला भाजपा नेत्री ने बताया कि उड़ीसा में भी उन्हें केंद्रीय नेतृत्व द्वारा प्रचार कार्यक्रम में शामिल किया गया था। उन्हें खुशी है कि वहां प्रधानमंत्री द्वारा चला जा रही विकास योजनाएं इस कदर प्रभावी रही कि उड़ीसा वासियों ने विधानसभा में भाजपा को पूर्ण बहुमत दिलाई है ।इस जीत में छोटी सी सहभागिता के लिए वह खुद को गौरवान्वित समझती हैं। मौके पर उन्होंने आगामी विधानसभा चुनाव में मुजफ्फरपुर नगर विधानसभा क्षेत्र से दावेदारी के कयासों पर सहमति जताई। उन्होंने कहा कि एक कार्यकर्ता के रूप में निचले स्तर से लेकर केंद्रीय स्तर पर जब जहां उन्हें पार्टी द्वारा दायित्व सौंपा गया है एक सजग सिपाही के रूप में उन्होंने उसका निर्वहन किया है। उनका मानना है कि पार्टी जिन मापदंडों को सामने रखकर प्रत्याशी का चयन करती है उसके लिए वह उपयुक्त हैं और महिला प्रत्याशी के रूप में अपनी दावेदारी रखना चाहती हैं । उन्होंने कहा कि चूंकि नगर विधानसभा क्षेत्र में फिलहाल भाजपा का नेतृत्व नहीं है। इसलिए केंद्रीय नेतृत्व के समक्ष अपनी दावेदारी प्रस्तुत करेंगी। अगर पार्टी नेतृत्व उन्हें सिंबल देती है तो पूरे दम खम से चुनाव लड़ेंगी और कोशिश रहेगी नगर विधानसभा क्षेत्र एक बार फिर से अपनी पार्टी की झोली में डाल दें। उन्होंने यह भी कहा कि अगर केंद्रीय नेतृत्व किसी और साथी को नेतृत्व के लिए सिंबल प्रदान करती है तो समर्पित सिपाही के रूप में उनकी जीत के लिए पूरे दम से काम करेगी । एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा चुनाव के लिए तैयार रहने की बात नहीं है क्योंकि भाजपा कार्यकर्ता 24 घंटे तैयार ही रहते हैं । वैसे भी उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि राजनीतिक रही है और वह भी राजनीति में वर्षों से योगदान दे रही हैं । ऐसे में पार्टी नेतृत्व का जब जैसा आदेश होगा वह बढ़ चढ़ कर काम करेंगे। पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा द्वारा महिलाओं की नगण्य भागीदारी पर महिला नेत्री ने कहा कि गठबंधन धर्म के कारण ऐसा हुआ है। लेकिन खुशी है कि घटक दलों ने जिन महिलाओं को भागीदारी दी है, वे जीतकर संसद भी पहुंच गई है।

तिरहुत स्नातक सीट से विनायक गौतम होंगे प्रत्याशी

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। तिरहुत स्नातक क्षेत्र के एम एल सी देवेश चंद्र ठाकुर के सितामढी से सांसद बनने के बाद तिरहुत स्नातक क्षेत्र से एम एल सी उपचुनाव को लेकर फादर्स डे पर तिरहुत स्नातक क्षेत्र से तिन बार प्रतिनिधित्व करने वाले पूर्व एम एल सी रामकुमार सिंह ने अपने चिकित्सक पुत्र डॉ विनायक गौतम को विरासत सौंपते हुए ऐलान किया कि तिरहुत स्नातक क्षेत्र से अब चुनाव नहीं लड़ेंगे ।उनकी जगह उनके पुत्र डॉक्टर विनायक गौतम अपनी दावेदारी जनता के बीच रखेंगे । मौके पर उन्होंने कहा कि निश्चय ही अब चुनाव में पैसे की महत्ता बढ़ गई है। लेकिन अब भी जनता की अदालत में बाहुबल और धन बल प्राप्त होता रहा है योग्य प्रत्याशी जीतते रहे हैं । उन्होंने कहा कि बदले परिवेश में वोगस वोटिंग भी कराए जाते हैं लेकिन उन्हें लोकतांत्रिक प्रणाली पर विश्वास है उन्हें यकीन है की वोगस मतदान पर आयोग रोक लगाएगी और स्नातक यानी ज्ञानी बुद्धिमान मतदाता इस क्षेत्र से शिक्षित और योग्य प्रतिनिधि को विधान परिषद में पहुंचाने का काम करेंगे। उन्होंने कहा कि आमतौर पर देखा जाता है की राजनीतिक परिवार में बच्चे पढ़ाई लिखाई में रुचि नहीं रखते हैं लेकिन उन्होंने शिक्षा को प्राथमिकता दी और विनायक गौतम को चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में एक योग्य चिकित्सक के रूप में सींचने का काम किया है । मौके पर डॉक्टर गौतम ने अपने पिता से हासिल विरासत को जनता के बीच ले जाने और मौका मिलने पर जनसेवा की परिधि को बढ़ाने का संकल्प लिया । उन्होंने कहा कि वे राजनीतिक परिवार से आते हैं जिनका सामाजिक उत्थान में विशेष योगदान है चाहे उनके स्वर्गीय नाना रघुनाथ पांडे जी हों अथवा पिता पूर्व विधान परिषद रामकुमार सिंह । सबने राजनीतिक और सामाजिक उत्थान में योगदान दिया है ऐसे में उनका भी दायित्व है कि उनकी विरासत और विचारधारा को लेकर वे आगे बढ़े हैं । अगर जनादेश मिलता है तो व्यापक पटल पर जनसेवा के क्षेत्र में काम करेंगे। मौके पर एलएस कॉलेज की पूर्व प्राचार्य डॉ गौतम की मां डॉ सुनीति पांडेय समेत कई अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे ।

महुआ में सादगी भाई चारे और शांति के साथ मनाया गया बकरीद का पर्व

प्रात : किरण संवाददाता

महुआ। महुआ नगर परिषद क्षेत्र के साथ साथ महुआ प्रखंड क्षेत्र के अनेकों जगहों पर शांतिपूर्ण माहौल में बकरीद का पर्व मनाया गया। नगर के साथ साथ अन्य गांवों के विभिन्न मस्जिदों में बकरीद की नमाज अदा की गई। महुआ के तेगी मस्जिद वार्ड 23 ,शाही मस्जिद, मदीना मस्जिद हिदायतपुर,चकमजाहिद मस्जिद ,चक्काजीनिजाम मस्जिद ,डोगरा मस्जिद सहित विभिन्न ईदगाह में ईद उल अजहा की नमाज अदा की गई। नमाज के बाद लोगों ने एक दूसरे को मुबारकबाद दी और उसके बाद अपने-अपने घर जाकर जानवरों की कुबार्नी की। नमाज के बाद किया गया सामूहिक दुआ का आयोजन और देश में अमन चैन की मांगी गई दुआ ।इस दौरान पूरे प्रखंड में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम के साथ साथ पुलीस और प्रशासनिक पदाधिकारी भी घूम घूम कर स्थिती का जायजा लेते रहें। सभी समुदाय और धर्म के लोग ,जनप्रतिनिधि ईदगाह और मस्जिद पहुंचकर मुस्लिम भाइयों को बकरीद की मुबारकबाद दी। इस दौरान मस्जिद और ईदगाह में दिखा गंगा जमुनी तहजीब सा नजारा। सुबह सवेरे बच्चे ,बूढ़े ,जवान सभी लोग नए कपड़े पहनकर ,इत्र, खुशबू और सुरमा लगा कर सुबह सवेरे मस्जिद और ईदगाह में पहुंचने लगे। तेगी मस्जिद महुआ में सुबह 6:45 में ईद उल अजहा की नमाज अदा की गई। कुबार्नी पर्व पूरे महुआ में अकीदत, हर्षोल्लास और सादगी के साथ मनाया गया। वार्ड 23 निवासी समाजसेवी व शिक्षक मोहम्मद दिलशेर ने कहा की कुबार्नी अल्लाह (ईश्वर) के प्रति सच्ची भक्ति ,विश्वास ,प्रेम और आज्ञाकारी बन्दे (शिष्य) होने की भावना का प्रतीक है। वही महुआ अनुमंडल क्षेत्र के रासिशाहपुर जलालपुर ईदगाह में एवं चैनपुर ईदगाह में अब्बा बाकरपुर बड़ी ईदगाह में ख्वाजा चंद छपरा बड़ी ईदगाह में छोड़ ही बड़ी ईदगाह में रसूलपुर फतह सुमेरगंज देवी पर कर हटिया बुजुर्ग ईदगाह में केला कल बड़ी ईदगाह में ईद उल अजहर की नमाज शांतिपूर्ण एवं हर्षो उल्लास के साथ एवं आपसी सौहार्द के साथ सुबह 7:00 बजे लोगों ने जमात के साथ अदा की तत्पश्चात लोगों ने एक दूसरे को बकरा ईद की मुबारकबाद पेश की साथ ही तमाम ईदगाहों में मुल्क हिंदुस्तान की चौमुखी विकास एवं आपसी भाईचारे की भी दुआएं लोगों ने अल्लाह से मांगी।

आम की पेंटिंग और आम खाओ प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिले के सरिसबपाही मे दो दिवसीय मिथिला आम महोत्सव का आयोजन 16 जून एवं 17 जून को अयाची नगर युवा संगठन एवं ईसमाद फाउंडेशन के द्वारा किया जा रहा है। इस दो दिवसीय आयोजन मे 165 से अधिक आम के किस्म की प्रदर्शनी लगाई गई है। इस महोत्सव मे आम के विभिन्न किस्म पर चर्चा के साथ ही आम उत्पादक को बेहतर बाजार उपलब्ध कराने को लेकर विमर्श किया जा रहा है। महोत्सव में स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों को आम के विभिन्न किस्मों से परिचय कराना भी शामिल है। आम चित्रकला प्रतियोगिता मे शामिल हुए छात्रों के बीच पुरस्कार का भी वितरण किया गया। छात्रों के बीच आम खाने की प्रतियोगिता भी कराई गई आयोजनकर्ता मदन कुमार झा ने बताया की स्कूल मे पढ़ने वाले बच्चो को आम के विभिन्न किस्मों के बारे मे जानकारी देने के साथ ही पेड़ लगाने और पर्यावरण के प्रति जागरूक करना उदेश्य है। साथ ही इसको लेकर बच्चों के बीच आम की पेंटिंग बनाने को लेकर एक प्रतियोगिता भी आयोजित की गई और विजेता बच्चों के बीच पुरस्कार का वितरण किया गया। वहीं प्रगतिशील किसान मुरारी झा ने बताया की आम महोत्सव मे आम उत्पादक को बेहतर बाजार कैसे मिले इस पर चर्चा करना भी उद्देश्य है। विक्की मंडल ने कहा बच्चों को आम से जोड़ने और सभी प्रकार के आम पहचान कराने के उद्देश्य से आम महोत्सव के पहले दिन बालक और व्यस्क दो वर्ग के लिए आम खाओ प्रतियोगी का भी आयोजन किया गया। जिसमे 2 मिनिट के अंदर सबसे अधिक आम खाने वाले बच्चे और व्यस्क को पुरस्कार दिए गए। इसके साथ आम चित्रकला प्रतियोगिता भी हुआ। झंझारपुर प्रखंड के लालगंज निवासी अनुज कुमार झा ने 2 मिनिट में 12 आम खाए जबकि बालक वर्ग में विजेता नितेश मंडल ने 6 आम खाए। साथ ही आम महोत्सव के लिए आम उपलब्ध करने वाले किसानों और आम प्रेमियों को प्रतिभागिता के लिए एक - एक सर्टिफिकेट भी दिया गया। सन 2022 में पहली बार आयोजित किए गए इस आम उत्सव का लगातार तीसरे वर्ष 2024 में आयोजन होने पर स्थानीय लोगों और बच्चों में काफी हर्ष और उत्साह देखा गया। मंच संचलन विक्की मंडल ने किया। धन्यवाद ज्ञापन विकाश साहू द्वारा किया गया। वहीं आम उत्सव में सखी बहिनपा की छाया झा सहित विभा झा, शंकर झा, अमल झा, आशीष कुमार, मिथिलेश झा, उदय नाथ मिश्रा, रमेश ठाकुर, हर्ष नाथ झा हरखू,अज्जू झा इत्यादि ने भाग लिया।

रंजीत राय हत्या मामले का पुलिस ने किया खुलासा, भूजा दुकानदार सहित दो गिरफ्तार

मृतक व घायल के मोबाइल के साथ पुलिस ने दोनों को किया गिरफ्तार

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

पुलिस ने बीते एक फरवरी को हुए रंजीत राय हत्याकांड मामले का 17 जून को खुलासा कर दिया। पुलिस ने इस मामले में दो लोगों को गिरफ्तार किया है। जिनकी पहचान मुसरीघरारी थाना क्षेत्र के हरपुर ऐलौथ वार्ड नंबर 44 के विशेश्वर राम के पुत्र जटहू राम व विवेक पासवान के पुत्र राजा कुमार के रूप में हुई है।

पुलिस ने राजा कुमार के पास से मृतक रंजीत राय का मोबाइल एवं जटहू राम के पास से घायल सनील कुमार का मोबाइल बरामद किया है। इस संबंध में आयोजित प्रेस वार्ता को सम्बोधित करते हुए एएसपी संजय कुमार पाण्डेय ने बताया कि मुसरीघरारी थाना क्षेत्र के हरपुर एलौथ स्थित फ्लिपकार्ट गोदाम के सामने सड़क किनारे रंजीत राय एवं सुनील राय बेहोशी की हालत में पाए गए थे।

जिन्हे पुलिस टीम के द्वारा इलाज के लिए सदर अस्पताल भेजा गया था। जहां डॉक्टरों ने रंजीत राय को मृत घोषित कर दिया था। वहीं सुनील राय को बेहतर इलाज के लिए पटना रेफर किया गया था, जहां इलाज के बाद वह ठीक हो गये। उसी मामले में मृतक रंजीत राय के पिता रामजतन राय के लिखित आवेदन के आधार पर अज्ञात के विरूद्ध मुसरीघरारी थाना में मामला दर्ज किया गया था। तकनीकी अनुसंधान एवं मानवीय आसूचना संकलन के आधार पर अनुसंधान के क्रम में पुलिस ने दो लोगों को गिरफ्तार किया है। पूछताछ में पता चला कि जटहू राम का घटनास्थल के पास भूजा का दुकान है। वहीं राजा कुमार अपने पिता के साथ गाना बजाना का काम करता है। घटना के दिन मुजफ्फरपुर से प्रोग्राम करके आया था और गुटखा खाने के लिये दुकान की ओर गया। वहीं दुकान के पिछे रंजीत राय और सुनील राय बेहोशी की हालत में पड़े हुए थे और वहां पर इन्जेक्शन फेका हुआ था।

उन लोगों ने उनका मोबाइल व जेब से 800 रुपए निकाल लिया और शव को दुकान से अलग हटा कर रख दिया था। वहीं एएसपी संजय कुमार पाण्डेय ने बताया कि जांच रिपोर्ट आने के बाद मौत के कारणों का खुलासा हो सकता है।

21 जून से पहले गर्मी से राहत नहीं, लेकिन तापमान में एक-दो डिग्री की हो सकती गिरावट

● समस्तीपुर, वैशाली व बेगूसराय जिले में आज हीट वेव जैसी स्थिति उत्पन्न होने को लेकर ऑरेंज अलर्ट

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

उत्तर मध्य बिहार में 21 जून से पहले राहत की संभावना नहीं है। अभी 20 जून तक गर्मी का कहर जारी रह सकता है। इस दौरान दिन गर्म और आर्द्र रहने की संभावना है। वहीं मंगलवार को समस्तीपुर, वैशाली व बेगूसराय जिले में हीट वेव जैसी स्थिति उत्पन्न होने की संभावना है और इसके लिए मौसम विभाग ने ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। वहीं बुधवार और गुरुवार को इन जिलों में हीट वेव जैसी स्थिति रहने को लेकर येलो अलर्ट जारी किया है। हालांकि 18 जून से तापमान में दो डिग्री की कमी होने का भी अनुमान है। वहीं मौसम विभाग के अनुसार सोमवार को अधिकतम तापमान 41 डिग्री सेल्सियस व न्यूनतम तापमान 29 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। वहीं इस दौरान 6.9 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चली। वहीं सुबह में सापेक्ष आर्द्रता 87 फीसदी व दोपहर में 62 फीसदी रहा। बता दें कि ग्रामीण कृषि मौसम सेवा पूसा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के द्वारा जारी 15-19 जून तक का मौसम पूवार्नुमान के अनुसार अनुकूल मौसमीय स्थिति के प्रभाव से पूवार्नुमानित अवधि में अच्छी वर्षा की सम्भावना है। 18-19 जून को कुछ स्थानों पर भारी वर्षा का भी अनुमान है। इसी दौरान कुछ स्थानों पर तेज हवा चल सकती है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है। पूवार्नुमानित अवधि में औसतन 20 से 25 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने का अनुमान है।

बाईक चोर गिरोह के 9शातिर चोर गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर ।पुलिस ने एक बार फिर से बाइक चोर गिरोह का खुलासा करते हुए कुल नौ शातिर चोर को चोरी की बाइक के साथ गिरफ्तार किया है। यह बड़ी कार्रवाई मोतीपुर और बरूराज थाना क्षेत्र में छापेमारी कर की गई है। दरअसल बरूराज थानेदार संजीव दुबे को सूचना मिली कि बंगरा पट्टी नरबार देवरिया रोड जाने वाले रास्ते में चोरी की बाइक की डीलिंग हो रही है। पुलिस ने मौके पर छापेमारी कर तीन बाइक चोर को रंगे हाथ दबोच लिया। उनकी पहचान बरूराज थाना क्षेत्र के साकीन रामपुरा निवासी मो.सेराज, मनोहर छपरा के मो. नौशाद, और पारु थाना क्षेत्र के साकिन चतुरपट्टी के मो. मेराज के रूप मे हुई है। पुलिस ने उनके पास से चोरा का एक अपाचे और एक ग्लैमर बाइक बरामद किया है। वही मोतीपुर थाने की पुलिस ने मोहम्मदपुर बलमी स्थित बगीचा में कुछ युवक इकट्ठा होकर चोरी की बाइक की डीलिंग कर रहे हैं पुलिस ने इलाके को घेर कर 6 शातिर चोरों को दबोच लिया उन सभी की पहचान पूर्वी चंपारण के मेहसी थाना क्षेत्र के साकिन कटहा निवासी दीपक कुमार, राहुल कुमार, अभिनंदन कुमार, शंकर राय, गौतम कुमार और कन्हैया शाह के रूप में हुई है। यह सभी अंतर जिला हीरो के शातिर बाइक एक कार चोर है। पुलिस ने इनके पास से तीन चोरी की बाइक और एक स्कॉर्पियो बरामद किया है। पूरे मामले पर जानकारी देते हुए डीएसपी पश्चिमी अभिषेक आनंद ने बताया की सक्रियता पुलिस के तहत यह सभी कार्रवाई की गई है। उन्होंने बताया की इस गिरोह का मास्टरमाइंड पूर्वी चंपारण का पिंटू कुमार फरार है जिसकी तलाश में पुलिस छापेमारी कर रही है

चाचा ने भतीजी का किया अपहरण, मामला प्रेम प्रसंग, मुकदमा दर्ज

प्रात : किरण संवाददाता

रहिका थाना क्षेत्र से एक बड़ी खबर सामने आ रही है जहां रिश्ते को तार तार करने वाली मामला सामने आ रहा है। मिली जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के एक गांव में गांव के ही चाचा अपने ही भतीजी को शादी करने के नियत से अपहरण कर लिया। बताते चले की आवेदक पिरिता मां ने एक लिखित आवेदन देकर रहिका थाना में गुहार लगाई है कि मेरी बेटी 15 जून 2024 को 11:00 बजे दिन में स्कूल गई हुई थी शाम तक घर वापस नही आई तो काफी खोज बिन किए तो पता चला कि मेरा देवर बलराम मुखिया अपने माता पिता के सहयोग से मेरे बेटी को स्कूल से बहला फुसला कर शादी करने की नीयत से मेरी पुत्री को अपहरण कर लिया। आवेदक लडकी के मां ने बताई की मेरा देवर बाहर से आकर मेरी पुत्री को अपने माता पिता के सहयोग से अपहरण कर लिया। फोन करने पर फोन रिसीव नहीं करता है और मोबाइल भी बंद कर देता है ।इस बाबत रहिका थानाध्यक्ष रविंद्र कुमार से पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि आवेदन प्राप्त हुआ है आवेदन के आधार पर प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कार्रवाई करते हुए जल्द ही अपहता को बरामद कर लिया जाएगा।

संसदीय कार्य एवं अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री को सांसद ने किया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। सांसद डा गोपाल जी ठाकुर ने भरत सरकार के संसदीय कार्य एवं अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री किरण रिजूजू से उनके दिल्ली स्थित आवास पर पहुंचकर भेंट की तथा पीएम मोदी जी के मंत्रिमंडल में उनके फिर से शामिल होने पर बधाई दी। इस क्रम में संसद डा ठाकुर ने केन्द्रीय मंत्री श्री रिजुजु को मिथिला की संस्कृति के अनुसार पाग एवं अंगवस्त्र सम्मानित कर गुलदस्ता भेंट की । केंद्रिय मंत्री के समक्ष अपने संसदीय क्षेत्र के अल्पसंख्यक कल्याण से जुड़े बिभीन मुद्दो पर ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहा की दरभंगा लोकसभा क्षेत्र में अल्पसंख्यकों की बड़ी आबादी है और कांग्रेस राजद के लंबे समय तक प्रतिधित्व रहने के बाबजूद उस समाज के समग्र उत्थान के लिए अल्पसंख्यक प्रतिनिधियों ने कुछ नहीं किया जबकि देश के प्रधान मंत्री मोदी जी की सरकार सबका साथ सबका विकास के सिद्धांतो पर अमल कर रही है। सांसद ने कुवैत में हुई घटना में हताहत हुए ग्रामीण बिधानसभा के नैनाघाट के कालू खां का मामला भी मंत्री के संज्ञान में दिया और कालू खां के शव को उनके परजनों को उपलब्ध कराने का आग्रह किया। सांसद डा ठाकुर ने संसदीय मंत्री श्री रिजूजू को वेद ,न्याय, दर्शन, मीमांशा आदि के लिए विख्यात मिथिला के संबंध में विस्तार से जानकारी देते हुए आग्रह किया की संसद भवन में मिथिला के विभूतियों को भी जगह मिले तथा राष्ट्रीय राजधानी में मिथिला विभूतियों के नाम पर कुछ प्रसिद्ध क्षेत्रों तथा सरकों का नामांकरण हो।

घोष की ताल पर निकला संचलन, लोगों ने किया स्वागत

प्रात : किरण संवाददाता

वैशाली - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्वाधान में पिछले 6 जून से चल रहे संघ शिक्षा वर्ग के शिक्षार्थियों द्वारा रविवार की संध्या पथ संचलन का आयोजन किया गया। इस क्रम में सैकड़ो की संख्या में घोष की ताल पर चल रहे स्वयंसेवकों को देखने के लिए पूरा शहर उमर पड़ा। स्वयंसेवकों का अनुशासन देखकर नगर के लोगों ने दांतो तले उंगलियां दबा ली। इस दौरान स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए संघ के प्रांत प्रचारक रविशंकर जी ने कहा कि प्रशिक्षण के दौरान हम जो अनुशासन सीखते हैं, पथ संचलन के माध्यम से समाज के बीच उसका प्रदर्शन होता है। क्योंकि संघ एक पारिवारिक संगठन है, इसमें काम करने वाले कार्यकर्ता विभिन्न क्षेत्रों से आते हैं। कोई प्रोफेसर है, कोई चिकित्सक है, कोई शिक्षक है, कोई कृषक है लेकिन फिर भी उन में अनुशासन और देशभक्ति का भाव विकसित करना यह संघ का उद्देश्य है। बता दें कि स्थानीय बुद्धा वर्ल्ड स्कूल में बीते 6 जून से संघ शिक्षा वर्ग का आयोजन किया था जहां बिहार और झारखंड के लगभग 400 शिक्षार्थी उपस्थित हैं जिनके द्वारा पथ संचलन का आयोजन किया गया बता दें कि उक्त विद्यालय से निकलकर संचलन प्रखंड कार्यालय वैशाली के रास्ते से नया टोला मोड़ होते हुए भोला चौक एवं विश्वकर्मा चौक से पुनः मुख्य मार्ग होते हुए बुद्धा वर्ल्ड स्कूल तक पहुंचा। रास्ते में कई स्थानों पर पुष्पवृष्टि के माध्यम से लोगों ने स्वयंसेवकों का स्वागत किया। संचलन को देखकर लोगों का उत्साह चरम पर था। आलम यह रहा कि स्वयंसेवकों का अनुशासन और कदमताल देखकर लोग भारत माता की जय और वंदे मातरम का नारा लगाते दिखे। विभाग प्रचारक अनिश कुमार ने बताया कि संघ में अनुशासन ही सब कुछ है। पथ संचलन अनुशासन का प्रदर्शन है, जहां स्वयंसेवक घोष की ताल पर कदम से कदम मिलाकर चलते हैं। इस मौके पर वर्ग के व्यवस्था प्रमुख उमाशंकर जी, सह व्यवस्था प्रमुख कन्हैया जी, हेमंत जी, वरुण जी, रवि जी, मंगलम जी, दीपक जी, मृत्युंजय जी आदि उपस्थित रहे।

साली की शादी में ससुराल गए युवक की संदेहास्पद मौत, पिता ने समधी व उनके दामाद पर लगाया हत्या का आरोप

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के दुधपुरा बाजोपुर स्थित ससुराल में अपनी साली की शादी में गए एक युवक की इलाज के दौरान संदेहास्पद मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मोहनपुर रोड स्थित एक निजी अस्पताल से उसका शव जब्त कर पोस्टमार्टम कराया। मृतक की पहचान वारिसनगर थाना क्षेत्र के विजय साह के पुत्र सुबोध कुमार साह (24 वर्ष) के रूप में हुई है। मृतक के पिता ने ससुराल वालों पर हत्या की प्राथमिकी दर्ज कराने को लेकर मुफ्फसिल थाना में लिखित आवेदन दिया है। मृतक के परिजनों के अनुसार सुबोध हरियाणा में रहकर गाड़ी चलाने का काम करता था। तीन साल पहले उसकी शादी बाजोपुर में हुई थी। उसे एक लड़का और एक लड़की है। अपनी साली की शादी में शामिल होने के लिए वह हरियाणा से सपरिवार बीते 13 जून को समस्तीपुर आया था और 14 जून को अपने ससुराल गया था। जहां 16 जून को उसकी तबियत खराब हो गई थी और उसे शहर के एक निजी अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया यहां। मृतक के पिता विजय कुमार साह ने इसके लिए अपने समधी, उनके दोनों पुत्र व उनके दामाद पर हत्या का आरोप लगाया है। वहीं इस संबंध में मुफ्फसिल थानाध्यक्ष पिंकी प्रसाद ने बताया कि आवेदन के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

संक्षिप्त खबरें

प्रखंड में बकरीद पर्व शांतिपूर्ण संपन्न

जमुई/गिद्धौर। प्रखंड भर के इदगाहों और मस्जिदों में सोमवार को शहादत और कुबार्नी के पर्व ईद उल अजहा बकरीद की नमाज अदा की गई। प्रखंड के गिद्धौर, केतरुनवादा, बरदघटा, धनियाठीका, मौरा, कैराकादो आदि गांव में मुस्लिम भाइयों ने नमाज अदा कर एक दूसरे से गले मिल बधाई दी। धनियाठीका मस्जिद में इमाम हाफिज मोहब्बत शमशाद आलम एवं युवा समाजसेवी मो.शाहिद खाँन,झुन्नू खाँन ने अपने तकरीर में कहा कि कुबार्नी दीन की शान और इस्लाम का बड़ा निशान है। यह हजरत इब्राहिम अलैह सलाम की सुन्नत है। कुबार्नी जज्बा, इखलास, वफादारी का दर्श देता है। उनोन्हे प्रखंड भर के मुस्लिम भाइयों से भाइचारे के साथ शांति पूर्वक बकरीद पर्व मनाए जाने व नमाज अदायगी करने की बात कही। इधर बकरीद को लेकर प्रखंड के तमाम मस्जिदों एवं ईदगाहों में गिद्धौर बीडिओ अजय कुमार,सीओं आरती भूषण,पीओं बिपिन कु मार,थानाध्यक्ष रीता कुमारी,एसआई अनुज कुमार,आयुषी कुमारी,उमेश कुमार द्वारा प्रखंड क्षेत्र के गिद्धौर, धनियाठीका,मौरा,केतरु नवादा, कैराकादो,बरदघटा आदि जगहों पर पर्याप्त मात्रा में पुलिस बल की मुस्तैदी से तैनात कर विधि व्यवस्था पर कड़ी नजर बनाए हुए थे।

दूसरे चरण की सक्षमता परीक्षा 26 से 28 जून तक

जमुई/गिद्धौर। बिहार विद्यालय परीक्षा समिति ने सक्षमता परीक्षा -2.0 की तारीख की घोषणा कर दी है। यह परीक्षा 26,27 और 28 जून को ऑनलाइन आयोजित की जाएगी। इस परीक्षा में 85 हजार नियोजित शिक्षक शामिल होंगे,जो पहले चरण में उत्तीर्ण नहीं हो सके थे या जिन्हें अपना मनचाहा जिला नहीं मिला था। इन शिक्षकों को एक और मौका दिया जा रहा है।अभ्यर्थियों के एडमिट कार्ड जल्द ही जारी किए जाएंगे। सक्षमता परीक्षा 2.0 के तहत अलग-अलग कक्षाओं के लिए साथ श्रेणी में कुल 59 विषयों की परीक्षा आयोजित की जाएगी।इस परीक्षा में कोई नेगेटिव मार्किंग नहीं होगी। पहली से पांचवीं कक्षा के लिए एक विषय की परीक्षा होगी,जबकि छठी से आठवीं के लिए 8 विषय,माध्यमिक(नवमी से दसवीं) के लिए 19 विषय और उच्च माध्यमिक(11वीं से 12वीं) के लिए 31 विषयों की परीक्षा ली जाएगी। परीक्षा में कुल 150 वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे। पहली से पांचवी कक्षा के लिए भाषा से 30,सामान अध्ययन से 40 और समान्य विषय से 80 प्रश्न पूछे जाएंगे। इस तरह छठी से आठवीं,नौवीं व दशमी तथा 11वीं व 12वीं के शिक्षकों के लिए भी समान अंक प्रश्न पूछे जाएंगे। इसके अलावा सेकेंडरी स्कूल के प्रधान शिक्षक की परीक्षा 28 जून को और प्राइमरी स्कूल के प्रधान शिक्षक की परीक्षा 29 जून को होगी।

तमोट परसा में पेड़ से लटका मिला एक महिला की शव, ग्रामीणों ने जताया हत्या की आशंका

पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद हीं हो पाएगा खुलासा हत्या है या आत्म हत्या

- मामले की तपतीश में जुटी पुलिस कर रही गहन अनुसंधान

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा पेड़ से लटका मिला एक महिला का शव बरामद हुआ है वहीं ग्रामीणों ने हत्या की आशंका जताया है। मामले की जांच में पुलिस जुट गई है। मामला भरार्ही थाना क्षेत्र और मुरलीगंज थाना क्षेत्र के सीमावर्ती इलाको के तमोट परसा वार्ड संख्या 02 का बताया गया है। मृतका की पहचान मुरलीगंज थाना क्षेत्र के तमोट परसा वार्ड संख्या 2 निवासी विपिन सिंह की 45 वर्षीय पत्नी रंजू देवी के रूप में हुई है। घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि मृतका रंजू देवी की पुत्री का कुछ दिनों से धुरगांव वार्ड संख्या 12 निवासी रामचंद्र यादव के पुत्र विभूति सागर से प्रेम प्रसंग का मामला चल रहा था और कल शाम से ही वे अपने घर से गायब थी, जिस कारण रंजू देवी काफी परेशान थी। मृतका के पति विपिन सिंह भी बाहर गए हुए थे। घर में सिर्फ मृतका और उसकी पुत्रवधू कोमल हीं मौजूद थी। बीते रात सभी खाना पीना खाकर अपने-अपने कमरे में सोने चले गए थे। सुबह उठकर देखा तो रंजू देवी का शव घर के बाहर गले में रस्सी के सहारे एक पेड़ पर लटका है। आसपास के लोगों के सहयोग से शव को पेड़ से उतारा गया एवं घटना की जानकारी तत्काल भरार्ही व मुरलीगंज थाने की पुलिस को दी गई। घटना की सूचना मिलते हीं भरार्ही एवं मुरलीगंज थाने की पुलिस घटना स्थल पर पहुंचकर घटना की छानबीन में जुट गई है। फिलहाल पुलिस ने मृतका की शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु सदर अस्पताल मधेपुरा भेज दिया है। वहीं इस घटना को लेकर मधेपुरा एएसपी प्रवेंद्र भारती ने बताया कि बहरहाल शव का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है, पोस्टमार्टम के बाद हीं कुछ साफ हो पाएगा महिला की हत्या हुई है या सुसाइड का मामला है। पुलिस हर बिंदु पर गहन अनुसंधान कर रही है। वहीं ग्रामीण हत्या की आशंका जता रहे हैं। हालांकि यह जांच का मामला है। वहीं इस मामले को लेकर जिला परिषद उपाध्यक्ष रघुनंदन दास और ग्रामीण शिवमणि सिंह ने घटना की उच्चस्तरीय जांच की मांग मधेपुरा एसपी संदीप सिंह से की है उन्होंने कहा कि इस घटना में जो भी दोषी हैं उन्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जाए।

स्कूलों की व्यवस्था में नहीं हो रहा सुधार,मिल रही शिकायतें

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर। शिक्षा विभाग द्धारा लगातार छात्र हित्र को लेकर नए-नए फैसले लिए जा रहे हैं। बच्चों के समग्र विकास और शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने को लेकर लगातार निरीक्षण और अनुश्रवण का दौर जारी है। बावजूद मामला जस का तस दिख रहा है। शिक्षकों और संबंधित पदाधिकारियों की कार्यशैली में बहुत अधिक अंतर नहीं आ रहा। वही लगातार मिल रही शिकायत के बाद अब शिक्षा विभाग के नए निर्णय लेते हुए इसकी जिम्मेदारी जिले के डीएम को सौंप दी है। शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ.एस सिद्धार्थ ने सभी जिला पदाधिकारी को पत्र जारी करते हुए कहा कि शिक्षा विभाग के माध्यम से विद्यालय में निरीक्षण एवं अनुश्रवण की व्यवस्था की गई है। शिक्षा विभाग द्वारा चलाए गए सघन निरीक्षण के पश्चात भी विभाग के कमांड एंड कंट्रोल सेंटर में स्कूल की व्यवस्था पर शिकायतें लगातार मिल रही है ये शिकायतें सामान्यतः विद्यालय के संबंध में अब इतने निरीक्षण के पश्चात नहीं होनी चाहिए थी। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यालयों के निरीक्षण एवं अनुश्रवण में त्रुटि हुई है। उन्होंने कहा है कि इस त्रुटि के कारण आवश्यक है कि जिला पदाधिकारी अपने स्तर से (शिक्षा विभाग के पदाधिकारियों को छोड़कर) अन्य पदाधिकारी एवं पर्यवेक्षक से इन विद्यालयों का निरीक्षण कराएं। डीएम करेंगे नोडल पदाधिकारी नामित मिले निर्देश के आलोक में डीएम अपने जिला के लिए एक नोडल पदाधिकारी (उप समाहर्ता) शिक्षा विभाग के शिकायतों के अनुश्रवण के लिए नामित करेंगे। टोल फ्री नंबर 14417 एवं 18003454417 पर प्राप्त शिकायत पत्रों को डीएम द्वारा नामित पदाधिकारी को शिक्षा विभाग के अनुश्रवण कोषांग द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी। गैर शिक्षा विभाग के पदाधिकारियों से इन शिकायत पत्रों की स्वतंत्र जांच भी कराई जाएगी। साथ ही ई-शिक्षा कोष के माध्यम से इन प्रतिवेदन को सीधे अपर मुख्य सचिव,शिक्षा विभाग को उपलब्ध कराना होगा।

प्रखंड में हर्षोल्लास के साथ मनाई बकरीद, अमन और शांति के लिए कि दुआ

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/ई०अलीगंजः-अलीगंज प्रखंड क्षेत्र में सोमवार को अलीगंज, आढा,चंद्रदीप, कैथा,दिन्नगर,चंद्रदीप, दरखा, सहोडा,मरकाम ,जखड़ा, मिजार्गंज,बेला,मातबलवा, सेवे सहित दर्जनों मुस्लिम गांव में ईदउल अजहा (बकरीद)का त्योहार धूमधाम से मनाया गया। मुस्लिम समाज के लोगों ने एक साथ नमाज पढ़ी और नमाज के दौरान अल्लाह की इबादत कर मुल्क में अमन चैन की दुआ मांगी। वहीं, सभी गांव के ईदगाह एवं मस्जिदों में ईद- उल-अजहा की एक साथ नमाज पढ़ी। नमाज के बाद लोगों ने एक-दूसरे के गले मिलकर ईद की बधाई दी। अलीगंज ईदगाह के मैदान में नमाज पढ़ने के लिए बड़ी संख्या में लोग पहुंचे थे। बतातें चले कि बकरीद के दिन इस्लाम धर्म से जुड़े लोग बकरे की कुबार्नी देते हैं। इस्लाम धर्म में बकरीद को बलिदान का प्रतीक माना जाता है। इस्लामिक कैलेंडर के अनुसार, जिलहिज्ज का महीना साल का अंतिम महीना होता है। इसकी पहली तारीख काफी महत्वपूर्ण होती है। इस दिन चांद दिखने के साथ ही बकरीद की तारीख का ऐलान किया जाता है। जिस दिन चांद दिखता है उसके दसवें दिन बकरीद का पर्व मनाया जाता है।बकरीद इस्लामिक कैलेंडर के साल के सबसे आखिरी महीने में मनाई जाती है। बकरीद पर जहां बकरों की कुबार्नी दी जाती है वहीं ईद-अल-फित्र पर सेवई की खीर बनाई जाती है। बकरीद को या ईद उल-अजहा के नाम से भी जाना जाता है। हाफिज मोहम्मद मोबिन,हाफिज सल्लू,हाफिज इरफान ने बताया की इस्लामिक मान्यताओं के मुताबिक, पैगंबर हजरत इब्राहिम मोहम्मद ने अपने आप को खुदा की इबादत में समर्पित कर दिया था। उनकी इबादत से अल्लाह इतने खुश हुए कि उन्होंने एक दिन पैगंबर हजरत इब्राहिम की परीक्षा ली। अल्लाह ने इब्राहिम से उनकी सबसे कीमती चीज की कुबार्नी मांगी, तब उन्होंने अपने बेटे को ही कुर्बान करना चाहा। पैगंबर हजरत इब्राहिम मोहम्मद के लिए उनके बेटे से ज्यादा कोई भी चीज अजीज और कीमती नहीं थी। कहा जाता है कि जैसे ही उन्होंने अपने बेटे की कुबार्नी देनी चाही तो अल्लाह ने उनके बेटे की जगह वहां पर एक बकरे की कुबार्नी दिलवा दी। अल्लाह पैगंबर हजरत इब्राहिम मोहम्मद की इबादत से बहुत ही खुश हुए। मान्यताओं के अनुसार, उसी दिन से ईद-उल-अजहा (बकरीद) पर कुबार्नी देने की परंपरा शुरू हुई। और सभी मुस्लिम भाई अपने घरों में बकरा को पोस पल कर बकरीद के दिन कुबार्नी देते है, बकरा का मीट तीन हिस्सों में बाटा जाता है,जिसमे दो हिस्सा गरीबों,यतिमो,एवं लाचारो को देना सबावाब होता है, कुबार्नी देने के साथ बुराइयों,एवं गुनाहों से तौबा करते है,सच्चे मन से कुबार्नी देते है,उनको खुदा कबूल करते है, वहीं रविवार को अलीगंज बाजार में त्योहार को लेकर गुलजार दिखी, । वहीं बकरीद त्योहार को लेकर बच्चे काफी उत्साहित दिखे,नन्हे नन्हे बच्चे रंग बिरंगी कपड़े पहन कर बकरीद की मुबारक बाद दे रहे थे,वही बड़े बुजुर्ग ने बच्चों को ईदी दिया, वहीं ईद उल.अजहा की नमाज के बाद सभी अपने अपने घरों में बकरा की कुबार्नी दिया, और रिस्तेदारो एवं परिवारों के घर जाकर एक दूसरे से गले मिलकर ईद उल अजहा की मुबारक बाद दी,सभी जगहों पर ईद की नमाज शांतिपूर्ण तरीके से हुई,नमाज के दौरान मस्जिद व ईदगाह के बाहर शांति व्यवस्था को बनाए रखने के लिए पुलिस बल तैनात किए गए, मौके पर मुस्लिम समाज के बुद्धिजीवी एवं नौजवान बुजुर्ग सहित बच्चे मौजूद रहे।

ईद का पर्व सोनो मे हर्षोल्लास पूर्वक संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई - बकरीद के नाम से जाना जाने वाला इद उल अजहा का त्योहार सोनो प्रखंड छेत्रों में सोमवार को शांति पुर्वक संपन्न हो गया है । हजरत इब्राहीम की अल्लाह के प्रति असीम श्रद्धा और उनके द्वारा किये गए बलिदान की याद में मनाया जाने वाला इस महापर्व पर सोनो प्रखंड छेत्र के पेरा मटिहाना , खपरिया , बाजराडीह , भरतपुर , ढोंढरी , तिलवरिया , कोड़ाडीह , गोरबा मटिहाना , रकतरोहनियां , कुसैया , गंदर , बंदरमारा , सोनो , मोहनाडीह , करहरीटांड़ , रजौन , दुधनियां , भलसुंभिया , बाबुडीह आदि गांवों में सोमवार की अहले सुबह बड़ी संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोगों ने अपने अपने ईदगाहों ओर मस्जिदों में जाकर एक साथ नमाज अदा करते हुए देश वासियों के लिए दुआ मांगी । तत्पश्चात एक दुसरे के संग गले मिलकर ईद पर्व का मुबारक बाद दिया । इसके बाद बड़े बड़े बकरों की कुबार्नी दी गई । बताया जाता है कि बकरीद का त्योहार हजरत इब्राहीम की उस घटना पर आधारित है जब उन्होंने अल्लाह के हुक्म पर अपने पुत्र हजरत इस्माइल को बलिदान करने के लिए तैयार हो गए थे । अल्लाह ने उनकी परिक्षा लेने के लिए यह आदेश दिया था , लेकिन जब इब्राहीम अपने पुत्र को बलिदान करने लगे तभी अल्लाह ने उनकी निष्ठा को देखकर हजरत इस्माइल की जगह एक भेड़ को भेज दिया था । इस प्रकार हजरत इब्राहीम की बलिदान पुर्ण हो गया था । तभी से आज का दिन बलिदान का प्रतिक के रुप में मनाया जाने लगा है । आगे बताया गया है कि कुबार्नी की त्योहार का महत्व सिर्फ बलिदान तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह त्योहार सिखाता है कि अपने सबसे प्रिय वस्तुओं को अल्लाह के नाम करने के लिए तैयार रहना चाहिए । कुबार्नी का त्योहार परस्पर आपस में प्रेम , सद्भावना ओर सहायता का पाठ पढ़ाता है , जिस कारण लोग अपने अपने घरों में दिये गये बकरे की मांस को तीन हिस्सों में बांटकर खुशियां मनाते हैं । जिसमें एक हिस्सा गरीबों के लिए एवं दुसरी जरुरत मंदों ओर कुटुंब जनों के लिए तथा तिसरी हिस्से को अपने परिवार के लिए रखा गया है । जिस कारण यह बकरीद का त्योहार धार्मिक दृष्टिकोण से समाजिक समानता और भाईचारे का संदेश देते हुए इंसानियत की मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है । लिहाजा बकरीद का पर्व वास्तव में एक ऐसा पर्व है जो लोगों को आपस मे जोड़े रखता है ।

स्वास्थ्य भी स्वाद भी- गर्मी में यह फल कुदरती ठंडक और मिठास का दिलाता है एहसास

भीषण गर्मी में लोग ले रहे हैं ताड़ के फल का आनंद

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर। भीषण गर्मी व तापिश से बेहाल है ऐसे में बाजार की रौनक बढ़ाने वाला ताड़ का फल(ताड़ रो कुआ) काफी तरावट दे रहा है। यह दिखाने में बेहद आकर्षक और खाने में मीठा लगता है। हालांकि,इस फल का बाहरी आवरण नारियल जैसा बहुत कड़ा होता।कड़े आवरण को छांटने-हटाने के लिए दबिया का प्रयोग किया जाता है। तब इसके अंदर किसी में दो,किसी में तीन,किसी में चार ताड़ का कुआ(फल) निकलता है। फल का आकार कुछ दिल नुमा होता है। युक्त फल पर भी पीले,कत्थई और उजले छिलके होते हैं,जो खा लेने पर स्वादहीन कसेला लगता है। छिलके के अंदर बदली रंग का गुदा होता है,जो खाने में मीठा और ठंडा लगता है।इस गुदा के अंदर पानी रहता है,जिसका स्वाद कुछ-कुछ नारियल पानी जैसा होता है। यह ताड़ का फल गर्मी के मौसम और मानसून आगमन के बीच बाजार में बिकने लगता है,और बरसात के शुरूआती दिनों तक बिकता है। लेकिन क्या आप जानते हैं,कि ? इस रसीले फल के फायदे अनमोल है,जिन्हें जानकर ताड़ के फल के प्रति आपका आकर्षण बढ़ जाएगा। ताड़ का फल शरीर के लिए लाभदायक तो होता ही है,यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाता है।तीन साल से ताड़ का फल बिक्री करने वाले चंदन चौधरी कहते हैं साल में दो माह तक यह नगदी का धंधा है। एक ताड़ का कुआ 10 रूपया पीस करके बिकता है। ताड़ के फल के फायदे ताड़ फल खाने से पानी 77 ग्राम, प्रोटीन 1 ग्राम,फैट जीरो,काबोर्हाइड्रेट 21 ग्राम, कैल्शियम 9 ग्राम, फॉस्फोरस 33 मिलीग्राम,आयरन 0 मिलीग्राम,थिमाइन 04 मिलीग्राम,विटामिन सी 5 मिलीग्राम शरीर को मिलता है। डायबिटीज व एनीमिया के मरीजों के लिए लाभकारी ताड़ में प्रचुर मात्रा में विटामिन और खनिज पदार्थ पाया जाता है। ताड़ का फल डायबिटीज और एनीमिया के मरीज के लिए काफी लाभकारी है। साथ ही लू के प्रकोप से बचने में भी काफी मददगार साबित होता है।

अस्पताल में नही हो सका अबतक रोगी कल्याण समिति का गठन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं में जन भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए रोगी कल्याण समिति की गठन हर अस्पताल में किया जाना है लेकिन रेफरल अस्पताल झाझा में रोगी कल्याण समिति का गठन नही अबतक नही हुआ जिससे यह विभागीय अफसरों की मनमर्जी व उदासीन रवैये को दर्शाता है। अस्पताल में रोगी कल्याण समिति का गठन नही होने से आमजनों को समुचित स्वास्थ्य सेवा सही रूप से नही मिल पा रहा है। रोगी कल्याण समिति में बीडीओ को अध्यक्ष बनाने सहित अस्पताल के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी, पंचायत के नामित एक जनप्रतिनिधि सहित अन्य लोगों को शामिल किया जाना है लेकिन अबतक अस्पताल में रोगी कल्याण समिति का गठन नही हुआ है। इस संदर्भ में अस्पताल प्रबंधक नवनीत कुमार ने बताया कि अस्पताल में रोगी कल्याण समिति का अगर गठन हो जाता है तो स्वास्थ्य सुविधा को और बेहतर बनाया जा सकता है। कई ऐसे आवश्यक सामग्री की खरीददारी करना या नए सिरे से अस्पताल में काम करना, अस्पताल से जुड़ी अन्य कई कार्य कर पाना मुश्किल हो रहा है। उन्होनें बताया कि रोगी कल्याण समिति का गठन नही होने से हो रही परेशानी को लेकर विभाग को भी जानकारी दि गई है।

जमुई में शादी का झांसा देकर नाबालिग लड़की के साथ युवक ने बनाया शारीरिक संबंध

वहीं शादी से मना करने पर पीड़िता ने पुलिस को आवेदन देकर दर्ज कराया केस

- न्याय के इंतजार में पीड़िता पुलिस से लगातार कर रही मामले की जांच कराने की मांग

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई जिले के सिमुलतला इलाके में नाबालिग को शादी का झांसा देकर शारीरिक संबंध धोखाधड़ी करने का एक मामला सामने आया है। इस मामले में पीड़िता ने सिमुलतला थाना में आवेदन देते हुए पुलिस से कार्रवाई और न्याय की मांग की है। पुलिस केस दर्ज करते हुए आरोप लगाने वाले लड़की का मेडिकल जांच करवाते हुए आगे की कार्रवाई में जुट गई है। जानकारी के अनुसार सिमुलतला थाना इलाके के एक गांव की 17 साल 7 महीना की नाबालिग लड़की ने अपने ही गांव के 24 वर्षीय जयकुमार यादव नाम के युवक पर आरोप लगाया है।

आवेदन के अनुसार 24 साल के युवक ने लड़की को शादी का झांसा देकर मोबाइल पर बातचीत की और फिर अकेले में मिलने के लिए बुलाया। लेकिन, जब लड़की ने युवक से अकेले में मिलने से मना किया तो युवक लगातार पीछा करते रहा।

फिर एक दिन 11 मार्च 2024 को दिन के 11 बजे लड़की जब कोचिंग पढ़कर घर आ रही थी तभी रास्ते में उस युवक ने उसे रोक लिया और बोला कि मैं तुमसे शादी करूंगा, हमसे बात करो। फिर लड़की उससे बात करने लगी। इस दौरान सिमुलतला के एक कोठी में ले जाकर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाया, उस समय युवक ने अपने मोबाइल से फोटो भी ले लिया।

लड़की का आरोप है कि वह डराने लगा कि हम जो कहेंगे वह तुम्हें करना पड़ेगा नहीं तो फोटो वायरल कर देंगे। इस तरह से ब्लैकमेल करते हुए युवक ने लड़की के साथ कई बार शारीरिक संबंध बनाया और अब वह शादी किसी दूसरी लड़की के साथ करने जा रहा है। जब इसकी जानकारी लड़की को मिली तो उसने युवक से कहा कि तुम ऐसा नहीं कर सकते, शादी मुझसे ही करना पड़ेगा, जिसके बाद मारपीट की। युवती ने पुलिस को आवेदन देते हुए मामले की जांच पड़ताल कर जल्द ही कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है। इस मामले में सिमुलतला थाना अध्यक्ष धनंजय कुमार ने बताया कि आवेदन के आधार पर केस दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है। पुलिस ने नाबालिग लड़की को सोमवार की सुबह मेडिकल जांच के लिए सदर अस्पताल भेजा है।

ट्रक लूट मामले का पुलिस ने किया 12 घंटो अंदर बड़ा खुलासा

एक पिस्टल एक देशी कट्टा और लूट की रकम के साथ दो अपराधी हुआ गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा में ट्रक लूट मामले का पुलिस ने बड़ा खुलासा किया। 12 घंटो के अंदर लूट की रकम के साथ दो अपराधी को गिरफ्तार किया। एक देशी पिस्टल, एक देशी कट्टा और लूट की रकम भी बरामद किया। दरअसल जिले के मुरलीगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत बेलदौर नहर के पास एनएच 107 मुख्य सड़क पर बीते देर रात एक ट्रक चालक से हथियार के बल पर लूटपाट की घटना घटित हुई थी, इस मामले का पुलिस ने बड़ा खुलासा किया है। वहीं इस मामले में दो बदमाशों को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार बदमाशों के पास से लूट की 2500 रुपए नगद, एक देशी कट्टा, एक पिस्टल दो गोली, चार मोबाइल और एक बाइक भी बरामद हुई है। इस घटना के बाबत मधेपुरा एएसपी प्रवेंद्र भारती ने आज मुरलीगंज थाना में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान बताया कि 15 जून की देर रात को कटिहार जिले के रौतारा थाना क्षेत्र अंतर्गत रमैली निवासी ट्रक चालक बिंदु महतो सहरसा के मिंटू भगत राइस मिल से धान का भूसा लोड कर एथेनॉल फैक्ट्री पूर्णिया जा रहे थे कि इसी बीच रास्ते में मुरलीगंज थाना क्षेत्र के बेलदौर नहर के समीप रात्रि के करीब दो बजे मुख्य सड़क पर अज्ञात बदमाशों द्वारा ट्रक चालक को हथियार का भय दिखाकर एक मोबाइल और 2500 रुपए लूट लिया गया। इस घटना की जानकारी ट्रक मालिक द्वारा मुरलीगंज पुलिस को दी गई जहां पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए गुप्त सूचना एवं तकनीकी साक्ष्य से कांड का उद्भेदन कर लूटी गई मोबाइल, नगद रुपए, घटना में प्रयुक्त एक कट्टा एवं बाइक सहित दो बदमाश को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार बदमाश मुरलीगंज थाना क्षेत्र के गंगापुर वार्ड संख्या 8 निवासी मोलचंद मंडल के पुत्र प्रेम सागर और भलनी वार्ड संख्या 3 निवासी संजीव यादव के पुत्र आशुतोष आनंद उर्फ शिवम कुमार है। बताया जा रहा है कि गिरफ्तार दोनों बदमाशों पर पूर्व से भी कई मामले दर्ज है साथ हीं इनकी अपराधिक इतिहास भी पुरानी है, गिरफ्तार अपराधी को तत्काल जेल भेज दिया गया।

पूर्व जिला पार्षद स्वः पौषण प्रसाद यादव की मनाई गई द्वितीय पुण्यतिथि

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई पूर्व जिला पार्षद सदस्य सह जेपी सेनानी स्वर्गीय पोषण प्रसाद यादव की द्वितीय पुण्यतिथि पैतृक गांव कोरियासार स्थित उनके समाधी स्थल पर धूमधाम से मनाई गई। चकाई विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक सह राजद नेत्री श्रीमती सावित्री देवी, जिला पार्षद सदस्य प्रतिनिधि अजय कुमार यादव , दहियारी पेक्स सुकदेव प्रसाद यादव , समाज सेवी महेंद्र यादव के अलावा बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों ने स्वर्गीय पोषण प्रसाद यादव की समाधि स्थल पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें नमन किया । पैक्स अध्यक्ष सुखदेव यादव के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में पुष्पांजली अर्पित करने पहुंचे लोगों का स्वागत किया । पूर्व विधायक श्रीमती सावित्री देवी ने स्वः पौषण प्रसाद यादव की समाधि स्थल पर लगे उनके तेल चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व को याद किया । सावित्री देवी ने कहा कि स्वः यादव अपने जीवन मे परोपकार व समाज सेवा के प्रति किये गए समर्पण अनूकरणीय है । जिला पार्षद प्रतिनिधि अजय कुमार यादव ने पुष्प अर्पित करते हुए कहा कि स्वर्गीय पोषण प्रसाद यादव राजनीतिक व सामाजिक साहित्य के क्षेत्र में युवाओं को काफी मान सम्मान देते थे । मौके पर उपस्थित राजद युवा नेता विजय शंकर यादव , दहियारी पंचायत के पंचायत समिति सदस्य प्रतिनिधि राजेंद्र यादव , सरपंच प्रतिनिधि विष्णुदेव यादव , भाजपा नेता संतु यादव , असलम अंसारी , परमेश्वर यादव , यदुनंदन यादव , लोकन यादव , शंभू बरनवाल , सहित बड़ी संख्या लोग उपस्थित थे । ज्ञात हो कि कार्यक्रम के दौरान श्रद्धांजलि अर्पित करने पहुंचे लोगों को भोजन की व्यस्था की गई थी ।

बुजुर्ग की लु लगने से मौत

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई - आये दिन चल रहे उमस भरी गर्मी ओर तपते जमीन से उठते लु के कारण मवैशी चराने गए एक बुजुर्ग की लु लगने से मौत हो गई है । मृतक की पहचान चकाई प्रखंड के चंद्रमंडीह थाना क्षेत्र अंतर्गत पिपरा गांव निवासी संजय टुडग का 55 वर्षीय पिता डुगगा टुडू के रुप में हुई है । प्राप्त जानकारी के अनुसार डुगगा टुडू मवेशियों को चराने के लिए अपने गांव पिपरा से बटिया थाना क्षेत्र अंतर्गत आदर्श ग्राम पंचायत राज दहियारी के अम्माटिल्हा गांव की तरफ लेकर चला गया ओर एक झाड़ी की आड़ में बैठकर अपने मवेशियों को चरा रहा था । जहां पर वे भीषण गर्मी ओर जमीन से उठते लु को वे बर्दाश्त नहीं कर सका ओर उसकी मौत हो गई । इसकी सुचना पाकर मौके पर पहुंची बटिया थाना की पुलिस ने शव की तहकीकात कर पंचनामा तैयार कर ही रहे थे कि तभी मृतक के परिजन वहां पहुंच गया ओर थाना अध्यक्ष से आरजु विनती कर मृतक के शव को साथ लेकर अपने गांव चला गया ।

सम्पादकीय

आशावाद भी गायब

जहां युवा बेरोजगारी असामान्य रूप से ऊंची हो और खाद्य मुद्रास्फीति लगातार आठ प्रतिशत से ऊपर हो, वहां कैसी जिंदगी की कल्पना की जा सकती है? अप्रैल के जारी ताजा आंकड़ों में भी खाद्य मुद्रास्फीति 8.7 प्रतिशत दर्ज हुई है।कुवैत में विदेशी मजदूरों के एक रहवास में हुए भयंकर अग्निकांड में मरे 49 लोगों में तकरीबन 40 भारतीय हैं। उधर रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध में भाड़े के सैनिक के तौर पर गए दो और भारतीयों की मौत हो गई है। ये भारतीय उन 30 लोगों से अलग हैं, जिनके परिजनों ने भारत सरकार से संपर्क किया था। मतलब यह कि रूस की तरफ से लडे के लिए जिन भारतीयों को बहला-फुसला कर ले जा गया गया, उनकी संख्या उससे कहीं अधिक है, जिसकी जानकारी भारत सरकार और भारत के आम लोगों को रही है। यह खबर तो पहले से बहुचर्चित है कि भारत सरकार ने खुद अपने प्रयास से सैकड़ों देशवासियों को युद्धग्रस्त इजराइल में मजदूरी करने के लिए भेजा।तो मन में पहली नजर में भाव यह उभरता है कि त्रासदी कहीं हो, उससे भारतीयों का कोई ना कोई संबंध निकल आता है। आखिर देश में अवसरों की इतनी कमी और उससे उत्पन्न निराशा इतनी व्यापक क्यों है कि देशवासी कहीं भी जाकर अपनी जान खतरे में डालने के लिए तैयार हो जाते हैं? हम कुछ आंकड़ों पर गौर करें, तो इस बारे में कुछ संकेत पा सकते हैं। मसलन, जहां युवा बेरोजगारी असामान्य रूप से ऊंची हो और खाद्य मुद्रास्फीति लगातार आठ प्रतिशत से ऊपर चल रही हो, वहां आम जन की कैसी जिंदगी की कल्पना की जा सकती है? अप्रैल के जारी ताजा आंकड़ों में भी खाद्य मुद्रास्फीति 8.7 प्रतिशत दर्ज हुई है।कुल आलाम यह है कि सर्वे एजेंसी गैलप के एक विश्वव्यापी आकलन में सामने आया कि भारत में सिर्फ 14 फीसदी कर्मचारियों ने अपनी स्थिति को खुशहाल श्रेणी में रखा। बाकी 86 प्रतिशत कर्मचारियों ने अपनी हालत को संघर्षरत या पीड़ादायक बताया। जबकि अपने को खुशहाल बताने वाले कर्मचारियों का वैश्विक औसत 34 प्रतिशत था। शासक तबकों और उनके संचार माध्यमों की तरफ से इस जमीनी सूरत पर परदा डालने के सुनियोजित अभियान लगातार चलाए जाते हैं। मगर उनसे संकट अब छिपाये नहीं छिप रहा है। अब हाल यह है कि अक्सर चुनावों के बाद दिखने वाला आशावाद भी इस बार गायब ही रहा है।

अब नौकरियों की बड़ी चुनौती

डा. जयंतीलाल भंडारी

यकीनन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नई एनडीए गठबंधन सरकार के सामने एक बड़ी चुनौती नौकरियों और रोजगार अवसरों में वृद्धि करने की है। हाल ही में दुनिया में आर्थिक और रोजगार से संबंधित शोध अध्ययनों के लिए प्रसिद्ध फ्रांस के कॉरपोरेट एंड इन्वेस्टमेंट बैंक नेटिक्सि एसए के द्वारा प्रकाशित अध्ययन रिपोर्ट के मुताबिक भारत में जिस तेजी से युवा रोजगार के लिए तैयार होकर श्रम शक्ति (वर्क फोर्स) में शामिल हो रहे हैं, उसको देखते हुए भारत को 2030 तक प्रति वर्ष 1.65 करोड़ नई नौकरियों की जरूरत होगी। इसमें से करीब 1.04 करोड़ नौकरियां संगठित सेक्टर में पैदा करनी होंगी, जबकि पिछले दशक में सालाना कुल 1.24 करोड़ नौकरियां ही पैदा हो सकी थीं। इस रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि भारत को अपनी अर्थव्यवस्था में तेजी को बरकरार रखने के लिए सर्विसेज से लेकर मैन्युफैक्चरिंग तक सभी सेक्टर्स को नई रफ्तार से बढ़ावा देना होगा। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार वर्ष 2022 में भारत की कुल बेरोजगार आबादी में से 83 फीसदी बेरोजगार युवा थे। वर्ल्ड बैंक के मुताबिक भारत की कुल श्रम शक्ति की भागीदारी दर मात्र 58 प्रतिशत है, जो भारत के एशियाई समकक्ष देशों की तुलना में बहुत कम है। निःसंदेह नई गठबंधन सरकार को बेरोजगारी संबंधी चिंताजनक नए आंकड़ों को ध्यान में रखना होगा। हाल ही पिछले दस वर्षों में संघ लोक सेवा आयोग, रेलवे भर्ती और कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) ने जो भर्तियां की हैं, वे रिक्त पदों की तुलना में कम बहुत हैं।

राष्ट्रीय सांख्यिकीय संगठन (एनएसओ) के द्वारा जारी आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) आंकड़ों के अनुसार भारत के शहरी इलाकों में बेरोजगारी की दर वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही (जनवरी से मार्च 2024) में बढकर 6.7 प्रतिशत हो गई है, जो इसके पहले की तिमाही में 6.5 प्रतिशत थी। शहरी बेरोजगारी पिछली चार तिमाही के उच्च स्तर पर पहुंच गई है। 15 साल से अधिक उम्र में बेरोजगारी की दर जनवरी-मार्च 2023 की तिमाही के 6.8 प्रतिशत के बाद सर्वाधिक है। सर्वेक्षण के अनुसार युवा बेरोजगारी स्तर बढ़ा है और यह बीती तिमाही के 16.5 प्रतिशत से बढकर चौथी तिमाही में 17 प्रतिशत हो गया। यह आंकड़ा इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इस आयु वर्ग के लोग पहली बार श्रम बाजार में प्रवेश करते हैं। इससे शहरी रोजगार के बाजार में गिरावट का पता चलता है। अब नई सरकार के द्वारा देश में असंगठित सेक्टर लघु एवं मध्यम उद्योगों और गिग वर्कर्स की चिंताओं पर भी ध्यान दिया जाना होगा। इन सेक्टरों में करोड़ों लोगों को रोजगार तो मिल रहा है, लेकिन भविष्य एकदम सुरक्षित नहीं है। जून 2022 में प्रस्तुत नीति आयोग की एक रिपोर्ट बताती है कि भारत के 77 लाख लोग इस समय गिग इकॉनमी का हिस्सा हैं। अनुमान है कि 2029-30 तक इनकी संख्या 2.35 करोड़ हो जाएगी। गिग वर्कर्स के लिए बड़ी समस्या नौकरी जाने का खतरा और प्रोविडेंट फंड, हेल्थ इंश्योरेंस और सामाजिक सुरक्षा नहीं मिलना है। देश में रोजगार के मद्देनजर महिलाओं की स्थिति भी अच्छी नहीं है। नैसकॉम के मुताबिक भारत के प्रौद्योगिकी कार्यबल में केवल 36 फीसदी महिलाएं हैं। विश्व बैंक के आंकड़ों के मुताबिक भारत में वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और प्रौद्योगिकीविदों में महिलाओं की भागीदारी केवल 14 फीसदी है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) क्षेत्र में महिलाओं का रोजगार कम है और भारत के बड़े अवसरों के लिए महिलाओं की कम भागीदारी चुनौतीपूर्ण है।

निश्चित रूप से नई गठबंधन सरकार को देश की नई पीढ़ी को जॉब सीकर यानी नौकरी की चाह रखने वाले से ज्यादा नए दौर के जॉब गिवर यानी नौकरी देने वाले बनाने की तेज रणनीति के साथ भी आगे बढा होगा। पिछले 10 वर्षों में जिस तरह नई पीढ़ी के द्वारा स्वरोजगार के मौके मुठ्ठी में लिए जा रहे हैं, उनकी रफ्तार बढ़ाई जानी होगी। हाल ही में शोध संस्थान स्कॉच की एक रिपोर्ट में कहा गया कि मोदी सरकार के पिछले 10 साल के कार्यकाल में 51.40 करोड़ रोजगार मिले हैं। इस शोध में 2014-24 की अवधि में ऋण-आधारित हस्तक्षेपों और सरकार-आधारित हस्तक्षेपों का अध्ययन किया है। जहां ऋण आधारित हस्तक्षेपों ने प्रति वर्ष औसतन 3.16 करोड़ रोजगार जोड़े हैं, वहीं सरकार आधारित हस्तक्षेपों से प्रति वर्ष 1.98 करोड़ रोजगार पैदा हुए हैं। सामान्यतः एक लोन पर औसतन 6.6 प्रत्यक्ष रोजगार पैदा हुए हैं। इस अध्ययन से यह भी पता चलता है कि सूक्ष्म कर्ज का इस्तेमाल स्थिर और टिकाऊ रोजगार सृजन के लिए किया जा रहा है। इस शोध अध्ययन में रोजगार व स्वरोजगार से संबंधित 12 केंद्रीय योजनाओं को शामिल किया गया है। इनमें मनरेगा, पीएमजीएसवाई, पीएमईजीपी, पीएम-जी, पीएलआई, पीएमएवाई-यूए और पीएम स्वनिधि जैसी प्रमुख योजनाएं शामिल हैं। इस शोध अध्ययन के मुताबिक पिछले दस वर्षों में ऋण अंतराल यानी जीडीपी के अनुपात में कर्ज के अंतर में 12.1 प्रतिशत की गिरावट आई है तथा इस अध्ययन से ऋण अंतराल में कटौती, बहुआयामी गरीबी में कमी और एनएसडीपी में वृद्धि के बीच एक सकारात्मक संबंध भी प्रतिपादित हुआ है। इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विगत 10 वर्षों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) जैसी नई स्किल्स से नई पीढ़ी को सुसज्जित करके उनके लिए रोजगार के मौके बढ़ाए हैं। अब तीसरे कार्यकाल में देश में वैश्विक क्षमता केंद्रों की (जीसीसी) स्थापनाओं की रफ्तार तेजी से बढ़ाकर नए तकनीकी कौशल वाले युवाओं के लिए रोजगार के अधिक मौके सृजित करने की डगर पर आगे बढ़ा जाना होगा। चूंकि कई विकसित और विकासशील देशों में तेजी से बूढ़ी होती आबादी के कारण उद्योग-कारोबार व सर्विस सेक्टर के विभिन्न कामों के लिए युवा हाथों की कमी हो गई तथा श्रम लागत बढे से ये देश कार्यबल संबंधी परेशानियों से जूझ रहे हैं, ऐसे में भारत को इस मौके को भुनाते हुए तेजी से आगे बढा होगा। सरकार ने 2023 तक भारतीय श्रमिक उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न देशों के साथ 13 समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। नई गठबंधन सरकार को ऐसे समझौतों को अब और बढ़ाने की रणनीति के साथ आगे बढा होगा। इससे देश की युवा श्रमशक्ति विदेशों में अधिक रोजगार के साथ अधिक विदेशी मुद्रा की कमाई भी कर सकेगी। हम उम्मीद करें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नई सरकार के द्वारा उनके विकास के एजेंडे में शामिल अधिक रोजगार के मुद्दे को प्राथमिकता के साथ ध्यान में रखा जाएगा। हम उम्मीद करें कि नई सरकार नई सरकारी नौकरियों के सृजन पर पूर्णरूपेण ध्यान देते हुए लघु-मध्यम उद्योग और असंगठित क्षेत्र में रोजगार की जरूरतों पर ध्यान देगी।

साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार और माफिया गैंग

क्या इन्हीं अनैतिक मूल्यों के साथ आज का युवा और उनका साहित्य टिका हुआ है? साहित्य को गोरखधंधा बना दिया गया है। बहुत ही शर्म और जहालत की बात है। क्या साहित्य में माफिया गैंग का प्रवेश हो चुका है? आखिर क्या हो रहा है? कल केंद्रीय साहित्य अकादेमी द्वारा 2024 के युवा व बाल साहित्य पुरस्कारों की घोषणा की सोशल मीडिया पर खबर के बाद बधाईयों के साथ-साथ, जैसे अकादेमी पुरस्कारों को लेकर हर साल होता रहा है, कोई न कोई सवाल, विवाद तो उठता ही उठता है, इस बार भी कुमार सुशांत ने प्रविष्टि की अंतिम तिथि, और उसके बाद छपी पुस्तकों पर सवाल उठाते हुए पोस्ट लिखी तो जाहिर है मामला तूल पकड़ना ही था, कई प्रतिक्रियाएं, सवालों के रूप में सामने आ रही हैं। अकादमी के किसी भी नियम में अंतिम तिथि के बाद प्राप्त किताबों पर विचार के लिए कहीं कोई विशेषाधिकार का जिक्र या प्रावधान नहीं है। नियम -3 के बिन्दु (6) में स्पष्ट लिखा है कि 24 भारतीय भाषाओं में प्राप्त सुयोग्य पुस्तकों की सूची संबध्द भाषा परामर्श मण्डल के (संयोजक सहित) सभी सदस्यों को इस अनुरोध के साथ भेजी जाएगी कि वे अकादेमी द्वारा निर्धारित तिथि तक दो पुस्तकों का अनुमोदित करें। नियम 7-विविध के पहले पैराग्राफ में यह जरूर लिखा है कि यदि भाषा परामर्श मण्डल के किसी सदस्य या निर्णायक के द्वारा संस्तुति भेजने की समय सीमा की अनदेखी की जाती है तो अकादेमी यह मानकर चलेगी कि उसकी कोई संस्तुति नहीं है

डॉ. सत्यवान सौरभ

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

इस बार की साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार की अंतिम घोषणा पूर्णतः जाली और संशयाधीन प्रतीत हो रही है। इससे बड़ी साहित्यिक दुर्घटना और क्या हो सकती है? इन मानदंडों पर चलते हुए हम कहाँ जा रहे हैं? समाज को क्या सीख दे रहे हैं? क्या इन्हीं अनैतिक मूल्यों के साथ आज का युवा और उनका साहित्य टिका हुआ है? साहित्य को गोरखधंधा बना दिया गया है। बहुत ही शर्म और जहालत की बात है। क्या साहित्य में माफिया गैंग का प्रवेश हो चुका है? आखिर क्या हो रहा है?

कल केंद्रीय साहित्य अकादेमी द्वारा 2024 के युवा व बाल साहित्य पुरस्कारों की घोषणा की सोशल मीडिया पर खबर के बाद बधाईयों के साथ-साथ, जैसे अकादेमी पुरस्कारों को लेकर हर साल होता रहा है, कोई न कोई सवाल, विवाद तो उठता ही उठता है, इस बार भी कुमार सुशांत ने प्रविष्टि की अंतिम तिथि, और उसके बाद छपी पुस्तकों पर सवाल उठाते हुए पोस्ट लिखी तो जाहिर है मामला तूल पकड़ना ही था, कई प्रतिक्रियाएं, सवालों के रूप में सामने आ रही हैं। अकादमी के किसी भी नियम में अंतिम तिथि के बाद प्राप्त किताबों पर विचार के लिए कहीं कोई विशेषाधिकार का जिक्र या प्रावधान नहीं है।

नियम -3 के बिन्दु (6) में स्पष्ट लिखा है कि 24 भारतीय भाषाओं में प्राप्त सुयोग्य पुस्तकों की सूची संबध्द भाषा परामर्श मण्डल के (संयोजक सहित) सभी सदस्यों को इस अनुरोध के साथ भेजी जाएगी कि वे अकादेमी द्वारा निर्धारित तिथि तक दो पुस्तकों का अनुमोदित करें।

नियम 7-विविध के पहले पैराग्राफ में यह जरूर लिखा है कि यदि भाषा परामर्श मण्डल के किसी सदस्य या निर्णायक के द्वारा संस्तुति भेजने की समय सीमा की अनदेखी की जाती है तो अकादेमी यह मानकर चलेगी कि उसकी कोई संस्तुति नहीं है और तदनुसार अपनी पुरस्कार प्रक्रिया को आगे बढ़ाएगी सिवाय उस विशेष परिस्थिति के जिसमें अकादेमी समय-सीमा को बढ़ा पाने की स्थिति में हो तथा वास्तव में उसे बढ़ाती हो।

आश्चर्य की बात जिन तीन लोगों के बारे में सवालिया निशान हैं वे तीनों ज्यूरी के द्वारा रेकॉमेंडेड हैं यानी तीनों पुस्तकों की पैरवी की गई है। वाह रे साहित्य अकादमी। कमाल तो यह कि तीन पैरवी वाले लोगों में एक को पुरस्कार दिया गया है। अब ज्यूरी कितनी ईमानदार है यह सोचने वाली बात है। कहीं ऐसा तो नहीं कि लिस्ट में जितने नाम आये हैं वे सभी ज्यूरी द्वारा रेकॉमेंडेड ही हैं। कहीं ऐसा तो नहीं रेकॉमेंडेड नाम पर ही केवल विचार हुआ और जो लेखक निर्धारित समय के भीतर अपनी पुस्तक जमा किये उनकी पुस्तक पर (रिकमेंड न होने के कारण) विचार ही नहीं किया गया। लिस्ट में शामिल किस किताब को किस ज्यूरी मेंबर ने रेकॉमेंड किया क्या साहित्य अकादमी यह बतलायेगी?

प्रसिद्ध आलोचक,कवि, लेखक नवनीत पांडेय के अनुसार सवाल यह है कि अगर अकादेमी अपनी विज्ञप्ति में घोषित अंतिम तिथि में परिवर्तन नहीं करती है या बिना पब्लिक सूचना तिथि केवल निर्णायक पैनल को ही व्यक्तिशः सूचित कर तिथि बढ़ा देती है तो बात अलग है, बावजूद इसके किसी नियम में यह कहीं लिखा है कि निर्णायक मण्डल या पैनल को अंतिम तिथि के बाद प्राप्त या किसी व्यक्तिगत जानकारी,सोर्स से प्रकाशित किताब को सूची में शामिल कर, करा सकता है। यदि इन नियमों में कोई संशोधन नहीं हुआ है, यही हैं तो इनके प्रावधानों की जानकारी के बावजूद भी अगर निर्णायक मण्डल, पैनल तिथि के बाद प्राप्त, प्रकाशित किताबों पर विचार कर उसे अंतिम सूची में शामिल कर उन्हें पुरस्कार योग्य पाती है, पुरस्कार घोषित करती है तो अवश्य ही ये प्रतिभाए अप्रतिम और विलक्षण हैं, इस में संदेह नहीं होना चाहिए।

याद दिला दूँ कि साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार-2024 हेतु आवेदन और प्रविष्टि जमा करने की अंतिम तिथि 31 अगस्त 2023 थी। साहित्य अकादमी ने पुरस्कार की घोषणा के साथ जिन 12 लेखकों का नाम प्रकाशित किया है उनमें दो लेखकों की पुस्तक आवेदन की तिथि के बाद आयी है। पहले लेखक हैं शहादत और दूसरे विहाग वैभव। शहादत की पुस्तक ह्यकर्फ़्यू की रातह्न लोकभारती प्रकाशन से 2024 में पब्लिश हुई यानी आवेदन की अंतिम तिथि के 5 महीने बाद और विहाग वैभव की पुस्तक राजकमल प्रकाशन से सितम्बर 2023 में प्रकाशित हुई यानी आवेदन की अंतिम तिथि के एक महीने बाद।

पाठक दोनों पुस्तक के प्रकाशन का प्रमाण गूगल में देखें। ऐसी स्थिति में साहित्य अकादमी ने इन दोनों लेखकों की पुस्तकों पर विचार कैसे किया? इन दोनों पुस्तकों का नाम अंतिम सूची में कैसे है? नियमतः तो यह अमान्य और अनैतिक है। इस विषय पर शोध करने के दौरान पाया कि पुरस्कृत लेखक की पुस्तक 30 अगस्त 2023 को प्रकाशित हुई और 31 अगस्त 2023 आवेदन की अंतिम तिथि थी। एक दिन में स्वयं लेखक महोदय पुस्तक प्रकाशक से लेकर साहित्य अकादमी के कार्यालय कैसे पहुंचा दिए? क्योंकि साहित्य अकादमी की प्रेस विज्ञप्ति में साफ-साफ लिखा है कि आवेदक को पुस्तक की दो प्रतियाँ स्वयं प्रमाणित जन्म प्रमाण पत्र के साथ जमा करानी होगी। साहित्य अकादमी से अनुरोध है कि इसपर गौर फरमाया जाए और तुरन्त काररवाई करते हुए साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2024 की घोषणा वापिस ली जाए। नए सिरे से पुरस्कृत युवा की नयी घोषणा की जाए। यह अन्य समर्थ युवा लेखकों के साथ ज्यादती है। यह तो बहुत गंभीर मामला है, पारदर्शिता का दावा करने वाली अकादमी के लिए बहुत ही अपमानजनक भी, लेखकों को संज्ञान लेना चाहिए, अकादमी सचिव, अध्यक्ष से जवाब तलब करना चाहिए। सुशांत जी, आपने प्रमाण सहित जो साहित्य अकादमी की पोल खोली है उस पर सभी साहित्यकारों की दृष्टि

फिर आतंकी हमलें, कायम हो शांति का उजाला

इन हमलों ने आंतरिक सुरक्षा के लिये नये सिरे से चुनौती पैदा की है। जम्मू में रियासी, कठुआ और डोडा में चार दिनों में चार आतंकी हमले चिन्ता का बड़ा कारण बने है। रविवार को रियासी में श्रद्धालुओं से भरी बस के चालक पर हुए हमले के बाद बस अनियंत्रित होकर खाई में गिर गई थी। जिसमें नौ श्रद्धालुओं की मौत हो गई थी। फिर कठुआ व डोडा में हुए आतंकी हमलों में एक जवान और दो आतंकवादी मारे गए हैं। लम्बे समय की शांति, अमन-चैन एवं खुशहाली के बाद एक बार फिर कश्मीर में अशांति एवं आतंक के बादल मंडराये हैं। धरती के स्वर्ग की आभा पर लगे ग्रहण के बादल छंटने लगे थे कि एक बार फिर कश्मीर को अशांत करने की कोशिशें तीव्र होते हुए दिख रही है। केन्द्र में गठबंधन वाली मोदी सरकार के सामने यह एक बड़ी चुनौती है। इन आतंकी घटनाओं को केन्द्र सरकार ने गंभीरता से लिया है। कुछ गिरफ्तारियां भी हुई और हथियार भी बरामद हुए हैं। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए गुरुवार को प्रधानमंत्री ने गृहमंत्री अमित शाह, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल व सुरक्षा एजेंसियों के साथ बैठक की है। इसमें आतंकवाद की नई चुनौती से मुकाबले की रणनीति पर विचार हुआ है। दरअसल, नई सरकार बनने की प्रक्रिया के दौरान हुए इन हमलों में पाक की भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन पाकिस्तान यह बड़ी भूल कर रहा है, क्योंकि मोदी सरकार की दृढ़ता एवं साहस को चुनौती देना इतना आसान नहीं है।

ललित गर्ग

लेखक शिक्षाविद है

यह आशंका सच साबित हो रही है कि भाजपा को पूर्ण बहुमत न मिलने पर कश्मीर में आतंकी घटनाएं बढ़ेंगी एवं पाकिस्तान पोषित आतंकवाद फिर से फन उठाने लगेगा। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद हुए पहले लोकसभा चुनाव में रिकॉर्ड मतदान से पाकिस्तान बौखलाया है। इसी का परिणाम है लगातार हो रहे आतंकी हमलें। इन हमलों ने आंतरिक सुरक्षा के लिये नये सिरे से चुनौती पैदा की है। जम्मू में रियासी, कठुआ और डोडा में चार दिनों में चार आतंकी हमले चिन्ता का बड़ा कारण बने है। रविवार को रियासी में श्रद्धालुओं से भरी बस के चालक पर हुए हमले के बाद बस अनियंत्रित होकर खाई में गिर गई थी। जिसमें नौ श्रद्धालुओं की मौत हो गई थी। फिर कठुआ व डोडा में हुए आतंकी हमलों में एक जवान और दो आतंकवादी मारे गए हैं। लम्बे समय की शांति, अमन-चैन एवं खुशहाली के बाद एक बार फिर कश्मीर में अशांति एवं आतंक के बादल मंडराये हैं। धरती के स्वर्ग की आभा पर लगे ग्रहण के बादल छंटने लगे थे कि एक बार फिर कश्मीर को अशांत करने की कोशिशें तीव्र होते हुए दिख रही है। केन्द्र में गठबंधन वाली मोदी सरकार के सामने यह एक बड़ी चुनौती है।

इन आतंकी घटनाओं को केन्द्र सरकार ने गंभीरता से लिया है। कुछ गिरफ्तारियां भी हुई और हथियार भी बरामद हुए हैं। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए गुरुवार को प्रधानमंत्री ने गृहमंत्री अमित शाह, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल व सुरक्षा एजेंसियों के साथ बैठक की है। इसमें आतंकवाद की नई चुनौती से मुकाबले की रणनीति पर विचार हुआ है। दरअसल, नई सरकार बनने की प्रक्रिया के दौरान हुए इन हमलों में पाक की भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन पाकिस्तान यह बड़ी भूल कर रहा है, क्योंकि मोदी सरकार की दृढ़ता एवं साहस को चुनौती देना इतना आसान नहीं है। फिर भी लगातार हुए आतंकी हमले चिंता तो बढ़ा ही रहे हैं। एलओसी से लगते जम्मू के इलाके में आतंकवादी घटनाओं का बढ़ना गंभीर हैं, चिन्ताजनक है। मारे गये दो आतंकवादियों के पास से पाकिस्तानी हथियार व सामान की बरामदगी बताती है कि पाकिस्तान सत्ता प्रतिष्ठानों की मदद से यह आतंक का खेल फिर शुरू कर रहा है। कहीं न कहीं दिल्ली में बनी गठबंधन सरकार को यह संदेश देने की कोशिश की जा रही है कि पाक पोषित आतंकवादी जम्मू-कश्मीर में शांति एवं अमन को कायम नहीं रहने देंगे। मैंने चुनाव से पूर्व अपनी एक सप्ताह की कश्मीर यात्रा में देखा कि केन्द्र सरकार ने कश्मीर मीं विकास कार्यों को तीव्रता से साकार किया है, न केवल विकास की बहुआयामी योजनाएं वहां चल रही है, बल्कि पिछले 10 सालों में कश्मीर में आतंकमुक्त करने में भी बड़ी सफलता मिली है। बीते साढ़े तीन दशक के दौरान कश्मीर का लोकतंत्र कुछ तथाकथित नेताओं का बंधुआ बनकर गया था, जिन्होंने अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिये जो कश्मीर देश के माथे का ऐसा मुकुट था, जिसे सभी प्यार करते थे, उसे डर, हिंसा, आतंक एवं दहशत का मैदान बना दिया। लेकिन वहां विकास एवं शांति स्थापना का ही परिणाम रहा कि चुनाव में लोगों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेकर लोकतंत्र में अपना विश्वास व्यक्त किया। कहा जा सकता है कि राज्य में लोकतंत्र को मजबूत होते देख बौखलाहट में ये आतंकवादी हमले किये जा रहे हैं। दरअसल, केंद्रशासित प्रदेश का शांति-सुकून की तरफ बढ़ना आतंकवादियों की हताशा को ही बढ़ाता है। हाल के दिनों में रिकॉर्ड संख्या में पर्यटकों का घाटी में आना और लोकसभा चुनाव में बंपर मतदान सीमा पार बैठे आतंकियों के आकाओं को रास नहीं आया है।

जम्मू के इलाके में आतंकी घटनाओं में वृद्धि शासन-प्रशासन के लिये गंभीर चिंता का विषय होना चाहिए। इन हमलों में पाकिस्तान की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। उल्लेखनीय है कि रविवार को हुए हमले की जिम्मेदारी जहां लश्कर-ए-तैयबा के आतंकी गुट टीआरएफ ने ली तो डोडा में हुए हमले की जिम्मेदारी पाक पोषित जैश-ए-मोहम्मद के एक गुट कश्मीर टाइगर्स नामक आतंकी संगठन ने ली है। बहरहाल, भारतीय सेना व सुरक्षा बल आतंकवादियों को भरपूर जवाब दे रहे हैं। लेकिन इस माह के अंत में शुरू होने वाली अमरनाथ यात्रा का निर्बाध आयोजन सुरक्षा बलों के लिये बड़ी चुनौती होगी। जिसको लेकर विशेष चौकसी बरतने की जरूरत है। वहीं दूसरी ओर हाल के आतंकी हमले केंद्र सरकार व राज्य प्रशासन को भी आत्ममंथन का मौका देते हैं।

तीन दशकों से कश्मीर घाटी दोषी और निर्दोषी लोगों के खून की हल्दीघाटी बनी रही है। लेकिन वर्ष 2014 के बाद से, नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से वहां शांति एवं विकास का अपूर्व वातावरण बना है। गठबंधन की केन्द्र सरकार के सामने अब बड़ा लक्ष्य है वहाँ आतंक से अमन-चैन तक लाने के चले आ रहे मिशन को सफल करने का, लोकतंत्र को सशक्त बनाने का, विकास के कार्यक्रमों को गति देने का एवं कश्मीर के लोगों पर आयी मुस्कान को कायम रखने का। बेशक यह कठिन और पेचीदा काम है लेकिन राष्ट्रीय एकता और निर्माण संबंधी कौन-सा कार्य पेचीदा और कठिन नहीं रहा है? इन कठिन एवं पेचीदा कामों को आसान करना ही तो नरेन्द्र मोदी एवं उनकी सरकार का जादू रहा है। अब गठबंधन सरकार में भी वे अपने इस जादू को दिखाये। इन आतंकी हमलों ने अनेक प्रश्न खड़े किये हैं। सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि कश्मीर की जनता क्यों राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़ नहीं पा रही है? क्या कश्मीरी लोगों में नई व्यवस्था में अपने अधिकारों की सुरक्षा व संपत्ति के अधिकारों को लेकर मन में संशय की स्थिति में वृद्धि हुई है? हमें यह तथ्य स्वीकारना चाहिए कि किसी भी राज्य में आतंकवाद का उभरना स्थानीय लोगों के सहयोग के बिना संभव नहीं हो सकता। वहीं यह भी हकीकत है कि कश्मीरी जनमानस का दिल जीतना शक्ति से नहीं बल्कि उनके अनुकूल नीतियां बनाने व लोकतंत्र की बहाली से ही संभव है। अब कश्मीर में आतंक का अंधेरा नहीं, शांति का उजाला होना ही चाहिए। आए दिन की हिंसक घटनाएं आम नागरिकों में भय का माहौल ही बनाती हैं। माना कि रोग पुराना है, लेकिन ठोस प्रयासों के जरिए इसकी जड़ का इलाज होना ही चाहिए। कश्मीरियों में अपनी सुरक्षा के प्रति भरोसा जगाना सरकार की पहली जिम्मेदारी है। घाटी में सक्रिय आतंकियों के खात्मे में सुरक्षा तंत्र ने काफी कामयाबियां हासिल की हैं। अब जरूरत है खुफिया तंत्र को दूसरी तरह की चुनौतियों का सामना करने को तैयार एवं सक्षम किया जाये। घाटी में हालात सुधरने के केंद्र सरकार के दावों की सत्यता इसी से परखी जाएगी कि घाटी में अल्पसंख्यक पंडित और प्रवासी कामगार खुद को कितना सुरक्षित महसूस करते हैं। वास्तव में देखा जाये तो असली लड़ाई कश्मीर में बन्दूक और सन्दूक की है, आतंकवाद और लोकतंत्र की है, अलगाववाद और एकता की है, पाकिस्तान और भारत की है। शांति का अग्रदूत बन रहा भारत एक बार फिर युद्ध के जंग की बजाय शांति प्रयासों एवं कूटनीति से पाकिस्तान को उसकी औकात दिखाये, यह अपेक्षित है। पाकिस्तान एक दिन भी चुप नहीं बैठा, लगातार आतंक की आंधी को पोषित करता रहा, अपनी इन कुचेष्ठाओं के चलते वह कंगाल हो चुका है,

भारत की विदेश नीति सदैव वैश्विक विवादों के शांतिपूर्ण समाधान का पक्षधर

संजीव ठाकुर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश में तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री बनने के बाद पांचवीं बार जी-7 सेवन की महत्त्वपूर्ण बैठक में शामिल हुए हैं। निश्चित तौर पर यह बैठक वैश्विक परिदृश्य के लिए महत्त्वपूर्ण होगी। प्रधानमंत्री मोदी जी ने अभी तक ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक, फ्रांस के राष्ट्रपति इमानुएल मेंक्रो एवं इटली की राष्ट्र प्रमुख मेलोनी तथा यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लादिमीर जेलेन्सकी से अलग-अलग मुद्दों पर द्विपक्षी बैठक संपन्न की है। इसके अलावा अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन से भी मुलाकात संभावित है। जी-7 के सदस्य देशों ने चीन पर आर्थिक प्रतिबंध लगाने की बैठक में पुरजोर कोशिश की गई है। इसके अलावा पुतिन पर यूक्रेन के साथ युद्ध विराम करने के लिए भरसक प्रयास किया गया।

पर भारत और अन्य जी-7 के सदस्य देश ाँआर्टफशियल इंटेलिजेंस (एआई) पर गंभीर मुद्दों पर नए पहलुओं पर विचार कर रहे हैं। भारत हमेशा से शांति सद्भावना और सौहार्द का सर्वकालिक समर्थक रहा है। रूस-यूक्रेन युद्ध में भारत की तरफ से लगातार प्रयास किए जाते रहे हैं कि युद्ध विराम हो जाए और इसके लिए भारत में अथक प्रयास भी हुए हैं। यह अलग बात है कि विस्तारवादी दृष्टिकोण को लेकर पुतिन और जेलेंस्की अजीब सी राजनीतिक और कूटनीतिक परिस्थितियों में एक-दूसरे के सामने खड़े तथा अड़े हैं। अब इस्त्रइल-हमास युद्ध में भारत की नीति स्पष्ट रूप से आतंकवादी गतिविधियों और उग्रवाद के विरोध में रही है। भारत ने आतंकवादी संगठन हमास, हिज्बुल्लाह और फिलिस्तीन इस्लामी जिहाद का खुलकर विरोध किया है। दूसरी तरफ इस्त्रइल की बमबारी से घायल हुए फिलिस्तिनी नागरिकों के लिए सैकड़ो टन खाद्य सामग्री दवाएं और आवश्यक वस्तुएं तत्काल मुहैया कराई है।

भारत के संबंध रूस के साथ-साथ जी-7 के सदस्य देश अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली जापान, कनाडा और नाटो देशों से भी मधुर हैं। इन परिस्थितियों में अरब देश भारत के प्रति युद्ध विराम की संभावनाओं की तलाश में भारतीय पहल का इंतजार कर रहा है। अब भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ की सभा में जॉर्डन के शांति प्रस्ताव में वोटिंग में हिस्सा नहीं लिया, 120 देशों के मतों से प्रस्ताव पारित हो गया, 45 देशों ने वोटिंग में हिस्सा नहीं लिया। चूंकि जॉर्डन हमास को उग्रवादी संगठन नहीं मानता जबकि भारत हमास को कट्टर उग्रवादी मानने की नीति पर चल रहा है। अब भारत के लिए आगे बढ़कर पूरे विश्व का नेतृत्व करने का समय आ गया है। अब तक भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आहूत शांति प्रयासों तथा शांति निर्वहन संक्रियाओं का समर्थन कर रचनात्मक सहयोग हरसंभव किया है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के आह्वान पर कोरिया, वियतनाम, लागोस, मिस्त्र, सीरिया, लाइबेरिया, युगोस्लाविया,नामीबिया, सोमालिया, सूडान सहित अनिगनत देशों में अपनी सेनाएं वहां पर शांति बहाली के लिए अलग-अलग समय में उपलब्ध करवाई थी। भारत द्वारा विश्व शांति की स्थापना की दिशा में संयुक्त राष्ट्र संघ शांति अभियानों में अनथक एवं बहुत बड़ा सहयोग किया है।

संक्षिप्त खबरें

एसपी ने किया थाने का औचक निरीक्षण, लंबित मामले का निपटारा का दिया निर्देश

एकमा । सरण के एसपी डॉ कुमार आशीष ने बकरीद महापर्व को लेकर क्षेत्र भ्रमण के लिए निकले हुए थे।इसी क्रम में जिले के एकमा थाने में पहुंचकर औचक निरीक्षण किया ।निरीक्षण के क्रम में उन्होंने थाना क्षेत्र में हुए कांडों में हुई गिरफ्तारी की स्थिति का समीक्षा किया उन्होंने थाना क्षेत्र में हो रही नियमित गश्ती निर्गत वारंट कुर्की जपती के निष्पादन का भी गहन समीक्षा किया। समीक्षा के क्रम में किसी भी मामले में त्वरित निष्पादन पर चर्चा किया एसपी ने थाना अध्यक्ष को भूमि विवाद को समय पर निपटारा करने व अपराधियों की गिरफ्तारी करने का निर्देश दिया। साथ ही विधि व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस को थाना क्षेत्र में नियंत्रण गस्ती करने का निर्देश दिया । इस दौरान थाना अध्यक्ष सह पुलिस इंस्पेक्टर उदय कुमार पुअनि अर्चना कुमारी उपस्थित थी ।

मनाया गया ईद उल अजहा का त्योहार

लहलादपुरः प्रखंड क्षेत्र में ईद-उल-अजहा का त्योहार,शांतिपूर्ण ढंग से मनाया गया. सुबह नमाज अदा करने के लिए प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत स्थित सभी मस्जिदों में नमाजियों की भीड़ उमड़ गयी. नमाज पढ़ने के बाद सभी ने एक दूसरे के गले मिले तथा हाथ मिलाये. उसके बाद बकरे की कुर्बानियां दी गयी. बसहीं के पूर्व मुखिया असलम खां ने बताया कि ईद-उल-फितर के बाद मुस्लिम समुदाय का दूसरा सबसे मुख्य त्योहार ईद उल अजहा यानि बकरीद ही माना जाता है. यह त्याग एवं बलिदान का प्रतिक है

आपसी विवाद में हुई मारपीट में दो घायल

परसा।स्थानीय थाना क्षेत्र के तितरा नारायणपुर में आपसी विवाद में हुई मारपीट में एक महिला समेत दो बुरी तरह से घायल हो गया. जिसको परिजनों द्वारा प्राथमिक उपचार हेतु परसा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया.जहां चिकित्सकों द्वारा उपचार किया गया.और बेहतर इलाज के लिए छपरा सदर अस्पताल रेफर कर दिया.घायलों में कृष्णा राम की रीमा देवी वहरेन्द्र राम की पुत्र रूबी कुमारी बताई जाती है.

पुलिस अज्ञात युवक का शव किया बरामद

परसा।थाना क्षेत्र के फतेपुर नहर से परसा पुलिस ने एक अज्ञात युवक का शव बरामद किया है. हालांकि युवक की शव का पहचान नहीं हो पा रहा है. पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए छपरा सदर अस्पताल भेज दिया.वही युवक का शव पहचान करने में स्थानीय पुलिस जुटी हुई है

युवती का हुई अपहरण

तरैया थाना क्षेत्र के डेवढ़ी मिडिल स्कूल के समीप दवा खरीदने गई एक युवती लापता हो गई है ।इस संबंध में डेवढ़ी निवासी पीड़िता के पिता ने स्थानीय थाने में एक लिखित शिकायत प्रतिवेदन दिया है ।पीड़िता के पिता का कहना है की 15 जून को उसकी 15 वर्षीया पुत्री डेवढ़ी मिडिल स्कूल के पास दवा दुकान पर दवा खरीदने गई थी लेकिन दवा खरीद कर शाम तक लौट कर घर नही आई,काफी खोजबीन करने के बाद भी उसका पता नही चल रहा है। पीड़ित ने अपने पुत्री के अपहरण की आशंका जताई है ।पुलिस जांच कर रही है।

हत्या के प्रयास व शराब कांड में 6 अभियुक्त गिरफ्तार, अवैध शराब के साथ, 02 मोटरसाईकिल बरामद

बगहा पुलिस द्वारा वाहन जांच के दौरान 78,500 रुपए का लगाया जुमार्ना

- बकरीद पर्व को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने हेतु सभी मस्जिद,ईदगाह पर सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए बगहा पुलिस प्रशासन पूरी तरह से रहें मुस्तैद

प्रात :किरण संवाददाता

बगहा ।बगहा पुलिस जिला में रविवार को विगत 24 घंटा में 06 अभियुक्त की गिरफ्तारी की गई है ।कुल-04 वारंट का निष्पादन किया गया है जिसमें जमानतीय 02 अजमानतीय 02 है। उक्त जानकारी पुलिस अधीक्षक,बगहा सुशांत कुमार सरोज ने प्रेस रिलीज जारी करके दिया ।उन्होंने बताया कि प्रयास,हत्या, शराब के कांड में 06 अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया साथ ही 71.4 लीटर देशी शराब, 9.25 लीटर अंग्रेजी शराब एवं 02 मोटरसाईकिल बरामदगी की गई ।एसपी ने बताया कि बगहा पुलिस जिला में बगहा पुलिस द्वारा अपराध नियंत्रण हेतु वाहन जॉच किया गया ।जॉच के क्रम में यातायात थाना द्वारा-20,000, रामनगर थाना द्वारा-18,000, धनहाँ थाना द्वारा-12,000, चौतरवा थाना द्वारा-11,500, पटखौली थाना द्वारा-11,000, बगहा थाना द्वारा 6,000 इस प्रकार कुल-78, 500 रुपए का जुमार्ना लगाया गया। एसपी द्वारा बताया कि अपराध की रोकथाम एवं अपराधियों पर अंकुश लगाने के लिए सेमरा थाना,ठकराहा थाना,चिउटहाँ थाना,रामनगर थाना द्वारा हत्या के बगहा पुलिस का निरंतर अभियान जारी है,रविवार की रात्रि में विभिन्न थाना क्षेत्रों में बगहा पुलिस द्वारा रोको टोको अभियान किया गया तथा संदिग्ध व्यक्ति और वाहनों का विधिवत जांच किया गया ।सोमवार को एसपी के निर्देश के आलोक में बगहा पुलिस जिला में बकरीद पर्व को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने हेतु सभी मस्जिद,ईदगाह पर पुख्ता सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए बगहा पुलिस प्रशासन पूरी तरह से मुस्तैद रहें कड़ी निगरानी रखे रहें ।अपील किया गया की बगहा पुलिस आप सभी से शांतिपूर्ण त्योहार मनाने की अपील करती है। कृपया सुरक्षा नियमों का पालन करें और सुरक्षित तरीके से त्योहार मनाएं।

बकरीद पर्व शांतिपूर्ण सम्पन्न

प्रात :किरण संवाददाता

बनियापुर। बनियापुर मे ई दे अजहा महापर्व शांति सद्भावपूर्ण महौल मे सम्पन्न हो गया है,जहा अहले सुबह जवान बूढ़े बच्चे साफ सफाफ कपड़ो मे सजधज कर अपने अपने ईदगाह पर पहुंचकर ईदे अजहा की नमाज अदा किया,वही सभी ने बाद नमाज एक दूसरे को गले लगाकर ईद की मुबारकबाद किया,साथ ही घर पहुंच अपने रब के बारगाह मे कुबार्नी पेशकर अल्लाह का शुक्र अदा किया ।पैगम्बरपुर बारह गावा ईदगाह मे नमाज के पूर्व संबोधितबकरीद (ईदेअजहा) महापर्व शांतिपूर्ण सम्पन्न बनियापुर। बनियापुर मे ई दे अजहा महापर्व शांति सद्भावपूर्ण महौल मे सम्पन्न हो गया है,जहा अहले सुबह जवान बूढ़े बच्चे साफ सफाफ कपड़ो मे सजधज कर अपने अपने ईदगाह पर पहुंचकर ईदे अजहा की नमाज अदा किया,वही सभी ने बाद नमाज एक दूसरे को गले लगाकर ईद की मुबारकबाद किया,साथ ही घर पहुंच अपने रब के बारगाह मे कुबार्नी पेशकर अल्लाह का शुक्र अदा किया ।पैगम्बरपुर बारह गावा ईदगाह मे नमाज के पूर्व संबोधित हाजी मौलाना सोहैल पैगम्बरपुरी ने मुसलमानो से समाज मे गरीब मजबूर की मदद और मोहब्बत का पैगाम दिया,वही बनियापुर डूंगूरपट्टी सतुआ धनगरहा कन्हौली पिठौरी पुछरी कटसा बतरौली मानोपाली सहित सभी गांवो मे ईदूजोहा महापर्व धूमधाम के साथ मनाई गयी गया तथा सेविया मिठाईया खिलाकर एक दूसरे को मुबारक्बाद दिया,वही सभी गांवो के ईदगाहो तक पुलिस प्रशासन मजिस्ट्रेट अपने ड्यूटी पर तैनात दिखे।

शक की बुनियाद ने ली विवाहिता की जान

प्रात :किरण संवाददाता

पानापुर(सारण) थाना क्षेत्र के वृत भगवानपुर गांव में जहर से एक विवाहिता की रहस्यमय मौत का का मामला प्रकाश में आया है . हालांकि महिला ने खुद जहर खाकर मौत को गले लगाया है अथवा उसके पति ने जहर देकर उसकी हत्या की है यह अबूझ पहेली बना हुआ है .मृत महिला अखिलेश महतो की 33 वर्षीया पत्नी रीना देवी बतायी जाती है .मृतका की पन्द्रह वर्ष पूर्व शादी हुई थी एवं उसके तीन बच्चे हैं . ग्रामीणों के अनुसार मृतका शनिवार को फोन पर किसी से बात कर रही थी जो उसके पति को नागवार गुजरा .पति ने उससे फोन नंबर दिखाने को कहा जिसे मृतका ने नही दिखाई .इसी बात से नाराज पति ने उसे दो चार थप्पड़ जड़ दिए . इसी से नाराज रीना ने जहर खाकर जान दे दी .बताया जाता है कि रविवार की सुबह उजाला हो जाने के कारण ससुराल वाले उसके शव को ठिकाने नही लगा सके एवं शव को झाड़ी में छिपाकर रात होने का इंतजार कर रहे थे. इस बात की जानकारी उसके मायकेवालों को लगी तो वे रविवार की सुबह ही उसके ससुराल पहुँच गये जिससे वे शव को झाड़ी में छिपाकर फरार हो गये. मृतका के मायके अमनौर थाना क्षेत्र के डाबर छपरा परशुरामपुर के अधिकांश सदस्य बाहर रहते है जिसकारण मृतका की मां सहित अन्य महिलाएं ही पहुँचकर खोजबीन में जुटी थी .किसी अनिष्ट की आशंका से सहमे मायकेवालों ने स्थानीय पुलिस को सूचना दी जिसके बाद पुलिस ने रविवार की रात मृतका का शव पृथ्वीपुर ढाला के समीप झाड़ी से बरामद किया एवं पोस्टमार्टम के लिए छपरा भेजवाया .समाचार प्रेषण तक इस मामले में अबतक स्थानीय थाने में कोई आवेदन नही दिया गया है .

हिंदी के प्रकांड विद्वान व प्रसिद्ध समाजसेवी सच्चिदानंद पांडेय के श्रद्धांजलि सभा में पहुंचे कई गणमान्य

प्रात :किरण संवाददाता

जलालपुर प्रखंड के विष्णुपुरा ग्राम निवासी, हिंदी के प्रकांड विद्वान व प्रसिद्ध समाजसेवी. स्वर्गीय सच्चिदानंद पांडेय के श्राद्धकर्म पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा मे रविवार की देर संध्या क ई गणमान्य शामिल हुऐसभी ने उनके तेल चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन करते हुए अपनी श्रद्धांजलि दी उन्हें याद करते हुए बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व वीसी जनकदेव पांडेय ने बताया कि स्वर्गीय सच्चिदानंद पांडेय पश्चिम बंगाल में खड्गपुर में रेलवे के उच्च विद्यालय में हिंदी के अध्यापक थेउनकी पत्नी स्व कांति पांडेय भी अध्यापिका थीजबकि उनके पुत्र मणीन्द्र पांडेय जलालपुर के खोरोडीह मिडिल स्कूल मे प्रधानाध्यापक हैं उन्होंने बताया कि अपने जीवन काल मे स्व पांडेय ने समाज को लेकर चलने तथा संस्कार व नैतिक शिक्षा तथा सामाजिक असमानता को दूर करने पर बल दियो उनकी स्मृति में शिवप्रसाद हरदेव चंद्रदेव सेवा न्यास की प्रबंध समिति ने ह्लपूज्य सच्चिदा कांति स्मृति छात्रवृत्ति दिए जाने की घोषणा की श्रद्धांजलि सभा में न्यास के अध्यक्ष ललन पांडेय, नन्दकिशोर पांडेय, शिक्षक नेता दिनेश सिंह ,उमेश कुमार तिवारी मनोज मिश्रा. अखिलेश्वर पांडेय. नागेंद्र ओझा, रामबाबू यादव कन्हैया महतो, राजेश कुमार ,वरुण पांडेय, सोनू तिवारी. गोलू सिंह,अरविंद दुबे,अजीत सिंह , बबलू सिंह, धर्मनाथ सिंह रामकुमार सिंह,रविकांत प्रसाद, कुन्नू दुबे, शैलेंद्र कुमार सिंह,उत्तम साह सुभाष कुमार राजुरंजन सहित दर्जनों अन्य भी थे जलालपुरे प्रखंड के विष्णुपुरा ग्राम निवासी, हिंदी के प्रकांड विद्वान व प्रसिद्ध समाजसेवी. स्वर्गीय सच्चिदानंद पांडेय के श्राद्धकर्म पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा मे रविवार की देर संध्या क ई गणमान्य शामिल हुऐसभी ने उनके तेल चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन करते हुए अपनी श्रद्धांजलि दी उन्हें याद करते हुए बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व वीसी जनकदेव पांडेय ने बताया कि स्वर्गीय सच्चिदानंद पांडेय पश्चिम बंगाल में खड्गपुर में रेलवे के उच्च विद्यालय में हिंदी के अध्यापक थेउनकी पत्नी स्व कांति पांडेय भी अध्यापिका थीजबकि उनके पुत्र मणीन्द्र पांडेय जलालपुर के खोरोडीह मिडिल स्कूल मे प्रधानाध्यापक हैं उन्होंने बताया कि अपने जीवन काल मे स्व पांडेय ने समाज को लेकर चलने तथा संस्कार व नैतिक शिक्षा तथा सामाजिक असमानता को दूर करने पर बल दियो उनकी स्मृति में शिवप्रसाद हरदेव चंद्रदेव सेवा न्यास की प्रबंध समिति ने ह्लपूज्य सच्चिदा कांति स्मृति छात्रवृत्ति दिए जाने की घोषणा की श्रद्धांजलि सभा में न्यास के अध्यक्ष ललन पांडेय, नन्दकिशोर पांडेय, शिक्षक नेता दिनेश सिंह ,उमेश कुमार तिवारी मनोज मिश्रा. अखिलेश्वर पांडेय. नागेंद्र ओझा, रामबाबू यादव कन्हैया महतो, राजेश कुमार ,वरुण पांडेय, सोनू तिवारी. गोलू सिंह,अरविंद दुबे,अजीत सिंह , बबलू सिंह, धर्मनाथ सिंह रामकुमार सिंह,रविकांत प्रसाद, कुन्नू दुबे, शैलेंद्र कुमार सिंह,उत्तम साह सुभाष कुमार राजुरंजन सहित दर्जनों अन्य भी थे।

शांतिपूर्ण ढंग से बकरीद सम्पन्न

मस्जिद और मेला स्थलों के पास पुलिस रही चौकस

प्रात :किरण संवाददाता

मढौरा में बकरीद शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो गया । प्रखंड के कई गांव में सोमवार को हर्ष उल्लास पूर्वक बकरीद का त्यौहार मनाया गया। इससे पहले मढ़ौरा के भावलपुर, नौतन, आवारी, ओल्हानपुर, मुबारकपुर, माधोपुर, मिजार्पुर, तेजपुरवा, सहित अन्य कई पंचायतों में स्थित मस्जिदों में मुसलमान समुदाय के लोगों ने नमाज अदा की व एक दूसरे से गले मिलकर दुआएं की मस्जिदों के आसपास लगने वाले भीड़ व मेला को देखते हुए मढ़ौरा पुलिस पूरी तरह मुस्तैद थी। इस दौरान मढौरा के किसी भी क्षेत्र से किसी अप्रिय घटना की सूचना नहीं है। एसडीओ डॉक्टर प्रेरणा सिंह डीएसपी नरेश पासवान व थाना अध्यक्ष मुकेश कुमार ने बकरीद में शांति व्यवस्था बनाए रखने व मस्जिदों के समीप सुरक्षा के ख्याल से निरीक्षण करते रहे।

इस मौके पर मुखिया शैलेश राय ,मुखिया परमात्मा राय, मुखिया मिथिलेश सिंह, महफूज आलम, हरीश पासवान, सुनील कुमार,नागेंद्र राय, मासूम अंसारी, पप्पू आलम,महताब आलम, व अन्य जनप्रतिनिधियों ने मुसलमान भाइयों को बकरीद पर्व पर बधाई दी। उधर बकरीद के मौके पर तेजपुरवा ईदगाह में काफी संख्या में मुस्लिम भाइयों ने बकरीद का नमाज अदा किया। नमाज अदा करने के बाद तेजपुरवा जामा मस्जिद के मौलाना यार मोहम्मद सलाफी साहब ने समाज के सभी वर्ग के लोगों से आपसी भाई चारे के साथ रहने का पैगाम दिया।

शिक्षा का मूल उद्देश्य है सत्य का संधान व व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं समष्टि के बीच के अंतर्निहित संबंध को समझना : कुलपति

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा । शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के तत्वावधान में चार दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला सह अभ्यास वर्ग 14 से 17 जून के बीच संपन्न हुआ। इस कार्यशाला में देशभर के कुलपति, शिक्षाविद, प्राध्यापक, शिक्षा क्षेत्र में कार्य करनेवाले विशिष्ट व्यक्ति तथा न्यास के प्रांत संयोजक/सह संयोजक समेत लगभग 400 प्रतिभागियों ने भाग लिया। झारखंड की राजधानी रांची स्थित सरला बिरला विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित इस अभ्यास वर्ग में जयप्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई को भी विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। जिसमें उपस्थित होकर उन्होंने सारगर्भित व्याख्यान दिया। इस अवसर पर एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया गया जिसमें कुलपति प्रो. बाजपेई का शुभकामना संदेश एवं एक आलेख प्रकाशित हुआ। है। आलेख में प्राचीन भरतीय शिक्षण प्रणाली का उदाहरण देते हुए नई शिक्षा नीति के विभिन्न पहलुओं को उद्धत किया गया है। कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई ने इस अवसर पर अपने व्याख्यान में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की वर्तमान संदर्भ में मीमांसा एवं पाठ्यक्रमों के एकीकरण के उपायों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा एवं उपनिषदों को मार्गदर्शन सिद्धांत के रूप में रखा गया है। इसमें ज्ञान, प्रज्ञा एवं सत्य को श्रेष्ठतम जीवन उद्देश्यों में शामिल किया गया है। भारतीय शिक्षा प्रणाली को चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भाष्कराचार्य प्रथम व द्वितीय, ब्रह्मगुप्त, अष्टपद गौतम, कणाद, पाणिनि, शंकरदेव, मैतेई, चाणक्य, चक्रपाणि, माधव, पतंजलि, नागार्जुन, पिंगल, कणाद, तिरुवल्लुवर जैसे अनेक महापुरुषों ने समय-समय पर अपने योगदानों से अभिसिंचित किया।

समाज व शब्दों के निर्माण पर प्रकाश डालते हुए कुलपति प्रो. बाजपेई ने कहा कि ज्ञान के समग्र प्रवाह एवं विस्तार से ही इनका निर्माण हुआ है। यह बात प्राचीन ज्ञान परंपराओं से सृजित सभ्यताओं, संस्कृतियों एवं समाजों पर उतनी ही सटीकता से लागू होती है जितनी कि आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक आधारित समाज और सभ्यताओं पर। उन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों की व्याख्या करते हुए कहा कि शिक्षा का मूल उद्देश्य सत्य के संधान के साथ ही व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं समष्टि के बीच के अंतर्निहित संबंध को समझना है। इसके लिए विविधताओं का संरक्षण एवं संवर्धन करते हुए उन्हें पुष्पित पल्लवित होने देना चाहिए।

अमरनाथ यात्रा सामग्री का किया वितरण

प्रात :किरण संवाददाता

जय भोला भंडारी सेवा दल (रजि 33) छपरा, बिहार के द्वारा अमरनाथ यात्रा पर जाने वाले यात्रियों को यात्रा सामग्री का वितरण किया गया क यात्रा में काम आने वाली महत्वपूर्ण सामग्री जैसे- रजिस्ट्रेशन कार्ड, आई कार्ड, कैरीबैग, टी शर्ट, गमछा, टोपी (हेट), रेन कोर्ट (बरसती), ग्लूकोज, चॉकलेट, बिस्कुट, नमकीन इत्यादि क इस सेवा दल के द्वारा प्रत्येक वर्ष श्री बाबा अमरनाथ जी की यात्रा करायी जाती हैं कइस वर्ष पहला जत्था दिनांक 28 जून को, दूसरा जत्था 30 जून को, तीसरा जत्था 05 जुलाई एवं चौथा जत्था 07 जुलाई को छपरा से जाएगा कआपको बताते चलें कि सेवा दल के द्वारा श्री अमरनाथ यात्रा मार्ग उधमपुर, जम्मू-कश्मीर में भंडारा भी लगाया जाता है कयहां अमरनाथ यात्रियों के लिए भोजन, पानी, चाय-नास्ता के साथ ही यात्रियों के ठहरने व शौचालय की भी व्यवस्था निःशुल्क की जाती हैं तथा यात्रियों के स्वास्थ्य की दृष्टि से प्राथमिक उपचार की व्यवस्था भी किया जाता है कसेवा दल के द्वारा इस वर्ष चौथे विशाल भंडारे का आयोजन किया जा रहा है कयह बिहार का पहला भंडारा है जो अमरनाथ यात्रा मार्ग पर लगता है कभंडारे की सामग्री को लेकर ट्रक दिनांक 19 जून बुधवार को छपरा से नगर भ्रमण करते हुए उधमपुर जम्मू-कश्मीर के लिए रवाना होगी ।

पुलिस द्वारा 15 दिनों के विशेष अभियान में कुल 572 अभियुक्त गिरफ्तार, 12 हजार लीटर शराब जब्त

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। पुलिस अधीक्षक, सारण द्वारा दिए गए निर्देश के आलोक में असामाजिक तत्वों/अपराधकर्मियों की गिरफतारी एवं शराब के सेवन / बिक्री/ भंडारण/ निर्माण/परिवहन आदि पर पूर्णरूप से पाबंदी लगाने तथा देशी शराब भट्ठी ध्वस्त करने हेतु कार्रवाई को दृष्टिगत रखते हुए माह-जून के प्रथम पक्ष में विशेष अभियान चलाकर कुल 572 (पाँच सौ बहत्तर) अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया, जिसमें हत्या के कांड में-19. दहेज हत्या के कांड में-05. लूट में-04, डकैती में 05. आर्म्स अधि० में-06, हत्या के प्रयास में-05. अपहरण में 10. बलात्कार में-01. पॉक्सो में-02. अनु जाति/जनजाति में-13. पुलिस पर डमला के कांड में 08. आई०टी० अधि० में-03. खनन के कांड में 29, चोरी के कांड में 15 अन्य विशेष कांड में 22. मद्यनिषेध के कांड में 328, वारंट में 53 तथा अन्य कांडों के 44 अभियुक्त शामिल हैं। पूरे माह इस विशेष अभियान में कुल 12,502 लीटर शराब जिसमें देशी शराब 4853 ली०, विदेशी शराब-7649 ली०, आग्नेयास्त्र-06. जिंदा कारतूस 22. मोटरसाईकिल 24, पिकअप-02. कार-06, ट्रक 48. ट्रैक्टर-04. नगद राशि-263200 रूपया मोबाईल-21, साईकिल-01. अपहृता-13, गोली का पिलेट-02 धारादार हथियार-01. बैट्री-01. प्रेशर जक-01 फाइटर-01. डिटॉल-92 बॉक्स डिस्प्रीन-28 पीस, छश-52 सिरप-75 पीस नाइसिल पाउडर-181 बॉक्स, फेविकॉल-148 बॉक्स, फेक फेविकॉल-1540 पिस, इन हेलर 22 बॉक्स सोने जैसा आभूषण (लॉकेट-01. झुमका-03. नथुनी-02 अंगूठी-03. सिकडी-01), चाँदी जैसा आभूषण (पायल 04 जोड़ा, लॉकेट-01. अंगूठी-01) जप्त / बरामद किया गया। जिलें में अपराध नियंत्रण एवं यातायात सुरक्षा के दृष्टिकोण से 79,75,500 रू० जुमार्ना राशि वसूली गई। अवैध रूप से चल रहे देशी शराब की 81 भट्टीयो ध्वस्त कर लगभग 47000 लीटर अर्धनिर्मित शराब/पाश विनष्ट किया गया।

पाकिजगी के साथ ईद-उल-अजहा की नमाज अदा की गई

जिला प्रशासन भी मुस्तैद दिखे, नमाज बाद लोगों ने गले मिलकर एक दूसरे को दी मुबारकबाद

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा । इदुल - अजहा की नमाज अदबो - एतराम के साथ शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न हो गया । बकरईद की नमाज को लेकर जिला प्रशासन भी पूरी तरह मुस्तैद दिखी । शहर के साहेबगंज जामा मस्जिद, खनुवा मस्जिद, मौला मस्जिद,छोटा तेलपा मस्जिद, तकिया मस्जिद एवं साढ़ा ढाला ईदगाह सहित शहर के सभी वार्डों के मस्जिदों में ईद- उल-अजहा की नमाज अदा की गई । बता दे कि बकरईद के त्योहार पर बकरे की कुबार्नी देने की परंपरागत सदियों से चली आ रही है, जिसका इस्लाम धर्म में जिक्र भी किया गया है । मुस्लिम समुदाय नमाज के बाद बकरे की कुबार्नी करते हैं । इस त्यौहार को लेकर मुस्लिम समुदाय अपने घरों में बकरे को पालते हैं, या शहर के मंडीओ और देहातों से खरीद कर लाते हैं, और ईद -उल-अजहा नमाज अदा करने के बाद पाकिजगी के साथ बकरे की कुबार्नी देते हैं । ईद -उल -अजहा नमाज की खासियत है कि सभी मस्जिदों व ईदगाहों में लगभग 7:00 बजे तक अदा कर ली जाती है । सोमवार को संपन्न ईद- उल- अजहा नमाज को लेकर सुबह से ही मस्जिदों में लोगों का आना शुरू हो गया, और पूर्व से निर्धारित समय अनुसार मस्जिदों में पेशइमाम ने मुस्लिम समुदाय को ईद -उल -अजहा की नमाज पढ़ाया । इस्लाम धर्म के परंपरा के अनुसार नमाज अदा करने के बाद मुस्लिम समुदाय एक दूसरे गले मिलकर बकरईद की मुबारकबाद दी । जिसमें बच्चों से लेकर बुजुर्ग भी एक दूसरे को मुबारकबाद दे देते दिखे । इस्लाम धर्म के अनुसार गले मिलकर मुबारकबाद देने की परंपरा सदियों से चली आ रही है । वहीं बकरे की कुबार्नी के बाद बाद मुस्लिम समुदाय कुबार्नी के गोश्त को अपने पड़ोसियों, सगे-संबंधियों में बाटते हैं और अपने पड़ोसी और दोस्तों को खिलाने की परंपरा की निभाते हैं । विदित हो कि बकरईद का त्यौहार तीन दिनों तक मनाया जाता है, आर्थिक रुप से संपन्न मुस्लिम समुदाय तीन दिनों तक बकरे की कुबार्नी करते हैं । शांतिपूर्ण माहौल में बकरईद का त्योहार संपन्न कराने को लेकर जिला प्रशासन द्वारा मुकम्मल व्यवस्था की गई थी । शहर के प्रमुख चौक चौराहा के अलावा विशेष रूप से खनुआ मस्जिद, साहेबगंज स्थित जामा मस्जिद, मौला मस्जिद, औलिया मस्जिद के आसपास बड़ी संख्या में पुलिस वालों को तैनात किया गया था । इसके अलावा शहर के अन्य मस्जिदों में भी पुलिस बल को तैनात किया गया था । जिला भर में बकरईद का त्यौहार शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न हो गया । जिला प्रशासन भी इस त्यौहार को लेकर काफी गंभीर दिखे ।

पूरी अकीदत के साथ पढ़ी गई बकरीद की नमाज, नमाजियों की उमड़ी भीड़

विश्व शांति जन कल्याण औरफ भारत की अखंडता की मांगी गई दुआ

प्रात :किरण संवाददाता

बेतिया ।मझौलिया प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न इदगाहो में कॉमी एकता भाईचारा सादगी एवं शांतिपूर्ण वातावरण में त्याग और बलिदान का पर्व ईद उल अजहा की नमाज सोमवार को पूरी अकीदत के साथ पढ़ी गई। सुरक्षा व्यवस्था को लेकर अंचल अधिकारी राजीव रंजन थानाध्यक्ष अखिलेश कुमार मिश्रा एन एच 727 समेत ग्रामीण क्षेत्रों में गास्ट लगाते रहे वहीं विभिन्न इदगाहो में थाना के पुलिस पदाधिकारी पुरुष और महिला पुलिस बल के साथ अलर्ट रहे ईदगाह के बाहर मेला का दृश्य रहा नमाज अदा करने के बाद सभी एक दूसरे के गले मिलकर भाईचारा का पैगाम दिया इधर मझौलिया में मुफ्ती सरफराज खान और मौलाना नुरालम समेत मौलवियों द्वारा बकरीद की नमाज पढ़ाई गई। डॉक्टर साबिर अली ने बताया कि ईद उल अजहा का पर्व त्याग बलिदान और कुबार्नी का पर्व है। हम लोगों को अपने अंदर की बुराइयों लोभ लालच ईर्ष्या द्वेश क्रोध हिंसक प्रवृत्ति का त्याग करते हुए सच्ची मानवता एकता भाईचारा प्रेम सांप्रदायिक सौहार्द अहिंसा और सेवा भावना को अपनाना चाहिए। ईद उल अजहा की नमाज में सैकड़ो नमाजियों ने भाग लिया।

हर्षोउल्लास के साथ ईद दुल अजहा की किया नमाज

प्रात :किरण संवाददाता

परसा ।प्रखंड व नगर पंचायत परसा बाजार के विभिन्न मुस्लिम समुदाय महल्लो में सोमवार को ईद-दुल-अजहा की नमाज को लेकर प्रखंड विकास पदाधिकारी डा दीपक कुमार सिंह परसा नगर कार्यपालक पादाधिकारी मो ओसामा इब्न मंसूर थानाध्यक्ष सुनील कुमार समेत प्रखण्ड व नगर के अन्य कर्मचारी व पादधिकारीगण ने सोमवार की सुबह से ही पुलिस बल के साथ पूरे दिन गश्ती लगाते रहें ।बीडीओ डा दीपक कुमार सिंह ने बताया कि ईद-दुल-अजहा का त्यौहार पर किसी को भी बिहार सरकार द्वारा जारी गाइडलाइन का उल्लंघन नहीं करने दिया जाएगा। तथा गाइडलाइन का उल्लंघन करने वाले लोगो पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी. सभी लोगों से अपील किया कि किसी भी अफवाह में नही परे ।तथा सभी सरकारी नियमों का शत प्रतिशत पालन करें.थानाध्यक्ष सुनील कुमार ने कहा कि ईद-दुल-अजहा का त्यौहार शांतिपूर्ण व सौहार्दपूर्ण माहौल में सम्पन्न कराने को लेकर थाना क्षेत्र के विभिन्न गांवों में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किए गए था. मिली प्राप्त जनकारी के अनुसार प्रखंड के चेतन परसा जमा मस्जिद हरपुर परसा सैदपुर पोखरपुर सराया साहो माड़र परसौना बलहा अन्याया विशुनपुर चादपुरा लालपुर पचरुखी अंजनी फिरोजपुर समेत सभी मुस्लिम समुदाय महल्लो के लोगों ने अपने अपने मस्जिदों व ईदगाहों में सोमवार की सुबह ईदु-दुल-अजहा की नमाज अदा किया गया.मौलाना मो अख्तर रजा मुख्य पार्षद प्रतिनिधि सह वार्ड पार्षद करमुल्लाह अख्तर अली मोहम्मद युसुफ मो सलीम अंसारी मो फिरोज ने कहा कि किसी भी तरह के अफवाह नही पड़ना है ।आपसी भाई चारे के साथ एक दूसरे मिलकर शांतिपूर्ण तरीके से ईद उल अजहा का त्यौहार सोमवार को संपन्न हो गया.हाफिज एजाज अहमद मो शहीम मौलाना शाहिद रजा मोहम्मद हुसैन मो अली हशन मो शोहैल जियाउलहक नदीम सिद्दीकी मो अली शेर शाकिब हुसैन सलामत हुसैन मो मोख्तार आलम मो अजमत समेत हजारो लोगों ने अपने अपने मस्जिदों व ईदगाहों में ईद उल अजहा का नमाज आदा किया।

संक्षिप्त खबरें

बढती गर्मी को देखते हुए सभी स्कुल19 तक बंद : जिलाधिकारी

गया। गया जिला के स्कूल भी 19 जून तक बंद रहेंगेडीएम डॉ. त्यागराजन एसएम ने 18 जून से 19 जून तक जिले के सभी सरकारी एव निजी विद्यालयों के वर्ग एक से आठ कक्षा तक पठन पाठन कार्य को बंद कराने का आदेश दिया है। इसके साथ ही सभी कोचिंग संस्थानों को भी बन्द रखने का आदेश दिया है। सभी आंगनबाड़ी सेन्टर भी इस अवधि तक बन्द रहेंगे। जिला पदाधिकारी गया ने जिलेवासियों से अपील किया है कि आपदा विभाग द्वारा हीट वेव को लेकर जारी किए गए एडवाइजरी को पूरी तरह पालन करें।

पश्चिम बंगाल के हादसे पर रेल मंत्री इस्तीफा दे : जिलाअध्यक्ष

गया।बुलेट ट्रेन का दावा करने वाले रेलवे को संभाल नहीं पा रहे।पश्चिम बंगाल के न्यू जलपाईगुड़ी में भीषण रेल हादसा हुआ है।कंचनजंगा एक्सप्रेस मालगाड़ी से टकरा गई है जिसमें कई लोगों के जन जाने और कई लोगों के घायल होने की खबर है।रेलवे अभी तक कोई आंकड़ा जारी नहीं कर रहा है जिससे सफर कर रह लोगों के परिवार वाले परेशान हैं।बुलेट ट्रेन चलने का दावा करने वाली सरकार पुरानी रेल व्यवस्था को भी नहीं सम्भल पा रही है।सरकार ने रेलवे को सिर्फ कमाई का जरिए बनकर रखा है पर उसके रखरखाव का ख्याल नहीं रह रही है।रेल मंत्री को तुरंत हीं घटना की जिम्मेदारी लेते हुए इस्तीफा देना चाहिए यह कहना गया जिलाअध्यक्ष कोंग्रेस गगन मिश्रा ने कहां। इसके साथ हीं आसपास के लोगों से आग्रह है कि वो लोगों घायलों की सहायता करें।जिला कांग्रेस कमिटी सभी के सुरक्षित रहने की कामना करती है।

बिहार बुनकर अध्यक्ष ने प्रभारी मंत्री से पटवाटोली आने का दिया निमंत्रण

गया।प्रभारी मंत्री गया जिला , सह मंत्री उद्योग विभाग एवं पर्यटन विभाग , बिहार सरकार को गोपाल प्रसाद पटवा अध्यक्ष बिहार प्रदेश बुनकर कल्याण संघ ने मानपुर पटवाटोली निर्मित अंगवस्त्र से सम्मानित करते हुए, मानपुर पटवाटोली वस्त्र उत्पादन उद्योग नगरी में अभिनंदन कार्यक्रम में पधारने के लिए आमंत्रण दिया गया है। जिसे उन्होंने स्वीकार करते हुए बहुत जल्द मानपुर पटवा टोली पधारने की बात कही भोजन भात के साथ कार्यक्रम बनाने प्रस्ताव रखा है।

अरवल सदर अस्पताल में आए पांच मरीज की मौत,लु लगने कि अशांका

अरवले हिट वेव के भयंकर प्रकोप से जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया है। जिले का तापमान 44के भी पार पहुंच गया है। भीषण गर्मी के इस प्रकोप से लोग तेजी बीमार पड़ने लगे हैं। जहाँ सदर अस्पताल में आये पांच मरीजों की मौत हो गई है। लू लगने कि अशांका जताई जा रहीं हैं हालांकि मरीज पहले से कई तरह की बीमारियों से पीड़ित थे। गर्मी में तकलीफ बढ़ने पर बीमारी ने मौत की नींद सुला दी। जिसमें करवासिन निवासी बाबुराम ,जयपुर निवासी पलक, बालूविगहा निवासी कृष्णा, भोजपुर के धेवरी निवासी लालमून देवी तथा महेंदिया के धनमनिया देवी शामिल है।

64 लीटर शराब बरामद, तस्कर भागने में सफल

आलमनगर (मधेपुरा)। आलमनगर पुलिस द्वारा लगभग 64 लीटर शराब बरामद किया गया हालांकि शराब तस्कर भागने में सफल रहा। दो शराब तस्कर पर प्राथमिकी दर्ज किया गया है। थाना अध्यक्ष अखिलेश कुमार ने बताया कि गुप्त सुचना मिली कि मधेली दियारा में दो भाई शराब बेचने का काम किया जा रहा है सुचना मिलते ही पुलिस पदाधिकारी आशुतोष कुमार त्रिपाठी पुलिस बल के साथ जब वहां पहुंचा तो पुलिस गाड़ी को देखते ही एक व्यक्ति पीछे वाले रास्ते से भाग गया पुलिस बल के सहयोग से उसके घर की तलाशी लिया तो आंगन में रखे बोरे में 302 बोतल 375 एम एल जो लगभग 64 लीटर शराब बरामद किया इस बाबत विनय भगत, मनीष भगत पिता स्व. परमानन्द भगत मधेली दियारा निवासी पर प्राथमिकी दर्ज किया गया है।

मिरहट्टी गांव में सौतेले भाई को बेघर करने का किया जा रहा है प्रयास

भागलपुर जिले के सुलतानगंज थाना क्षेत्र के मिरहट्टी पंचायत में सौतेले भाई को हिस्सा नहीं देने का मामला सामने आया है।बताते चलें कि नरेश यादव ने दो शादी की थी पहली पत्नी का नाम भगवती देवी से उसे चार पुत्र तथा एक पुत्री हुई थी वहीं पहली पत्नी के मौत के बाद दूसरी शादी किया दूसरी पत्नी का नाम बाबादाय से सिर्फ एक पुत्र सुधामासी हुआ था।नरेश यादव के मरने के बाद उसके पहले पत्नी का चारों पुत्र दिलीप यादव, कन्हैया यादव, बमबम यादव, सुरज यादव अपने पैतृक जमीन आपस में बांट कर मोटेसन के लिए ऑनलाइन आवेदन भी कर दिया लेकिन उसमें अपने सौतेले भाई का कहीं भी जिक्र नहीं किया है।इस की जानकारी जब सुधामासी को लगा तो उन्होंने मोटेसन पर आवजेक्सन लगा दिया।

मानपुर बाजार बागेश्वरी मंदिर के गेट पर नि:शुल्क शीतल जल सेवा पनशाला का शुभारंभ

प्रात : किरण संवाददाता

गया।भीषण गर्मी से प्यास से भटकने वाले राहगीरों की परेशानी को देखते हुए बिहार प्रदेश बुनकर कल्याण संघ के तत्वाधान में मानपुर बाजार बागेश्वरी मंदिर के गेट पर नि:शुल्क शीतल जल सेवा पनशाला का शुभारंभ निर्जला एकादशी के अवसर पर किया गया है। नि:शुल्क जलसेवा पनशाला का फीता काटकर उद्घाटन वजीरगंज कैंप के पुलिस उपाधीक्षक डीएसपी सुनील कुमार पाण्डेय , गोपाल प्रसाद पटवा अध्यक्ष बुनकर संघ , दुखन राम समाजसेवी , अनील जी अजंता स्टुडियो द्वारा संयुक्त रूप से किया गया है।

सुनील कुमार पांडेय अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी का स्वागत गोपाल पटवा अध्यक्ष बुनकर संघ ने पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र से सम्मानित कर किया गया है। पनशाला जलसेवा को सफल बनाने में प्रमुख सहयोगी दुर्गेश कुमार समाजसेवी , दीपक स्वर्णकार , श्याम कुमार उर्फ कारू लाल क्रोकरी , भोजपुरिया बाबा , छोटू चौधरी सहित बड़ी संख्या में मानपुर बाजार के दुकानदार भाई शामिल रहे हैं। जल सेवा पाठशाला खुलने से शीतल जल के लिए भटकने वाले राहगीरों सहित रिक्शा चालक , ठेला चालक , ऑटो चालक , मजदूर कामगार , स्कूली बच्चे , ग्रामीण क्षेत्र से आने वाली महिलाएं एवं बुजुर्गों को पेयजल के लिए इधर-उधर भटकना नहीं पड़ेगा। सुनील कुमार पांडे डीएसपी ने मानवता से जुड़े सामाजिक कार्य के लिए बुनकर संघ को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामना दिया और कहा इस तरह का सामाजिक कार्य में मेरा सहयोग हमेशा रहेगा। गोपाल पटवा बुनकर संघ अध्यक्ष ने कहा भीषण गर्मी और तपिश को देखते हुए इस वर्ष भी जलसेवा पनशाला का शुभारंभ बुनकर संघ द्वारा हुआ है पूर्व के वर्षों में भी पनशाला खोला गया था अगर जरूरत पड़ी तो अन्य जरूरी जगहों पर पनशाला खोली जाएगी। नगर आयुक्त मैडम से भी नगर निगम क्षेत्र के अंतर्गत मानपुर में कलाली मोड , बाबा खिरू रविदास धर्मशाला सुर्य पोखर मोड़ एवं मोफसिल मोड तीन स्थानों पर गया शहर की भांति मानपुर शहरी क्षेत्र में पनशाला खोलने का अनुरोध पटवा ने किया है। सिविल सोसाइटी गया नगर निगम एवं जिला प्रशासन के सहयोग के लिए सदैव तत्पर और प्रतिबंध है।निर्जला एकादशी के अवसर पर पेयजल सेवा के साथ-साथ शरबत का वितरण किया गया है। बड़ी संख्या में लोग शरबत पी रहे थे।

भाजपा श्रेत्रीय संगठन महामंत्री का अभिनंदन किया गया

प्रात : किरण संवाददाता

गया।भाजपा संगठन के क्षेत्रीय प्रभारी बिहार झारखंड नागेंद्र नाथ त्रिपाठी से भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा सह प्रभारी डॉ मनीष पंकज मिश्रा ने मुलाकात कर विष्णु चरण चिन्ह, अंगवस्त्र एवं फूलों का गुलदस्ता देकर सम्मानित किया गया है।इस अवसर पर नरेंद्र नाथ त्रिपाठी ने कहा 2025 के लिए तैयार रहिए, भाजपा पूरे बिहार में एणडीए पूर्ण बहुमत की सरकार बनाएंगे और गया लोकसभा की जीत पर बधाई और शुभकामना देते हुए कहा की गया लोकसभा का जीत भाजपा कार्यकताओं की जीत है आप सभी लोगों की मेहनत का फल है कि जीतन मांझी भारी मतों से विजयी हुए और दिल्ली में केंद्र सरकार में मंत्री पद पर सुशोभित हुए।

प्रो भरत सिंह के निधन पर साहित्यकारों में शोक की लहर

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर में जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन औरंगाबाद द्वारा मगध विश्वविद्यालय के हिंदी एवं मगही विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ भरत सिंह जी के आकस्मिक निधन पर एक शोक सभा का आयोजन किया गया।विधायक प्रतिनिधि सह मुखिया प्रतिनिधि प्रदीप कुमार सिंह के नेतृत्व में उपस्थित लोगों ने डॉ भरत सिंह के सम्मान में 2 मिनट का मौन रखा एवं उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि वे हिंदी और मगही भाषा के लिए समर्पित रहने वाले साहित्यकार के रूप में जाने जाते थे। जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह एवं महामंत्री धनंजय जयपुरी के आह्वान पर उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि पिछले वर्ष औरंगाबाद जिले में कई पत्रिकाओं के विमोचन के मौके पर उनका औरंगाबाद आगमन हुआ था।विमोचन के मौके पर मगही में अपनी भाषण की शुरूआत करते थे।कहा करते थे कि मातृभाषा मगही के आंचल वाला चादर हम ओढकर बैठे हैं। जब तक हम मगही का विकास नहीं करेंगे तब तक हिंदी भाषा को हम राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दिला सकते।उनके निधन से पूरे मगध प्रमंडल में साहित्यिक जगत को अपूरणीय क्षति हुई है।शोकसभा के मौके पर समाजसेवी कृष्णा मेहता,वैश्य समाज जम्होर के सचिव संजय गुप्ता,राणा सुनील सिंह,प्रिंस कुमार,राहुल कुमार,मुन्ना कुमार सहित अन्य उपस्थित थे।

श्रेया हत्याकांड में पुलिस प्रसाशन के रवैया से जनता में भारी असंतोष : सुशील

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। औरंगाबाद लोकसभा क्षेत्र के निवर्तमान सांसद व भाजपा नेता सुशील कुमार सिंह ने श्रेया हत्याकांड को लेकर औरंगाबाद के एस.पी और वरीय पदाधिकारी से दूरभाष पर बात कर घटना के बारे में विस्तृत रूप से चर्चा किया एवं कहा कि श्रेया हत्याकांड में पुलिस प्रसाशन के रवैया से जनता में भारी असंतोष है और इतना दिन बीत जाने के बाद भी कारवाई में देरी होने से काफी आक्रोश है। निर्मम तरीके और बेरहमी से हत्या किया गया है इसे दबाया नही जा सकता, पुलिस शीघ्र से शीघ्र इस कांड का सफल उद्भेदन करें और स्पीडी ट्रायल करके दोषियों को कठोर से कठोर सजा दिलवाने का काम करे।पोस्टमार्टम रिपोर्ट से परिजन और सर्व समाज के लोग सहमत नही है। परिजन लोग इसे आत्महत्या नही बल्कि हत्या बता रहे है। प्रशासन इसकी गंभीरता से जाँच करें।मृतक के विसरा को फॉरेंसिक साइंस लेबोरेटरी में जाँच के लिए तुरंत भेजा जाए और उच्च स्तरीय पदाधिकारी के देख रेख में उसका जाँच हो जिससे मौत के कारण का स्पष्ट खुलासा हो सके और विसरा रिपोर्ट आने के बाद आगे की कारवाई उच्च स्तरीय पदाधिकारी के देख रेख में सख्ती से हो।पोस्टमार्टम रिपोर्ट में श्रेया का वास्तविक उम्र से बढ़ाकर उम्र दशार्या गया है जो गम्भीर जाँच का विषय है। इस घटना को लेकर समाज के हर वर्ग के लोगो में आक्रोश है।जगह जगह छात्र एवं छात्राये एवं आम जन लोग कैंडिल जलाकर विरोध प्रदर्शन कर रहे है।सभी लोग अपने बच्चों के भविष्य को लेकर चिंता में है आखिर कैसे बच्चे लोग को पढ़ाये जब समाज में इस तरह के दरिंदे लोग ऐसा जघन्य अपराध कर रहे है।प्रशासन निष्पक्षता से कारवाई करे और दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाए। ताकि समाज में इस तरह की घटना की पुनरावृत्ति नही हो सके।

प्रभारी मंत्री से डॉक्टर मनीष पंकज मिश्र ने शहर की समस्या को ध्यान आकृष्ट कराया

प्रात : किरण संवाददाता

गया।बिहार सरकार के उद्योग और पर्यटन मंत्री सह गया जिला प्रभारी मंत्री नीतीश मिश्रा के गया जी के पावन धरती पर आगमन पर भारतीय जनता पार्टी गया जिला किसान मोर्चा के सह प्रभारी डॉ मनीष पंकज मिश्रा ने श्री विष्णु चरण चिन्ह, अंग वस्त्र एवं फूलों का गुलदस्ता देकर स्वागत किया इस अवसर पर डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा ने नीतीश मिश्रा को बधाई और शुभकामना देते हुए कहा यह हमारा सौभाग्य है की आप गया जिला के प्रभारी मंत्री बने हैं।प्रभारी मंत्री के रूप में गया शहर में बिजली एवं पानी की व्यवस्था के साथ-साथ यातायात व्यवस्था का भी समीक्षा कर उपरोक्त विभागों का दिशा निर्देश दें, कि भीषण गर्मी गया जिला में पड़ रही है, चौबीस घंटे बिजली एवं पानी की व्यवस्था हो एवं विष्णु नगरी को पर्यटन क्षेत्र घोषित किया जाए। इस अवसर पर मंत्री प्रस्सन मुद्रा में सारी बातें को गंभीरता से सुना और आश्वासन दिए इन बिंदुओं ज्वलंत मुद्रा है इसकी समीक्षा की जाएगी और विभागीय दिशा निर्देश दिया जाएगा।

श्रेया हत्याकांड में पुलिस ने की कार्रवाई, हिरासत में लिए गए तीन संदिग्ध

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। चर्चित श्रेया हत्याकांड में पुलिस ने तीन संदिग्ध आरोपियों को हिरासत में लिया है। अपने कार्यालय कक्ष में आयोजित प्रेस-वार्ता के दौरान सदर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी झ 01 संजय कुमार पांडे ने बताया कि प्राप्त साक्ष्य के आधार पर तीन लोगों को हिरासत में लिया गया जिसमें मृतिका के कथित प्रेमी, एक महिला एवं उसकी बेटी शामिल है।

उन्होंने बताया कि इस हत्याकांड की आरोपित महिला नबीनगर में एक ब्यूटी पार्लर चलाती हैं जिसके बारे स्थानीय लोगों से पूछताछ में कुछ नकारात्मक बाते सामने आई हैं जो मृतिका और कथित प्रेमी को मिलाने का कार्य करती थी। इस बीच महिला की बेटी जो मृतिका की दोस्त थी वह इन दोनों के बीच सेतु का कार्य करती थी। उसका मृतिका के घर हमेशा आना जाना लगा रहता था। अब तक के तकनिकी एवं वैज्ञानिक अनुसंधान से पता चला है कि ये तीनों घटना में कारक के भूमिका हैं। उन्होंने बताया कि घटना के हर बिंदु पर जांच पड़ताल चल रही है और वास्तविक कारणों का पता लगाया जा रहा है।

मृतिका के कुछ बॉडी पार्ट के विधि विज्ञान प्रयोगशाला भेजा गया है जिसके रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई जारी है। एसिड से छात्रा की मौत बेबुनियाद हैं। चिकित्सकीय परीक्षण के आधार पर छात्रा की मौत पानी में डूबने से हुई है।

आईआईटी के तैयारी करने वाले बच्चों के लिए बनाया स्मार्ट क्लास

प्रात : किरण संवाददाता

गया। आईआईटी की तैयारी कराने वाले बच्चों के लिए रोटरी गया सिटी ने स्मार्ट क्लास बनवाया है। लगभग ढाई लाख की लागत से बनाये गये इस स्मार्ट क्लास का शुभारंभ रोटरी क्लब ऑफ गया सिटी के अध्यक्ष विजय भलोटिया, बादशाह डालमिया, अमरेश कुमार, डा. रतन कुमार सहित अन्य सदस्यों ने फीता काटकर किया। इस स्मार्ट क्लास में बच्चें भीषण गर्मी में भी आराम से आईआईटी व एनआईआईटी परीक्षा की तैयारी कर सकेंगे। अध्यक्ष विजय भलोटिया ने कहा कि स्मार्ट क्लास बन जाने से बच्चों में पढाई के प्रति एकाग्रता बढेगी।

हर संभव इस तरह के बच्चों को की जायेगी मदद वृक्ष संस्था में कार्यक्रम के दौरान बादशाह डालमिया ने कहा कि रोटरी गया सिटी इन बच्चों को और बेहतर सुविधा तैयारी के लिए मिले इसके लिए जो भी आवश्यकता होगी हमलोग मदद करेंगे। इस दौरान वृक्ष संस्था के संस्थापक चन्द्रकांत पाटेश्वरी ने बच्चों के लिए डिजीटल बोर्ड, वाटर कुलर व दो एसी लगाने पर रोटरी गया सिटी को धन्यवाद दिया और कहा कि उनके संस्था में नि:शुल्क 150 बच्चों को आईआईटी की तैयारी करायी जा रही है। वहीं दस बच्चे एनआईआईटी के भी तैयारी कर रहे है। इसके अलावे संस्था गरीब व मजदूर वर्ग के लोगों के बच्चों को नर्सरी से दसवीं तक नि:शुल्क शिक्षा देती है। इस मौके पर प्रियरंजन डायर,शीरिष प्रकाश, अमरेश कुमार, सचिव अमित कुमार सिंह, पुनित खेतान, संजय कुमार, विकास अग्रवाल, अशोक लोहानी, प्रमोद गुप्ता, सुजीत कुमार, संजय पाल, विनोद मित्तल व अन्य सदस्यों ने हर संभव मदद करने की बात कही। इस मौके पर डुगेश्वर प्रसाद, रंजीत कुमार, कुलदीप, सुनील व राजीव कुमार मौजूद रहे हैं।

22 जून से 6 जुलाई तक सत्यचंडी धाम रायपुरा में आद्रा मेला का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद से सटे हुए करीब 5 किलोमीटर की दूरी पर प्रसिद्ध शक्तिपीठ सत्यचंडी धाम रायपुरा में 22 जून से लेकर 6 जुलाई तक आद्रा मेला आयोजन के निमित तैयारी के लिए एक बैठक आयोजित की गई। मां सत्यचंडी न्यास समिति के सचिव राजेंद्र सिंह के नेतृत्व में आयोजित बैठक में आद्रा मेला के व्यवस्था से संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की गई।चर्चा के क्रम में सचिव ने बताया कि मेला से संबंधित सारी तैयारी को अंतिम रूप दिया जा रहा है।सत्यचंडी धाम के विकास के लिए भी समिति के सदस्य कृत संकल्पित हैं।मेला में श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की कोई समस्या ना हो इसके लिए मास्टर प्लान बनाकर सभी तरह की सुविधा मुहैया कराई जाएगी।साथ ही साथ जिला प्रशासन से मेला में शांति व्यवस्था बनाए रखने हेतु दंडाधिकारी की नियुक्ति की जाए, पेयजल हेतु प्रतिदिन चार टैंकर पानी उपलब्ध कराई जाए, स्वास्थ्य के लिए दक्ष चिकित्सकों की टीम हमेशा उपलब्ध रहे। अग्निशामक यंत्र की व्यवस्था किया जाए।चलंत शौचालय की सुविधा दी जाए। इन सारी मांगों को प्रेषित कर औरंगाबाद के अनुमंडलाधिकारी को न्यास समिति के सचिव ने पत्र भी प्रेषित किया है। मौके पर उपाध्यक्ष अमरेश सिंह,सह सचिव राहुल सिंह,भागीरथ सिंह, रिशु सिंह, विकास सिंह, सूरज सिंह सहित अन्य ग्रामीण उपस्थित थे।जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी ने बताया कि शक्तिपीठ सत्यचंडी धाम में सती माता का रक्तिम हस्त गिरने का प्रमाण है जिससे आद्रा नक्षत्र में यहां विशाल मेला का आयोजन किया जाता है।

जून को मलेरिया रोधी तो जुलाई को डेंगू रोधी माह मनाया जाएगा

लोगों को जागरूक करने के लिए शिक्षा विभाग, आईसीडीएस व जीविका के साथ चलाया जाएगा अभियान

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिला समेत सूबे में जल्द ही मानसून का आगमन होने वाला है। लेकिन मानसून के आने के साथ ही जिले में मच्छर जनित बीमारियों की भी संभावना बढ़ जाती है। जिसको देखते हुए स्वास्थ्य विभाग भी अपनी तैयारियों में जुटा गया है। इस क्रम में विश्व स्वास्थ्य संगठन के विशेष निर्णय पर जून और जुलाई माह में लोगों को मच्छर जनित बीमारियों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का अयोजन किया जाएगा। इसके लिए जून को मलेरिया रोधी माह और जुलाई को डेंगू रोधी माह के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। ताकि लोगों को मलेरिया और डेंगू के लक्षण, इलाज और बचाव संबंधी जानकारी दी जा सके। सिविल सर्जन डॉ. ईला मिश्रा ने बताया कि मानसून के साथ मच्छर जनित बीमारियों की संभावना प्रबल हो जाती है। शहरी के साथ साथ ग्रामीण इलाकों में बारिश के पानी के कारण जगह जगह जलजमाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जिसके कारण मच्छरों को पनपने के अनुकूल माहौल मिल जाता है। ऐसे में लोगों को मच्छरों से बचाने और जागरूक करने के लिए सभी प्रखंडों को निर्देशित किया गया है। साथ ही, प्रखंडों में विभिन्न स्थानों पर बैनर पोस्टर लगाए जाएंगे। वहीं, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के स्तर से तहत जिला स्तर, प्रखंड व पंचायत स्तर पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। ताकि, ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस संबंध में जागरूक किया जा सके। साथ ही, लोगों को मच्छरों से होने वाली बीमारियों मसलन डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया आदि के लक्षणों की जानकारी के साथ इलाज व बचाव के संबंध में भी जागरूक किया जाएगा। जिससे लक्षणों के दिखने पर वो तत्काल अपने नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र में जाकर इन बीमारियों की जांच करा सकें। उन्होंने बताया कि जिले के सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और सदर अस्पताल में मलेरिया और डेंगू की निशुल्क जांच और इलाज उपलब्ध है।

विभिन्न गतिविधियों का किया जाएगा आयोजन : अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी सह जिला वेक्टर जनित रोग नियंत्रण पदाधिकारी डॉ. केएन सिन्हा ने बताया कि राज्य स्वास्थ्य समिति के निदेर्शानुसार जून को मलेरिया रोधी माह और जुलाई को डेंगू रोधी माह मनाया जाएगा। जिसके डेंगू रोधी माह के संचालन के लिए सहयोगी संस्थानों का भी सहयोग लिया जाएगा। ताकि, वृहद् स्तर पर लोगों को जागरूक करने के लिए अभियान चलाया जा सके।

सहयोगी संस्थानों के संयुक्त अभियान से चलाया जाएगा अभियान : डॉ. सिन्हा ने बताया कि जिले में मलेरिया रोधी माह और डेंगू रोधी माह के तहत नगर निगम क्षेत्र में जागरूकता अभियान चलाया जायेगा।

इसके लिए जिला शिक्षा विभाग, आईसीडीएस व जीविका के साथ पत्राचार किया जा चुका है। जिनके सहयोग से शहरी के साथ साथ ग्रामीण इलाकों के लोगों के बीच मलेरिया व डेंगू से बचाव की चर्चा करते हुए उन्हें मच्छर जनित बीमारियों से बचाव की जानकारी दी जाएगी। साथ ही, आंगनबाड़ी केंद्रों पर आयोजित होने आरोग्य दिवस के अवसर पर भी लाभुकों व उनके परिजनों को मच्छरों से बचाव की जानकारी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि जिला मुख्यालय में मलेरिया और डेंगू रोधी माह के तहत नगर निगम क्षेत्र में जागरूकता अभियान चलाया जायेगा।

बकरीद व एकादशी पर्व के मौके पर मुस्लिम युवक ने मंदिरों के पुजारियों को गुलाब का फूल देकर दी बधाई

औरंगाबाद। पैगाम ए इंसानियत मुस्लिम समुदाय के सदस्यो ने बकरीद पर्व और निर्जल व्रत अक्दासदी कि साझी संस्कृति ही हमारी पहचान रही है। सोमवर को बकरीद का नमाज अदा करने के बाद पैगाम ए इंसानियत मुस्लिम समुदाय के जिलाध्यक्ष मो. शहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान, आमिर रजा, मो. इबरार, मो. बंटी, मो. सहाबुद्दीन उर्फ नन्हे, मो. जुल्फेकार सहित के नेतृत्व में शहर के धर्मशाला मोड संकट मोचन मानस मंदिर नावाडीह रोड स्थित महावीर मंदिर, सब्जी मंडी स्थित कारगिल चौक के पास, शंकर जी मंदिर के पुजारी को बकरीद एवं निर्जल एकदासी त्यौहार के मौके पर गुलाब का फूल देकर दोनों पर्व की गले मिलकर हार्दिक शुभकामनाएं दिया। पैगाम ए इंसानियत के जिलाध्यक्ष सल्लू खान, शिव शंकर मंदिर के पुजारी डब्लू पांडे संकट मोचन मानस के मंदिर अजय पांडे नगर थाना परिसर में भोला संकर मंदिर के पुजारी दीपक पांडेय, गणेश मंदिर के मनीष पांडे ने कहा कि जिला के दोनों धर्म के लोगो से कहा कि साझी संस्कृति ही हमारी पहचान रही है। दोनों समुदाय आपस में एक-दूसरे के साथ हमेशा मिलकर एक साथ होकर रहते हैं वहीं पर काम इंसानियत के जिला अध्यक्ष समाजसेवी सल्लू खान ने कहा कि अलग-अलग त्योहार अलग-अलग धर्मों के साथ जोड़े जाते हैं। लेकिन यह गलत है। असलियत यह है कि हमारे हर त्योहार पूरे देश, पूरे समाज के हैं। जाने-अनजाने हर त्योहार के साथ हर समुदाय के लोग जुड़ जाते हैं। बकरीद ईद हो या निर्जल अकड़सी होली-दिवाली, महावीर जयंती हो या क्रिसमस, हर त्योहार पर पूरे समाज के लोग आपस में जुड़ जाते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि अलग-अलग धार्मिक पहचान के बाद भी हमारी सांस्कृतिक जड़ें इस मिट्टी से जुड़ी हुई हैं, जिसने हम सब पर एक जैसा प्यार लुटाया है। इस पर्व को शांतिपूर्ण ढंग से मनाने के लिए जिला पैगाम इंसानियत मुस्लिम समुदाय के सदस्य पूरी तरह मुस्तैद दिखा। नमाज स्थल से लेकर शहर के विभिन्न चौक चौराहों पर हिन्दू मुस्लिम समुदाय के दोनो तरफ से लोग एक दूसरे को गले मिलकर मुबारकबाद देते हुए नजर आए। सल्लू खान ने शहरी क्षेत्र के विभिन्न नमाज के स्थलों पर घूमकर जायजा लिया। सभी जगहों प। एक दिन पूर्व ही शहर के पठन टोली मस्जिद परिसर में रविवार को प्रेस कांफ्रेंस कर सोशल मीडिया पर भी भड़काऊ पोस्ट साझा करने वालों पर कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी थी। साथ ही सभी मुस्लिम समुदाय के लोगों को बधाई दी और शांति व्यवस्था के बीच में बकरीद पर्व मनाए जाने की अपील की।

अरवल के पिपरा बांग्ला बालू घाट से डंपर में शव लोड जहानाबाद में बरामद

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। पिपरा बांग्ला बालू घाट पर रात्रि में 15 जून को कागजी मोहल्ला के दर्जनों लोगों ने बालू लदे ट्रकों को बालू बराबर कर रहे थे इसी दौरान बैदराबाद निवासी विनोद चौधरी बालू घाट के सटे सोन नदी में जाल डालकर घर लौट रहा था। तभी कुछ लोगों ने पड़कर बुरी तरह पीट-पीट कर हत्या कर डालें विनोद को मर जाने के बाद बालू घाट पर एक हाईवे में लोडिंग हो रहा है बालू में लाश को ठिकाना लगाने के लिए बालू के साथ लोड कर दिए गए, इधर विनोद चौधरी के पिता जब विनोद चौधरी घर पर नहीं आया तो 16 जून को थाने में जाकर गुम होने का आवेदन दिया, एक हाईवे डंपर पर बालू लोडिंग हुआ था उसे गाड़ी का चालान बेगूसराय के था। 16 जून को हाईवे डंपर के ड्राइवर द्वारा बालु को जहानाबाद जिले के घोसी मोड़ के समीप बालु खाली किया जा रहा था इसी दौरान डंपर से 22 वर्ष के लड़के की लाश मिला मिलता है स्थानीय लोगों ने देखने काफी बड़े कथा जुट गई उसे वक्त इलाके में हड़कंप मंच गया, इसकी जानकारी मिलते ही परिवार वालों ने जहानाबाद जाकर लाश को पहचान किया तो वह शव किसी और का नही था बल्कि बैदराबाद निवासी विनोद चौधरी का था। पुलिस शव बरामद कर पोस्टमार्टम कर अंत्य परीक्षण में लग गए। परिवार को जानकारी मिली और बैदराबाद से जहानाबाद जाकर प्राथमिक की दर्ज करवाई।

सुल्तानगंज प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न जगहों में बड़े ही धूमधाम मनाया गया बकरीद का त्योहार

प्रात : किरण संवाददाता

सुल्तानगंज प्रखंड भर में धूमधाम से बकरीद का त्योहार सोमवार को मनाया जा रहा है।दिलगौरी ईदगाह मैदान कोलगामा मस्जिद काशीपुर मस्जिद सुल्तानगंज के गंगा तट स्थित शाही मस्जिद सहित विभिन्न मस्जिदों और ईदगाह मैदानों में ईद उल अजहा की नमाज अदा की गई। जिनकी इमामत वहां के इमामों ने कराई। इसके बाद एक दूसरे को गले लगाकर परंपरानुसार ईद की मुबारक बाद दी इसके बाद कुबार्नी की रस्म भी अदा हुई। शाही मस्जिद के इमाम ने कहा कि मुल्क की तरक्की के लिए सभी नेकी की राह पर चलें। बूढ़े मां बाप, जरूरतमंद गरीब बच्चों की मदद करें। सभी ने यहां देश में अमन और भाईचारे सहित सुलतानगंज वासियों की खुशहाली की दुआ भी मांगी।

ईदगाह में पुलिस प्रशासन की ओर से विधि व्यवस्था सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सुल्तानगंज थाना पुलिस सशस्त्र बलों के साथ मुख्य रूप से मौजूद थे। थाना क्षेत्र में भी भ्रमणशील होते दिखाई दिए। इस दौरान नोमान अंसारी, अफोरोज आलम, मो सेराज, मो सानू, मो साहिद इत्यादि सैकड़ों की संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग मौजूद थे।

नई फिल्म के लिए रणवीर सिंह को बढ़ाना पड़ रहा है 15 किलो वजन?

बॉलीवुड अभिनेता रणवीर सिंह अपने आगामी प्रोजेक्ट को लेकर तैयारी में जुटे हैं और अभिनेता अपने शारीरिक बदलाव पर काम कर रहे हैं। इस बात का दावा लेखिका शोभा डे ने अपने एक इंस्टाग्राम पोस्ट में किया है। उन्होंने रणवीर के साथ एक तस्वीर साझा करते हुए लिखा कि वह अपने आगामी प्रोजेक्ट के लिए वजन बढ़ा रहे हैं। हालांकि, अभी भी लोगों को रणवीर के आधिकारिक घोषणा का इंतजार है।

शोभा के साथ दिखे रणवीर

लेखिका शोभा डे ने रणवीर सिंह से एक कैफे में मिलने के बाद कुछ तस्वीरें साझा की। उन्होंने रणवीर के साथ कुछ सेल्फी भी साझा की है। एक तस्वीर में रणवीर शोभा और उनके दोस्त के साथ मुस्कुराते हुए नजर आ रहे हैं। एक अन्य तस्वीर में रणवीर फ्रेंच फ्राइज की एक प्लेट लिए दिख रहे हैं।

आगामी फिल्म का किया दावा

तस्वीरें साझा करते हुए शोभा ने लिखा, 'अलीबाग के हमारे पसंदीदा कैफे में चौंकाने वाली मुलाकात, सेल्फी किंग रणवीर सिंह पिता बनने से पहले बहुत जरूरी समय बिता रहे हैं और अपनी अगली फिल्म शुरू करने जा रहे हैं।'

12 किलो वजन बढ़ा रहे हैं रणवीर!

शोभा ने आगे लिखा, 'लेकिन उन्होंने कहा कि वो कार्ब्स पर ध्यान दे रहे हैं। उन्हें अपने नए प्रोजेक्ट के लिए 15 किलो वजन बढ़ाने की जरूरत है। हमेशा की तरह आकर्षक, सहज और हमेशा विनम्र। अलीबाग में उनसे मिलकर बहुत खुशी हुई।' हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि वे किस प्रोजेक्ट की बात कर रही हैं।

रणवीर सिंह का वर्क फंट

रणवीर सिंह के वर्क फंट की बात करें तो वह आखिरी बार आलिया भट्ट के साथ 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' में नजर आए थे। फिल्म का निर्देशन करण जौहर ने किया था। फिल्म की कहानी दोनों किरदारों रॉकी और रानी के चारों ओर घूमती है, जो अलग-अलग जगह से ताल्लुक रखते हैं। उनकी आगामी फिल्मों की बात करें तो वह अजय देवगन और अक्षय कुमार के साथ सिंघम अगेन में नजर आएंगे।

सितारों के प्रति हद से ज्यादा दीवानगी ठीक नहीं

सोनाली बेंद्रे इन दिनों सुर्खियों में बनी हुई हैं। पिछले दिनों वे वेब सीरीज ब्रोकन न्यूज सीजन 2 में नजर आई थीं। दर्शकों को उनका यह शो काफी पसंद भी आया। इस शो में उनके सात जयदीप अहलावत भी दिखाई दिए थे। हाल ही में अभिनेत्री ने एक इंटरव्यू दिया है जिसमें वे बॉलीवुड स्टार्स के प्रति फैंस की दीवानगी के बारे में बातें करती नजर आईं। सोनाली बेंद्रे दिलजले से लेकर डुप्लीकेट और मेजर साब जैसी फिल्मों में काम कर चुकी हैं। हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान जब उनसे पूछा गया कि जब वे 1990 में भोपाल गई थीं तब कथित तौर पर उनके एक फैन ने आत्महत्या कर ली थी क्योंकि वे उस फैन से नहीं मिल पाई थीं। इस बात को सुनकर अभिनेत्री कहती हैं, क्या यह सच है और अगर सच है तो यह काफी दुर्भाग्यपूर्ण है। इस हद की दीवानगी नहीं है।

सोनाली बेंद्रे अविश्वास के साथ प्रतिक्रिया देते हुए बोलती हैं, यह गलत है। आप किसी इंसान को ऐसे कैसे भगवान के जैसे मान सकते हैं। स्टार्स भी सधारण इंसान होते हैं। मुझे नहीं पता है कि ऐसा कुछ हुआ था और यह सही नहीं है। मुझे प्रशंसकों के चिट्ठी आते थे और शायद उनमें से कई चिट्ठी खून से लिखे होते थे। मुझे इस बात से भी तकलीफ होती थी। सोनाली बेंद्रे इस फैन कल्चर को गलत मानती हैं। वे कहती हैं, किसी के काम को सराहना सही है, लेकिन एक हद में रहकर। ऐसे खुद को नुकसान पहुंचा लेना समझदारी नहीं है। मैंने अपनी बीमारी से एक बात सीखी है कि कोई भी सुंदर चीज अपने आप में संपूर्ण नहीं होती है। फैंस सिर्फ पर्दे पर हमें अभिनय करते देखते हैं। वास्तव में उन्हें नहीं पता होता है कि हम एक इंसान के तौर पर कैसे हैं या हम निजी जिंदगी में किन चीजों से गुजर रहे हैं।

यंग एक्टर्स पर काम्या पंजाबी ने कसा तंज

टीवी एक्ट्रेस काम्या पंजाबी ने हाल ही में यंग एक्टर्स पर निशाना साधा। उन्होंने कटाक्ष करते हुए कहा कि आजकल के एक्टर्स को एक्टिंग से ज्यादा अपने सोशल मीडिया फॉलोअर्स की ज्यादा चिंता होती है। बता दें, काम्या इन दिनों अपने नए शो इश्क जबरिया को लेकर चर्चा में हैं।

आजकल सोशल मीडिया का जमाना है

इंटरव्यू में काम्या पंजाबी ने कहा, आजकल सोशल मीडिया का जमाना है। दुर्भाग्यवश, ज्यादातर मेकर्स यह देखकर ही कास्टिंग करते हैं कि एक्टर के सोशल मीडिया फॉलोवर कितने हैं? इंडस्ट्री में एक एक्टर कितना अच्छा है, वह कितना बेहतरीन काम करता है, मेकर्स के लिए ये बातें मायने नहीं रखती हैं। यह तो गलत बात है। सच्चाई यह है कि ये नए एक्टर्स जिनके मिलियन फॉलोअर्स होते हैं, वे 10 लाइन का डायलॉग तक बोल नहीं पाते हैं। मुझे यह बहुत फनी लगता है। इनका ध्यान सिर्फ ट्रेंडिंग गानों पर रील्स बनाने पर होता है उन्होंने आगे कहा, कई यंग एक्टर्स का फोकस अच्छी एक्टिंग नहीं, बल्कि सिर्फ सोशल मीडिया पर अपने फॉलोअर्स बढ़ाने पर होते हैं। इनका ध्यान सिर्फ और सिर्फ ट्रेंडिंग गानों पर रील्स बनाना और उन्हें पोस्ट करने पर होता है।

सेट पर ऐसा माहौल देखती हूं तो हंसी आती है

एक उदाहरण देते हुए, एक्ट्रेस ने आगे कहा, मेरे पिछले शो में मेरी एक को-एक्टर थीं, जिन्हें एक शादी अटेंड करनी थी। मैंने नोटिस किया कि उनका फोकस कहीं भी शादी को एन्जॉय करने पर नहीं था। बल्कि, उसे 6 रील्स बनाने का स्ट्रेस था। यह देखकर मैं हैरान थी। आज की यंग जनरेशन मोमेंट को एन्जॉय नहीं करती है। जब सेट पर ऐसा माहौल देखती हूं तो हंसी आती है। वहीं, ऐसे लोगों पर दया भी आती है। इश्क जबरिया में मोहिनी की भूमिका निभाते आएंगी नजर इश्क जबरिया में काम्या मोहिनी की भूमिका निभा रही हैं। इससे पहले वह रेत, अस्तित्व- एक प्रेम कहानी, पिया का घर, मर्यादा- लेकिन कब तक, शक्ति और बनूं मैं तेरी दुल्हन जैसे कई शोज में नजर आ चुकी हैं।

आलिया भट्ट ने स्टोरीटेलिंग की दुनिया में रखा कदम

फिल्म की दुनिया में अपने अभिनय और खूबसूरती का लोहा मनवाने के बाद अब अभिनेत्री आलिया भट्ट स्टोरीटेलिंग की दुनिया में भी छाने के लिए तैयार हैं। उन्होंने बच्चों के लिए अपनी पहली पिक्चर बुक लॉन्च की है। आलिया ने कहा कि वह किताबों की एक सीरीज पर काम कर रही हैं।

रविवार को आलिया ने बच्चों के कपड़ों के ब्रांड एड-ए-मम्मा के तहत बच्चों की पिक्चर बुक की सीरीज की पहली किताब 'एड फाइंड्स ए होम' पेश की है।

नई किताब के लिए जाहिर की खुशी

आलिया ने अपनी नई भूमिका के बारे में इंस्टाग्राम पर किताब के साथ अपनी तस्वीर साझा करते हुए खुशी जाहिर की है। इस तस्वीर में आलिया किताब के साथ पोज देते हुए मुस्कुराती हुई नजर आ रही हैं। तस्वीर साझा करते हुए अभिनेत्री ने लिखा, 'एक नया रोमांच शुरू हो रहा है 'एड फाइंड्स ए होम' एड-ए-मम्मा की दुनिया से किताबों की एक नई सीरीज की शुरुआत है।' अभिनेत्री ने लिखा, मेरा बचपन कहानियों और कहानीकारों से भरा था और एक दिन मैंने अपने अंदर के उस बच्चे को बाहर लाने और बच्चों के लिए किताबों में डालने का सपना देखा, मैं अपने साथी कहानीकारों की आभारी हूं। जिन्होंने अपने शानदार विचारों, इनपुट और कल्पना से हमारी पहली किताब को जीवंत करने में मदद की। इस यात्रा के लिए शुभकामनाएं।'

कॉफी शॉप में लीजा हेडन को मिली थी पहली फिल्म

लीजा हेडन अपना जन्मदिन मना रही हैं। लीजा अभिनेत्री होने के साथ फैशन डिजाइनर भी हैं। फिल्मों से पहले लीजा कई मशहूर ब्रांड के विज्ञापनों में नजर आ चुकी हैं। पहले वह शिक्षिका बनना चाहती थीं, लेकिन बाद में दोस्तों की सलाह पर उन्होंने मॉडलिंग शुरू की। अनिल कपूर ने उन्हें सबसे पहले एक कॉफी शॉप में देखा था और फिल्म आयशा के लिए उन्हें चुना। इस फिल्म की शूटिंग शुरू होने से पहले वह न्यूयॉर्क में अभिनय का प्रशिक्षण लेने भी गई थीं।

15 नवम्बर को प्रदर्शित होगी अभिषेक बच्चन की शूजीत सरकार निर्देशित फिल्म

विक्की डोनर, पीकू और सरदार उधम जैसी दमदार फिल्मों का निर्माण कर चुके फिल्म निर्माता शूजीत सरकार ने प्रशंसकों को बड़ा तोहफा दिया है। फादर्स डे के अवसर पर निर्माता ने अपनी आगामी फिल्म पर अहम अपडेट साझा किया है, जिसमें अभिनेता अभिषेक बच्चन मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। फिल्म का शीर्षक अभी सामने नहीं आया है, लेकिन शूजीत की पोस्ट से साफ हो रहा है कि इसकी कहानी पिता और बेटी के खूबसूरत रिश्ते पर आधारित होगी। साथ ही इसकी रिलीज डेट से भी पर्दा उठा दिया गया है। शूजीत सरकार ने अपने प्रोडक्शन हाउस राइजिंग सन फिल्म्स के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल से उपरोक्त फिल्म के बारे में अधिक जानकारी साझा की। निर्माता ने पोस्ट किए गए वीडियो को कैप्शन दिया, इस फादर्स डे पर उस प्यार, हंसी और अमूल्य सबक को संजोएं जिसके लिए पिता हमें तैयार करते हैं।

15 नवंबर, 2024 को सिनेमाघरों में शूजीत सरकार की हार्दिक पिता-बेटी के रिश्ते की आगामी कहानी के लिए तैयार हो जाइए। हालांकि पोस्ट के कैप्शन में कहा गया है कि शूजीत सरकार की आगामी पिता-बेटी के रिश्ते की कहानी के लिए तैयार हो जाइए लेकिन तथ्य यह भी है कि फिल्म के निर्माताओं ने केवल अभिषेक बच्चन की उपस्थिति के बारे में खुलासा किया है। फिल्म के बाकी कलाकारों के बारे में विवरण अभी भी गुप्त है। बीते दिनों शूजीत सरकार ने फिल्म के बारे में बात की थी, जिसमें उन्होंने कहा था कि यह एक और भावनात्मक और जीवन के अहम पहलू से जुड़ी फिल्म होगी, जिसमें हास्य भी शामिल होगा। फिल्म का निर्देशन जहां शूजीत सरकार कर रहे हैं, वहीं इसका निर्माण रोनी लाहिड़ी और शील कुमार कर रहे हैं।

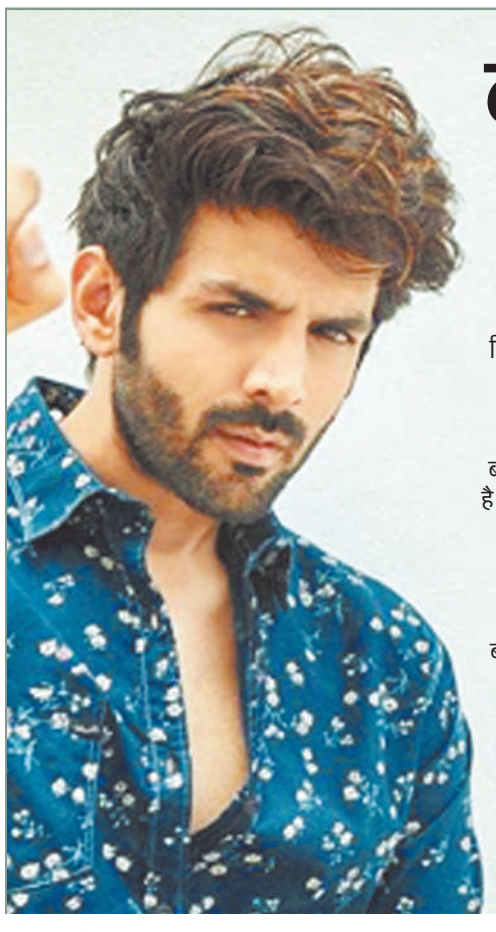

कार्तिक ने बताई चंदू चैंपियन को करियर की सबसे बड़ी फिल्म

कार्तिक आर्यन की फिल्म चंदू चैंपियन सिनेमाघरों में लगी हुई है। फिल्म की रिलीज से पहले प्रमोशन के दौरान कार्तिक आर्यन दर्शकों के बीच गए। इस दौरान उन्होंने इसे अपने करियर की सबसे चैलेंजिंग फिल्म बताया। हालांकि, फिल्म जब रिलीज हो चुकी है तो इसे क्रिटिक्स से सकारात्मक रिव्यू मिले हैं, उनके अभिनय की भी तारीफ हो रही है, लेकिन कमाई के मामले में फिल्म औसत प्रदर्शन ही कर रही है। फिल्म की सफलता उसके बॉक्स ऑफिस से ही मापी जाती है। बॉक्स ऑफिस पर कार्तिक का नजरिया क्या है, हाल ही में उन्होंने बताया।

निर्माताओं को मिलना चाहिए फायदा

फिल्म की सफलता उसके बॉक्स ऑफिस नंबरों पर निर्भर करती है। ऐसे में चंदू चैंपियन के बॉक्स ऑफिस को लेकर क्या कार्तिक वाकई चिंतित हैं? इस पर उन्होंने कहा कि यह फिल्म उनके करियर की सबसे सबसे बड़ी फिल्मों में से एक है। फ्री प्रेस जर्नल से बातचीत में कार्तिक ने कहा कि हर कोई चाहता है कि फिल्में मुनाफा दें। कार्तिक ने कहा कि जो भी संख्याएं हों, उन्होंने स्वीकार किया है। हालांकि, उन्होंने इस पर जोर दिया है कि जो भी नंबर हों, उनके निर्माताओं के लिए फायदेमंद होने चाहिए।

बॉक्स ऑफिस सक्सेस पर क्या सोचते हैं कार्तिक?

उन्होंने आगे कहा कि एक बार जब उनके निर्माता और एक्जीबिटर्स उनकी फिल्मों से पैसा कमा लेते हैं, तो उनका काम पूरा हो जाता है। उन्होंने कहा कि यह एकमात्र दबाव है जो उन पर है और बाकी सब केवल सुर्खियों के लिए हैं। उन्होंने माना कि फिल्म तगड़ी कमाई करे, यह कोई भी नापसंद नहीं करेगा, लेकिन वे इस तथ्य से सहमत हैं कि हर फिल्म पैसे कमाने वाली नहीं होगी। कार्तिक ने बॉक्स ऑफिस पर सफलता हासिल करना जारी रखने की इच्छा व्यक्त की, लेकिन फॉर्मूले के बारे में अनिश्चितता को स्वीकार किया।

इस वजह से खास है चंदू चैंपियन

कार्तिक ने आगे कहा कि चंदू चैंपियन उनके लिए सबसे चैलेंजिंग थी। वे इसे हमेशा संजोकर रखेंगे। उन्होंने उम्मीद जताई कि लोग उनकी फिल्मोग्राफी में इस भूमिका को याद रखा जाएगा। साथ ही कहा कि इसकी कहानी काफी अहम है, जिससे लाखों लोगों को अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरणा मिलेगी। कार्तिक के वर्क फंट की बात करें तो उनकी आगामी फिल्म भूल भुलैया 3 है। इसमें वह तृप्ति डिमरी के साथ नजर आएंगे। साथ ही विद्या बालन और माधुरी दीक्षित भी फिल्म का हिस्सा हैं। इसके अलावा उनके पास आशिकी 3 भी है।

गुलशन देवैया को हरलीन के साथ काम करना है पसंद

गुलशन देवैया अपनी आगामी वेब सीरीज 'बैड कॉप' के प्रमोशन में जुटे हुए हैं इस सीरीज में वह अनुराग कश्यप और हरलीन सेठी के साथ नजर आएंगे। अभिनेता ने हरलीन सेठी के साथ अपने अनुभवों को साझा किया। गुलशन देवैया ने कहा कि इससे पहले उन्होंने हरलीन को 'कोहरा' में देखा था, हालांकि उनकी मुलाकात काफी कम हुई थी। अभिनेता ने बताया कि उनकी अच्छी दोस्ती थी, वह उन्हें काफी पसंद करते हैं और प्यार भी। गुलशन देवैया ने कहा, सीन के दौरान हम एक दूसरे की काफी मदद करते थे। गुलशन ने कहा कि वह फिर से हरलीन के साथ काम करना चाहते हैं। 'बैड कॉप' 21 जून को डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर स्ट्रीम होगी।

संक्षिप्त खबरें

33 लीटर विदेशी शराब के साथ एक युवक गिरफ्तार

बरियारपुर (मुंगेर)। थाना क्षेत्र के ऋषि कुंड हाल्ट समीप से 33 लीटर विदेशी शराब के साथ एक युवक को बरियारपुर पुलिस ने गिरफ्तार किया है ।थानाध्यक्ष राजेश कुमार ने बताया की गुप्त सूचना मिली थी कि एक युवक किसी ट्रेन से अवैध विदेशी शराब लेकर आने वाला है सूचना के आधार पर एस आई रविंद्र कुमार के नेतृत्व में एक टीम गठित की गई और ऋषि कुंड हॉल्ट के समीप संध्या में निगरानी की जाने लगी एक युवक विजयनगर निवासी अभय कुमार को जब तलाशी ली जाने लगी तो उसके बैग से 33 लीटर विदेशी शराब बरामद हुआ जिसमें रॉयल स्टेट 750 एमएल के 28 बोतल , इंपीरियल ब्लू 750 एमएल के 06 बोतल मैजिक मोमेंट 750 एमएल के 05 बोतल एवं ऑफ्टर डार्क 750 एमएल के 05 बोतल सहित कुल 33 लिटर विदेशी शराब बरामद हुआ गिरफ्तार युवक को न्यायिक हिरासत में मुंगेर भेज दिया गया ।

जमीनी विवाद को लेकर मारपीट में आधा दर्जन घायल

मशरक। मशरक के बहरौली गांव में जमीनी विवाद में जमकर मारपीट में आधा दर्जन व्यक्ति घायल हो गए। घायल सभी को इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मशरक में भर्ती कराया गया। घायल बहरौली गांव निवासी स्व उगर सिंह का 65 वर्षीय पुत्र नागेश्वर सिंह, नागेश्वर सिंह की 60 वर्षीय पत्नी सुनैना देवी और 45 वर्षीय पुत्र पप्पू कुमार सिंह, पप्पू कुमार सिंह की 40 वर्षीय पत्नी लालती देवी के रूप में हुई। ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार कर गंभीर रूप से घायल दो को सदर अस्पताल छपरा रेफर कर दिया। घटना के बारे में परिजनों ने बताया कि जमीनी विवाद को लेकर पहले से विवाद चल रहा है पंचायत के मुखिया अजीत सिंह ने मामले को पंचायती भी की थी पर मामले में फिर से विवाद खड़ा कर मारपीट कर दी गई। मौके पर थाना पुलिस जांच में जुटी है।

सात जुलाई को युवक की थी शादी, छत से गिरकर दिल्ली में हुई मौत

जलालपुर। प्रखंड के संवरी पूरी टोला के एक युवक की दिल्ली मे छत से गिरकर मौत हो गईमृतक राहुल कुमार, भिखारी गिरी का पुत्र थो उसकी सात जुलाई को शादी थीघर मे शादी की तैयारी चल रही थीसमाजसेवी विजय यादव ने उसकी मृत्यु पर गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए बताया कि वह दिल्ली में किसी निजी कम्पनी मे काम करता हैवह सरल व मिलनसार स्वभाव का थोउसकी मृत्यु की सूचनापर परिजनो का रो रोकर बुरा हाल था।

शराब पिने का विरोध करने पर युवक पर जान लेवा हमला, एक गिरफ्तार

बनियापुर। थाना क्षेत्र के हरपुर कराह गाव मे शराब पिने का विरोध करने पर युवक को बुरी तरह पिटकर जख्मी कर दिया गया,वही घर मे घुसकर नगदी छीनने की प्राथमिकी दर्ज कराकर छ लोगो को नामजद किया है। घटना के संबंध मे रंजीत साह ने भगवान बजार थाना मे दर्ज बयान मे बताया है कि अपने फुलवारी मे था तभी राजा सिंह आया हाथ शराब था जिसका विरोध करने पर गाली गलौज मारपीट पर उतारू हो गया वही जब बच कर घर पहुंचा ती लाठी डंडा रड लेकर बिनोद सिंह आयुष कुमार राकी समेत छ और दर्जन भर अन्य लोग पहुंचकर घर के औरतों को भी मारपीट कर जख्मी कर दिए वही राजा सिंह ने पैकेट से पचास हजार छीन लिया शोर होने पर ग्रामीणों के पहुने पर भाग खड़े हुए।घटना मे पुलिस अनुसंधान मे जुटी है।पुलिस ने घटना मे अभि तक एक को गिरफ्तार भी किया है।

बांझपन का बड़ा कारण जीवन शैली का ठीक नही होना

गया।मगध आब्स एण्ड ग्यानी सोसायटी ने भारतीय फर्टिलिटी सोसायटी के साथ मिलकर को एक बांझपन की कार्यशाला का आयोजन किया गया है।इस कार्यक्रम में देश के प्रमुख प्रजनन विशेषज्ञों ने भाग लिया और बांझपन दूर करने पर विस्तृत चर्चा किए,इस मौके पर बांझपन का मुख्य कारण महिलाओं में अंडाणु की समस्या, फैलोपियन ट्यूब रुकावट, एंडोमेट्रियोसिस,हार्मोनल असुंतलन, पुरुषों में शुक्राणु की कमी, वीर्य वाहनी में रुकावट, हार्मोनल असंतुलन एवं सक्रामण के बाते बताई गई है।इसकी पहचान होने पर आइवीएफ के विकल्प से लोग मुक्ति पा रहे हैं।खान पान, दिनचर्या सबसे बढा कारण है।इस कार्यशाला के वक्ता के रुप में संबोधित करते हुए आईजीएएमस पटना की डॉ कल्पना सिह ने ओवीरियन स्टिमुलेनशन में अभी के टेकनिक के बारे में पुरी जानकारी दी,नोवा आईवीएफ से आए डॉ रोहित गुटगुटिया ने पुरुष बांझपन के कारणों एवं उपचारो पर प्रकाश डाला,इसी तरह गया के मेडीवर्स हास्पिटल के डा तेजस्वी नंदन ने नयी तकनीकी मे सुधार के लिए व्यवहारिक सुझाव दिए हैं।

होमियोपैथ के जादूगर डॉ. घनश्याम चमत्कारिक ढंग से करते हैं दर्दों का इलाज

बेतिया(घनश्याम)। बदली हुई जीवनशैली और मिलावटी खानपान के चलते आजकल कम उम्र के लोगों के लोगों में भी कई तरह की दर्द की समस्या देखी जा रही है। अंग्रेजी दवाएं खा-खाकर आम आदमी परेशान हो चुका है और दर्द है कि जाने का नाम नहीं लेता। ऊपर से इसके दुष्प्रभाव अलग से है। दर्द चाहे हाथ या पैर के जोड़ों में हों, या हड्डियों में या फिर नसों में, जब उग्र प्रभाव दिखाता है तो क्या पुरुष, क्या महिला। किसी की भी पूरी दिनचर्या बिगड़ जाती है।

लेकिन अब चंपारणवासियों के लिए खुशखबरी है कि ऑर्गनाइजेशन फॉर होमियो मिशन, बेतिया के जिलाध्यक्ष होमियोपैथ चिकित्सक डॉ. घनश्याम ने एक नई विधि से अब तक हजारों रोगियों को स्वस्थ किया है। इनका शहर के नया बाजार चौक स्थित सविता होमियो क्लिनिक एंड रिसर्च सेन्टर संचालित है। जहां रोज सैकड़ों रोगियों की भीड़ लगती है। इनकी दवा से एक सप्ताह से लेकर 90 दिनों में फर्क साफ-साफ नजर आता है।

ग्रामीणों में फैलाई जागरूकता: वे बताते हैं कि पहले ये पैथ पढ़े-लिखे और शहरी समाज तक ही सीमित था। अब उनकी जादुई चिकित्सा का परिणाम है कि ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों का विश्वास होमियो चिकित्सा की ओर बढा है। अखबारों व सोशल मीडिया होमियो चिकित्सा को लेकर लिखे गए आलेख और सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में शिविर लगाकर लगातार लोगों को जागरूक किया जा रहा है। इसका सकारात्मक असर अब नजर आने लगा है।

उनका कहना है कि आज के परिवेश में रोगियों के शरीर में दर्द के कई कारण बन रहे। यूरिक एसिड, कोलेस्ट्रॉल बढ़ जाने या जोड़ों में ग्रीस (साइनोवियल फ्लूड) सुख जाने से, ज्यादा वजन से घुटनों पर जोर पड़ने के चलते। नसों में साइटिक या पुरानी चोट के कारण भी आगे चलकर समस्या गंभीर हो जाती है। रोगी से पूछताछ कर समस्या का पता लगाया जाता है और दवा दी जाती है। होमियोपैथ में हर रोगी के लिए अलग दवा होती है।

कई प्रकार के रोगों का किए हैं सफल इलाज: डॉ. घनश्याम ने साइटिका व गठिया के अलावे फैटी लिवर, एंजाइटी, डिप्रेशन, अनिद्रा, एक्जिमा, सफेद दाग, सोरियासिस, पाइल्स, मुंहासे, हेयर फॉल, सिफलिस, चकत्ते, दाद, एलर्जी, अस्थमा, कई प्रकार के घावों व चर्म रोग आदि अनगिनत रोगों के इलाज में महारथ हासिल की है। इसकी बदौलत इन्होंने बेतिया, बगहा, नेपाल व उत्तरप्रदेश, मोतिहारी की सीमा से सटे गांवों में अपनी अलग पहचान बनाई है

बता दें कि पूर्वी चंपारण के हरसिद्धि कनछेदवा के निवासी डॉक्टर घनश्याम ने बहुत कम उम्र में ही मुजफ्फरपुर से बीएचएमएस की डिग्री ली। कुछ वर्षों तक इसी शहर के दो नामी चिकित्सकों के सान्निध्य में इलाज का मूल मंत्र हासिल किया। इसके बाद इन्होंने वर्ष 2012 में बेतिया शहर को अपनी कर्मभूमि बनाई। यह सफर लगातार जारी है। वे बताते हैं कि माता जी का सपना था कि एक अच्छा चिकित्सक बनकर कम पैसे में ग्रामीण, गरीब मरीजों का इलाज करूं। इसलिए मां के नाम से क्लीनिक संचालित है।

मिला है सम्मान: वर्ष 23 में इन्हें पटना में बिहार होमियो रत्न एवं सिंगापुर में एक विशेष समारोह में अंतरराष्ट्रीय होमियो रत्न से सम्मानित किया गया। कई जगहों पर सेमिनारों में जाकर इन्होंने अन्य चिकित्सकों क बीच अपना अनुभव बांटकर वाहवाही लूटी है। देश-विदेश में सम्मान मिलने का ये सफर अभी जारी है। हालांकि डॉ. घनश्याम बताते हैं कि कोई भी चिकित्सक सम्मान का नहीं, बल्कि अपने रोगियों से मिले सकारात्मक फीडबैक का भूखा होता है।

होम्योपैथिक उपचार का नहीं है साइड इफेक्ट: पहले होमियोपैथिक दवाओं को लेकर कई सारे मिथक प्रचलित थे। कुछ फर्जी चिकित्सकों ने भी नकारात्मकता फैलाई। जैसे कि दवाओं का असर देरी से होता है। इलाज के दौरान ये मत खाओ, वो मत खाओ। लेकिन अब ऐसी बात नहीं है। सविता होमियो क्लीनिक रिसर्च सेंटर में जर्मन व इंडियन होमियोपैथी के नेचुरल एवं उच्च क्वालिटी दवाओं का प्रयोग किया जाता है। इन दवाओं की उचित पोटेंसी व सही खुराक से रोगियों को जल्दी राहत मिलती ही है। इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होता है।

कुल देवी को अपने घर में ले जाने को लेकर दो पड़ोसी के बीच जमकर हुई मारपीट

प्रात: किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। नगर पंचायत के झिकुली में दो पड़ोसी परिवार आपस में भिड़े एक पड़ोसी के घर में कुलदेवता थे जिसे दूसरे पीडोसी अपने घर में कुल देवता को ले जाना चाहते थे। दोनो पड़ोसी रिश्ते में चचेरे भाई लगते है। जानकारी के अनुसार राकेश यादव के घर में कुल देवता स्थापित थी जिसे उसके चचेरे भाई सुदामा कुमार ले जाना अपने घर में चाहता था जिसको लेकर कई दिनों से दोनो परिवारों के बीच विवाद हो रहा था वही आज सुदामा कुमार राकेश के घर कुल देवी को ले जाना चाहता था जिसको लेकर राकेश यादव के परिवार वालों ने मना कर दिया जिसके बाद दोनो परिवार के बीच लाठी डंडे से मारपीट शुरू हो गई देखते देखते गोलीबारी की घटना घटित हो गई इस मारपीट व गोलीबारी की घटना में दोनो ओर से सात लोग गंभीर रूप से घायल हो गए जिसमे राकेश यादव दाहिने कांख में गोली छूते हुए निकल गई। घटना के घायल के परिजन व ग्रामीणों ने मिलकर सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ केंद्र संग्रामपुर में भरती कराया गया जहां गंभीर रूप से घायल राकेश यादव और सुदामा कुमार को बेहतर इलाज के लिए भागलपुर मायागंज अस्पताल रेफर कर दिया। इस घटना में राकेश यादव, संचिता कुमार,मुकेश यादव,विक्रम कुमार,सुदामा कुमार एवं सुबोध यादव घायल हुए। वही घायलों का इलाज सामुदायिक स्वास्थ केंद्र संग्रामपुर में चल रहा है।घटना की जानकारी मिलने के बाद संग्रामपुर थाना रूबी कांत कच्छप मौके वारदात पर पहुंचे और घायलों से बात की ।वही पुलिस ने बताया की दोनो परिवार द्वारा आवेदन अब तक नही दिया गया है आवेदन मिलने पर प्रथामिकी दर्ज कर कार्यवाही की जायेगी।

कुमारखंड में उदघाटन मैच में खगड़िया (बिहार) टीम ने हल्दीबाडी (बंगाल) टीम को 3-0 से हराया

कुमारखंड में स्व महेंद्र कुमार सिंह मेमोरियल राज्य स्तरीय महिला फुटबॉल टुनार्मेंट का हुआ आगाज

प्रात: किरण संवाददाता

कुमारखंड प्रखंड मुख्यालय परिसर स्थित खेल मैदान पर स्व. महेंद्र कुमार सिंह मेमोरियल राज्य स्तरीय महिला फुटबॉल टूनार्मेंट का उदघाटन सोमवार को मुख्य अतिथि डीडीसी अवधेश कुमार आनंद ने दीप प्रज्वलित कर किया। प्रखंड में पहली बार आयोजित राज्य स्तरीय महिला फुटबॉल टूनार्मेंट के उदघाटन करते हुए डीडीसी ने कहा कि इस तरह खेल का आयोजन होने से ग्रामीण क्षेत्रों में युवा व युवतियों का खेल खेल के प्रति झुकाव बढ़ेंगे और प्रतिभाएं उभर कर सामने आएंगी। उन्होंने टूनार्मेंट के आयोजन के लिए प्रखंड प्रमुख सिंधी सूर्य, प्रमुख प्रतिनिधि अरुण कुमार सिंह, पूर्व जिला परिषद रुबी देवी और युवा समाजसेवी प्रिंस कुमार सहित आयोजन से जुड़े सभी लोगों का आभार व्यक्त किया। इससे पहले प्रमुख प्रतिनिधि अरुण कुमार सिंह ने मुख्य अतिथि डीडीसी को शॉल, माला व बुके देकर सम्मानित किया। वहीं पंचायत समिति सदस्य विनय कुमार साह ने बीडीओ प्रियदर्शी राजेश पायरट को शॉल व माला पहनाकर स्वागत किया। इसके बाद मुख्य अतिथि सहित अन्य लोगों ने दोनों टीम के खिलाड़ी से परिचय प्राप्त किया और टॉस के बाद खेल की शुरूआत की गई। फुटबॉल टुनार्मेंट के पहले लीग मैच में खगड़िया बिहार बनाम हल्दीबाड़ी (सिलीगुड़ी) बंगाल के बीच मुकाबला खेला गया। जिसमें शुरूआत से ही खगड़िया बिहार की टीम ने अपनी बढ़त बनाए रखा। खगड़िया की 17 नंबर जर्सी वाले खिलाड़ी सुष्मिता राय ने पहला गोल दागा। जबकि खगड़िया के ही आठ नंबर जर्सी वाले खिलाड़ी रूपाली ने दूसरा गोल कर टीम की बढ़त 2-0 कर दिया। इसके बाद अंतिम समय में खगड़िया टीम के कप्तान 10 नंबर जर्सी वाले खिलाड़ी अंजली गुप्ता ने तीसरा गोल कर टीम को 3-0 की बढ़त दिलाते हुए हल्दीबाड़ी सिलीगुड़ी बंगाल टीम को हराकर फाइनल में स्थान सुरक्षित कर लिया। इस दौरान निर्णायक रेफरी की भूमिका में दिलीप कुमार और लाइंस मैन की भूमिका में परिमल कुमार व दुगानंद प्रसाद मौजूद थे। पहली बार इस प्रकार के राज्य स्तरीय टूनार्मेंट को देखने के लिए हजारों की संख्या में खेलप्रेमी शुरू से अंत तक डटे रहे। टूनार्मेंट को सफल बनाने में आयोजन समिति के सचिव शिवनारायण यादव, कोषाध्यक्ष परिमल यादव, उपसचिव कृष्ण मोहन यादव के अलावा प्रिंस कुमार, व्यवस्थापक के रूप में संत कुमार, कंचन कुमार कुंज, विनय साह, सुरेंद्र सरदार, रौशन कुमार, दिलीप कुमार, जयकुमार सिंह, विजेंद्र झा, प्रमोद उपेंद्र यादव, ललन कुमार यादव, सुशील चौधरी, सुन्देश्वरी यादव, नरेश कुमार, किशोर कुमार, रावेंद्र कुमार , बेचन यादव, राजीव कुमार बबलू, मनोज कुमार यादव, रत्नेश कुमार यादव, एसआई गणेश पासवान व लूतन राम सहित अन्य सुरक्षा कर्मी मौजूद थे।

हर्षोल्लास के साथ मनाया गया बकरीद का त्योहार

प्रात: किरण संवाददाता

तारापुर(मुंगेर)। ईद -उल -अजहा बकरीद का त्योहार तारापुर के मुस्लिम बाहुल्य गांव गाजीपुर लखनपुर खानपुर मदारपुर रामपुर भतेरी बिशनपुर गौरहो इत्यादि गांवों में समर्पण और बलिदान के प्रतीक के रूप में मुस्लिम समाज के लोगों द्वारा हर्षोल्लास के साथ सोमवार को मनाया गया । गौरतलब है कि पहले सुबह ईदगाह मैदान गाजीपुर में 6:30 बजे मौलाना हजरत अजमत हुसैन ने बकरीद की नमाज उपस्थित लोगों को पढ़ाया । बता दें की नमाज अदा के बाद मैदान में मौजूद जिला परिषद सदस्य पिंकी कुमारी राजद के प्रदेश सचिव जितेंद्र कुशवाहा राजद नेता मंटू यादव ने बकरीद की मुबारकबाद एवं शुभकामनाएं लोगों को दिया । बकरीद त्यौहार को लेकर खुद ईदगाह मैदान पर अनुमंडल पदाधिकारी राजेश रंजन कुमार प्रखंड विकास पदाधिकारी संजय कुमार थाना अध्यक्ष अरविंद कुमार सहित पुलिस बल के जवान मौके पर तैनात थे । प्रशासन ने भीषण गर्मी को देखते हुए एंबुलेंस के साथ डॉक्टर की टीम भी मैदान के आसपास मौजूद रखा था । पदाधिकारी ने भी लोगों को बकरीद की मुबारकबाद एक दूसरे को दिया ।

इधर मोहम्मद मुजाहिद एवं मोहम्मद इमरान इत्यादि ने बताया कि इस्लाम धर्म में बलिदान का बहुत अधिक महत्व है। आगे बताया कि अपनी सबसे प्यारी चीज रब की राह में खर्च करने से नेकी एवं भलाई होती है । बकरीद को लेकर लगभग सभी मुस्लिम बाहुल्य गांवों में दिनों भर एक दूसरे से गले मिलने से लेकर उत्सव का माहौल रहा ।

अखंड अष्टयाम और रूद्राभिषेक को लेकर उमड़ी भीड़

प्रात: किरण संवाददाता

मशरक नगर पंचायत के प्रसिद्ध बीएसएम ग्लोबल स्कूल,बासुदेव नगर के प्रांगण में आयोजित अखंड अष्टयाम के दूसरे दिन रूद्राभिषेक अनुष्ठान का आयोजन हुआ। जिसमे काफी संख्या मे बनियापुर विधानसभा क्षेत्र के लोग शामिल हुए।यजमान विधायक केदारनाथ सिंह द्वारा आगंतुक सभी लोगो को गेरूआ गमछा देकर यज्ञ पंडाल को एक रंग मे रंग दिया।जिसके बाद सभी लोग श्रद्धापूर्वक रूद्राभिषेक सहित अखंड अष्टयाम के सभी विधि-विधान मे शामिल हुए। रूद्राभिषेक यज्ञ का अनुष्ठान विधायक केदारनाथ सिंह ने अपनी धर्मपत्नी बबिता देवी, भाई मदन सिंह,और पुत्र रितुराज सहित सहित परिवार के अन्य सदस्यो के साथ किया। भोलेनाथ की श्रृंगार के लिए बंगाल से विशेष तरह के पुष्प मंगवाए गए थे। आचार्य सुमन बाबा की अगुआई मे पप्पु बाबा, सतेन्द्र बाबा,चुनमुन बाबा,नागेन्द्र तिवारी के अलावे दर्जनो आचार्य द्वारा विधिवत पूजा अनुष्ठान और हवन-पूजन करवाया गया।पुजा पाठ मे मुख्य रूप से पूर्व मंत्री गौतम सिह,पूर्व विधायक विनय सिंह,जदयू नेता पुरुषोत्तम सिंह गुड्डा,प्रखंड प्रमुख रवि प्रकाश सिंह, पूर्व प्रमुख जितेंद्र राय, विक्रमा सिंह,पूर्व सरपंच जितेंद्र सिंह, कुमार प्रमोद, शैफ अलि,मुखिया बच्चालाल साह सहित अन्य शामिल हुए।उधर अखंड अष्टयाम के बाद राम लला की शोभा यात्रा निकाली गयी।पालकी पर विराजमान राम लला को नगर पंचायत के प्रमुख मंदिर मशरक मुन्नी मोड़ की रामजानकी मंदिर, गंडक परिसर के शिव मंदिर, स्टेशन परिसर के शिव मंदिर, मईया स्थान के देवी मंदिर,गोला रोड के हनुमान मंदिर की परिक्रमा कर यज्ञ मंडप बीएसएम ग्लोबल स्कूल लाया गया।यज्ञ के दोनो दिन विशाल भंडारे का आयोजन किया गया था।जहां काफी संख्या मे लोगो ने प्रसाद ग्रहण किया।

गोरखपुर हटिया मौर्य एक्सप्रेस के विलंब से ट्रेन चलने पर यात्रियों ने किया हंगामा

एकमा। सोमवार को एकमा रेलवे स्टेशन पर रेल यात्रियों ने गोरखपुर हटिया मौर्य एक्सप्रेस के तीन घण्टे विलंब से चलाये जाने पर जोरदार हंगामा किया।गोरखपुर से हटिया तक चलने वाली मौर्य एक्सप्रेस के तीन घंटे विलंब से एकमा स्टेशन पर पहुंची। उससे पहले मौर्य एक्सप्रेस से यात्रा करने वाले यात्री इस भीषण गर्मी में स्टेशन परिसर में ट्रेन के आने का इंतजार करते रहे। बिना सूचना के ट्रेन बिलम्ब होने से यात्रियों का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया और नाराज रेल यात्रियों स्टेशन मास्टर के कार्यालय पहुंचकर हंगामा करना शुरू कर दिया। वही तीन घंटे बाद जब गोरखपुर हटिया मौर्य एक्सप्रेस एकमा स्टेशन पहुची तब जाकर यात्रियों का गुस्सा शान्त हुआ स्टेशन अधीक्षक सुरेंद्र कुमार ने बताया कि गोरखपुर में ही तकनीकी गड़बड़ी होने के कारण तीन घंटे विलम्ब से चली।

वर्षा की आस में धान किसान परेशान

प्रात: किरण संवाददाता

सदर मुंगेर। बरियारपुर प्रखंड अंतर्गत धान की खेती करने वाले किसान वर्षा की आस में परेशान हो रहे हैं प्रकृति पर निर्भर किसान धान का बिचड़ा पानी के अभाव में खेतों में नहीं डाल पा रहे हैं जबकि धान की खेती 25 मई से रोहिणी नक्षत्र का प्रवेश करते ही खेतों में बिचड़े डालना प्रारंभ कर देते हैं परंतु इस वर्ष लगभग एक माह होने को आ रहे हैं और वर्षा का नामोनिशान खेतों में नहीं हो रहा है सभी धान के खेत सूखे पड़े हुए हैं खेतों की उपज से अपने परिवार का भरण पोषण करने वाले किसान अपने सूखे खेतों को देखकर परेशान होते जा रहे हैं और उनके चेहरे पर मायूसी देखी जा रही है कृषि समन्वयक राणा प्रताप सिंह ने बताया कि खेतों में धान का बिचड़े डालना रोहिणी नक्षत्र का प्रवेश करते ही प्रारंभ हो जाता है प्रखंड के रतनपुर करहरिया दक्षिणी पंचायत एवं बरियारपुर दक्षिणी पंचायत सहित कल 870 हेक्टेयर खेतों में धान की खेती की जाती है लेकिन वर्तमान समय तक एक भी हेक्टेयर जमीन में धान की खेती प्रारंभ नहीं की गई है जबकि 25 मई से ही धान का बीचड़े डालना खेतों में प्रारंभ हो जाना चाहिए धान की खेती में देर होने के कारण धान की उपज में थोड़ी कमी आएगी जिससे किसानों को आर्थिक नुकसान होगा किसानों को सरकार के द्वारा अनुदानित दर पर मिलने वाली भिन्न-भिन्न किस्म के धान के 25 क्विंटल बीज में से लगभग 90 प्रतिशत बीज का वितरण किसानों को समय पर कर दिया गया है।

जन सुराज की ओर से चार दिवसीय वॉलीबॉल खेल का फाइनल मुकाबले का आयोजन

बेतिया।सिरिसिया थाना क्षेत्र के विश्वास सिरिसिया खेल के मैदान में जन सुराज की ओर चार दिवसीय वॉलीबॉल खेल का फाइनल मुकाबले का आयोजन किया गया ।जिसका आयोजनकर्ता जनसुराज जिला उपाध्यक्ष कमलेश कुमार ने संयुक्त रूप से फिता काटकर खेल का शुभारंभ किया। फाइनल मुकाबले में विश्वास सिरिसिया वॉलीबॉल क्लब बनाम पारा क्लब टीम के खिलाड़ियों के बीच खेला गया। जिसमें विश्वास सिरिसियां टीम विजेता एवं पारा क्लब टीम उपविजेता ।

इस खेल का आयोजनकर्ता जनसुराज के ओर से एवं व्यवस्थापक दिनेश सिंह ने किया। चनपटिया प्रखंड के पूर्व प्रमुख कमलेश कुमार ने कमलेश ने खिलाड़ियों को हौसला बढ़ाते हुए कहा कि,पढाई के साथ खेल जरूरी है । खेल को खेल के भावना से खेलना चाहिए खेल में हार जीत होती रहती है जिससे शारीरिक एवं मानसिक दोनों का विकास होता है । ई सिकंदर चंद्रा ने कहा कि विजेता एवं उपविजेता के खिलाड़ियों को उपहार स्वरूप राशि एवं मैडल देकर खिलाड़ीयों को सम्मानित किया । इस मौके पर एमएलसी अफाक अहमद,मदन मोहन तिवारी,समीक्षा शर्मा , माधो त्रिपाठी,मैच रेफरी प्रेम झा सहित सैकड़ो की संख्या में दर्शन मौजूद रहे।

बकरीद को लेकर सुबह से मस्जिदों में नमाज के लिए जुटी रही भीड़

शेरघाटी।बकरीद को लेकर सुबह से ही शहर के विभिन्न मस्जिदों में ईद उल अजहा की नमाज अदा की गई सर्व प्रथम शहर के लोदी शहीद मस्जिद, मौलाना दरगाह,जामा मस्जिद, मदरसा महमुदिया,काजी बाग, इकरा मस्जिद, लग्न ताकिया मस्जिद में नमाज अदा की समाजसेवी आबीद ईमाम ने बताया की सुबह में लोग मस्जिद में नमाज अदा करके कुबार्नी किए वहीं नगर परिषद की ओर से सफाई का बेहतरीन किया गया और हर मस्जिद के पास पुलिस प्रशासन मुस्तैद रही,वही उक्त पर्व को लेकर हर जगह पर पुलिस गस्ती करती रही।

9 जून से बिहारशरीफ क्षेत्र से झाझा के एक युवक है लापता

प्रात: किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] झाझा नगर क्षेत्र के रहने वाले एक युवक का बीते दस जून से नालंदा से लापता हो जाने का मामला प्रकाश में आया है। पुत्र की किसी भी तरह की कोई जानकारी नही मिलने परिजनों में परेशानी देखी जा रही है। इस संदर्भ में नगरक्षेत्र के हेलाजोत बसस्टैंड के रहने वाले नंदलाल साव ने जिला के वरीय पदाधिकारी से अब मदद की गुहार लगाया है। पीड़ित पिता नंदलाल साव ने बताया कि मेरा पुत्र सूरज कुमार 9 जून को झाझा से पटना के लिए रवाना हुआ और तीन बजे उससे संपर्क किया तो उसने पटना न जाकर अपने पड़ोसी रिंकू के ससुराल बिहार शरीफ अंतर्गत बोकना गांव जाने की बात किया।उसके बाद रात्रि में फोन किया तो मेरा बेटा फोन रिसीव नही किया और उसके बाद मेरे पुत्र का दूसरे दिन से मोबाइल बंद हो गया। जिसके बाद नालंदा जिला अंतर्गत भागन बीघा थाना में इसकी जानकारी दिया। पूछताछ में रिंकू के ससुराल वालो ने बताया कि 9 जून को आया था परंतु वह थोड़े देर बाद एक बाइक पर सवार होकर वापस चला गया। पुत्र की खोजबीन में परेशान पिता और परिजनों ने आशंका जताया कि मेरे पुत्र की हत्या हो गई। वही पीड़ित पिता और पूरा परिवार जमुई के वरीय पदाधिकारी से इस मामलें में मदद करने की गुहार लगाया है।

टाटा साल्ट इम्यूनो बना रहा है देश के स्वास्थ्य को और भी सशक्त

सीतामढ़ी। आयोडीन युक्त नमक खंड में अग्रणी टाटा साल्ट ने योगदान में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए दो साल पहले टाटा साल्ट इम्यूनो की शुरूआत की थी। यह खाद्य नमक खंड में पहला ऐसा नमक है, जिसमें आयोडीन के साथ जिंक शामिल है। जिंक एक आवश्यक पोषक तत्व है, जो स्वास्थ्य प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत और तंदुरुस्त रखने में मदद करता है। यह ब्रांड संतुलित आहार को बढ़ावा देता है। टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स की अध्यक्ष, पैकेज्ड फूड्स- इंडिया दीपिका भान कहती हैं कि संतुलित आहार में ऐसे नमक का सेवन करना जरूरी है, जो आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करता हो। हम उपभोक्ताओं को सोच-समझ कर अपने नमक का विकल्प चुनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हाल ही में दुनिया भर में नमक जागरूकता सप्ताह मनाया गया, इस अवसर पर उपभोक्ताओं से सोच-समझकर नमक के विकल्पों के सेवन करने की सिफारिश की है।

कमाने निकला व्यक्ति नही लौटा घर महिला ने ठीकेदार पर हत्या का लगाया आरोप

प्रात: किरण संवाददाता

शेरघाटी।घर से कमाने निकला व्यक्ति का अब तक नहीं चला पता घटना को लेकर परिजनों ने शेरघाटी थाने में किया शिकायत मालूम हो कि थाना क्षेत्र के दक्षिण खापगांव के सावित्री देवी नामक महिला ने शिकायत करते हुए कहा कि मेरे पति को गांव के लिए एक ठेकेदार सहदेव यादव ने मेरे पति को बहला फुसलाकर लुधियाना कमाने के लिए ले गया था। कुछ दिन तक फोन पर बातचीत होता रहा लेकिन अचानक बीते 15 दिनों से जब फोन पर बातचीत नहीं हो रहा है, तो सावित्री देवी को अनहोनी होने की आशंका जाहिर हुई उसके बाद ठेकेदार को उसने फोन किया और कहा कि मेरे पति से बात करवाओ ठीकेदार ने उसके पति से बात करने से इनकार कर दिया तो महिला विचलित हो गई। और पुलिस से शिकायत की तभी पुलिस ने आवेदन लेने से इनकार कर दिया। लेकिन हैरान परेशान महिला ने अनहोनी की आशंका जताते हुए महिला ने पुलिस से दुबारा शिकायत की पुलिस ने आवेदन लेते हुए मामले की छानबीन करने का आश्वाशन दिया है। महिला सावित्री देवी ने बताया कि मेरे चार छोटे-छोटे बच्चे हैं और पति के कमाई से ही भरण पोषण होता है, उनसे बात नहीं होने से काफी हैरान परेशान हूं वही छोटे-छोटे बच्चे अपने पिता को न देखकर काफी विचलित और परेशान दिख रहे हैं। इधर पुलिस से महिला ने यह भी आरोप लगाते हुए कहा कि ठेकेदार के द्वारा मेरे पति को हत्या कर दी गई है,

जिसके कारण उनसे बात नहीं हो पा रही है हालांकि महिला का कहना है कि किसी व्यक्ति के द्वारा सूचना दिया गया।

कि इसके पूर्व उसका हाथ टूट गया था उसकी इलाज के दौरान मौत हो गया है।

संक्षिप्त समाचार

स्ट्राइकर्स की ब्लास्टर्स पर रोमांचक जीत

मोहाली, एजेंसी। जेके सुपर स्ट्राइकर्स ने रविवार को अपने युवा खिलाड़ियों के संयुक्त प्रयास की बदौलत शानदार जीत दर्ज की। मोहाली के आईएस बिंद्रा स्टेडियम में पंजाब क्रिकेट एसोसिएशन(पीसीए) द्वारा आयोजित दूसरे शेर-ए-पंजाब टी20 कप में टीम ने बीएलवी ब्लास्टर्स पर रोमांचक मुकाबले में 11 रन से जीत दर्ज की। मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए जेके सुपर स्ट्राइकर्स ने 20 ओवर में 187/5 का विशाल स्कोर बनाया। ओपनर शिवेन रखेजा ने अपनी शानदार फॉर्म जारी रखते हुए 26 गेंदों में 46 रन की पारी खेलकर स्ट्राइकर्स को शानदार शुरुआत दिलाई। दूसरे ओपनर कार्तिक शर्मा ने उनका अच्छा साथ दिया, जिन्होंने 15 गेंदों में 26 रन बनाए। दोनों ने 4.3 ओवर में 59 रन जोड़े। मध्यक्रम के बल्लेबाज आर्यन यादव(20 गेंदों में 25 रन) और शहबाज संधू (18 गेंदों में 28 रन) ने स्ट्राइकर्स को मजबूती दी। आखिरी क्षणों में शानदार प्रदर्शन करते हुए गौरव मार्कन ने 19 गेंदों पर 39 रनों की पारी खेली और स्ट्राइकर्स को 20 ओवर में 187 रनों तक पहुंचाया। ब्लास्टर्स की ओर से बाएं हाथ के स्पिनर हरप्रीत बराड़ ने 22 रन देकर तीन विकेट लिए।

जवाब में ब्लास्टर्स लक्ष्य से 11 रन पीछे रह गए। बाएं हाथ के बल्लेबाज हरनूर पन्नू ने 48 गेंदों पर 73 रनों की शानदार पारी खेली, लेकिन वे जीत नहीं दिला सके। अपनी काबिलियत साबित करते हुए हरनूर ने चार गगनचुंबी छक्के लगाए। कप्तान नमन धीर बल्ले से ज्यादा कुछ नहीं कर सके और 10 रन बनाकर आउट हो गए। उन्हें सनवीर सिंह ने आउट किया। फॉर्म में चल रहे बल्लेबाज अनमोल मल्होत्रा ने 40 गेंदों पर 55 रनों की पारी खेलकर अपनी टीम को लक्ष्य के करीब पहुंचाया, लेकिन उन्हें दूसरे छोर से ज्यादा सहयोग नहीं मिला। टीम ब्लास्टर्स 20 ओवर में 8 विकेट पर 176 रन ही बना सकी। विजेता टीम के लिए हर्षदीप सिंह ने शानदार गेंदबाजी करते हुए पांच विकेट लिए। सनवीर सिंह को दो सफलताएं मिली, जबकि प्रेरित दत्ता ने एक बल्लेबाज का शिकार किया।

स्मृति मंधाना 7000 अंतर्राष्ट्रीय रन बनाने वाली दूसरी भारतीय महिला बनीं

बेंगलुरु, एजेंसी। भारतीय महिला टीम की ओपनर स्मृति मंधाना दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ बेंगलुरु में एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में रविवार को पहले वनडे के दौरान 7000 अंतर्राष्ट्रीय रन पूरे करने वाली दूसरी भारतीय महिला बन गयी हैं। मंधाना ने पूर्व कप्तान मिताली राज के बाद यह उपलब्धि हासिल की है। मिताली ने अपने शानदार करियर में सभी फॉर्मेट में 10,868 रन बनाये थे।

मंधाना के बाद सबसे करीबी मौजूदा भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर हैं जिन्होंने अब तक 6,870 रन जुटा लिए हैं। भारतीय ओपनर ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले वनडे में 127 गेंदों में 12 चौकों और एक छक्के की मदद से 117 रन बनाये जो घरेलू जमीन पर उनका पहला और कुल छठा शतक है।

इस बीच दीप्ति शर्मा ने अपनी 37 रन की पारी के दौरान 200 अंतर्राष्ट्रीय मैचों में 2000 वनडे रन पूरे कर लिए हैं।

टी 20 विश्व कप से बाहर होने के बाद लंदन में छुट्टी मनाएंगे बाबर सहित छह खिलाड़ी !

नई दिल्ली, एजेंसी। पाकिस्तानी टीम के टी 20 विश्व कप में अभियान के निराशाजनक रूप से ग्रुप चरण में समाप्त होने के बाद कप्तान बाबर आजम और पांच अन्य खिलाड़ी मोहम्मद आमिर, इमाद वसीम, हारिस रउफ, शादाब खान और आजम खान ने पाकिस्तान लौटने से पहले लंदन में छुट्टियां मनाने का फैसला किया है। एक रिपोर्ट के अनुसार, ये छह खिलाड़ी मंगलवार को शेष टीम के साथ पाकिस्तान नहीं उतरेंगे। इन खिलाड़ियों ने लंदन में अपने मित्रों और परिवार के साथ समय गुजारने का फैसला किया है। कुछ खिलाड़ी यूनाइटेड किंगडम में स्थानीय लीग खेलने की योजना भी बना रहे हैं। इस बीच मुख्य कोच गैरी कर्स्टन और सहायक कोच अजहर महमूद अपने-अपने घरों के लिए रवाना होंगे। कोई नजदीकी सीरीज न होने के कारण पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने कोचिंग स्टाफ को अपने-अपने देश लौटने की अनुमति दे दी है। पकिस्तान का टी 20 विश्व कप के ग्रुप ए में निराशाजनक प्रदर्शन रहा और उसे आखिरी जीत रविवार को आयरलैंड के खिलाफ अपने अंतिम मुकाबले में तीन विकेट से मिली। उसे सह मेजबान अमेरिका और चिर-प्रतिद्वंद्वी भारत से हार का सामना करना पड़ा। उसने फिर कनाडा को सात विकेट से हराया। चार मैचों में चार अंकों के साथ पकिस्तान ग्रुप में तीसरे स्थान पर रहा और सुपर आठ में जगह बनाने से दूर रह गए। भारत और अमेरिका ने शीर्ष दो स्थान हासिल कर सुपर आठ में जगह बनायी। पाकिस्तानी टीम अगस्त में दो मैचों की घरेलू टेस्ट सीरीज में बांग्लादेश से भिड़ेगी, जिसके बाद इंग्लैंड का अक्टूबर में पकिस्तान का दौरा होगा।

कप्तानी के बारे में निर्णय पीसीबी को लेना है, मुझे नहीं: बाबर आज़म

लौडरहिल, एजेंसी। टी 20 विश्व कप से ग्रुप चरण में पाकिस्तान के बाहर होने के बाद बाबर आज़म के पाकिस्तान का कप्तान बने रहने को लेकर असमंजस की स्थिति बनी हुई है। हालांकि बाबर ने कहा कि वह इस संबंध में वह कोई भी निर्णय पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के साथ पाकिस्तान के वर्ल्ड कप अभियान की समीक्षा के लिए होने वाली मीटिंग के बाद ही लेंगे।

बाबर ने कहा, जब मैंने कप्तानी छोड़ी थी, तब मुझे यही लगा था कि मुझे आगे कप्तानी नहीं करनी चाहिए और इसीलिए मैंने खुद ही कप्तानी छोड़ने की घोषणा कर दी थी। इसके बाद मुझे वापस कप्तानी दे दी गई और यह पीसीबी का निर्णय था। जब मैं वापस जाऊंगा तब जो भी चीज़ें यहां घटित हुई हैं उनके ऊपर बोर्ड के साथ चर्चा करूंगा और अगर मुझे कप्तानी छोड़नी पड़ी तो मैं सार्वजनिक तौर पर इसकी घोषणा करूंगा। लेकिन अभी के लिए मैंने इस बारे में नहीं सोचा है, अंततः यह पीसीबी का निर्णय है। बाबर से जब यह पूछा गया कि क्या वह टी 20 वर्ल्ड कप 2024 के शुरुआती चरण में पाकिस्तान के बाहर होने की ज़िम्मेदारी लेते हैं? तब उन्होंने यही कहा, मैंने आपको जैसा कि पहले भी कहा कि हम एक व्यक्ति की वजह से नहीं हारे हैं, हम एक टीम के तौर पर जीतते या हारते हैं। आप कप्तान होने के संदर्भ में मेरे से यह सवाल कर रहे हैं लेकिन मैं हर खिलाड़ी की जगह नहीं खेल सकता। टीम में 11 खिलाड़ी होते हैं और हर किसी का अपना रोल होता है। हम यह स्वीकारते हैं कि हम एक टीम के तौर पर अच्छा नहीं खेले। उन्होंने कहा,जिस तरह की टीम हमारे पास थी उससे बेहतर परिणाम की अपेक्षा थी। एक कप्तान के तौर पर मैं किसी एक खिलाड़ी के ऊपर उंगली नहीं उठा सकता। कमी सभी 15 खिलाड़ियों में थी। हम समीक्षा करेंगे। एक कप्तान के तौर पर मेरा दायित्व यह है कि मैं निर्णय लेने वाले लोगों को अपना फ़ीडबैक दूं।

बाबर से एक बार फिर पूछा गया कि पाकिस्तान के ख़राब प्रदर्शन का दोष किसे दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, आप किसी एक व्यक्ति पर दोष नहीं मढ़ सकते। हम एक टीम के तौर पर अच्छा नहीं खेले। हर कोई हताश है। हम भी प्रशंसकों जितना ही हताश हैं। यह किसी एक की ग़लती नहीं है।

नेपाल की चुनौती को क़ाबूकर बांग्लादेश सुपर-8 में

किंग्सटॉउन (सेंट विन्सेंट), एजेंसी। बांग्लादेश ने सफलतापूर्वक अपने 106 के स्कोर का बचाव करते हुए नेपाल को भारतीय समयानुसार सोमवार को 21 रन से हराकर टी 20 विश्व कप के सुपर आठ चरण में प्रवेश कर लिया।

बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किये जाने के बाद बांग्लादेश की टीम 106 रन पर सिमट गयी। लेकिन तंजीम हसन साकिब ने नेपाल के शीर्ष क्रम को झकझोरा और मुस्तफिजुर रहमान के डेथ बोलिंग मास्टरक्लास ने बांग्लादेश को टी 20 विश्व कप इतिहास में सबसे कम स्कोर का बचाव करते हुए सुपर आठ में पहुंचने वाली जीत दिला दी। नेपाल की टीम 19.2 ओवर में मात्र 85 रन पर सिमट गयी। तंजीम हसन साकिब ने मात्र सात रन देकर चार विकेट झटके जिसके लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार मिला।

सुपर 8 में बांग्लादेश का सामना भारत, ऑस्ट्रेलिया और अफ़ग़ानिस्तान से होगा। बांग्लादेश ने इस जीत के साथ टी20 वर्ल्ड कप इतिहास के सबसे न्यूनतम स्कोर के बचाव का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। कुछ ही दिनों पहले यह रिकॉर्ड दक्षिण अफ़्रीका ने बांग्लादेश के ख़िलाफ़ ही अपने नाम किया था, जब उन्होंने 113 रनों के स्कोर का सफलतापूर्वक बचाव किया था।

बांग्लादेश को नेपाल ने पहले बल्लेबाज़ी के लिए आमंत्रित किया था और सोमपाल कामी ने शुरुआत में ही बांग्लादेश को झटका दे दिया। बांग्लादेश को लगातार लग रहे झटकों के बीच शाकिब अल हसन और महमूदुल्लाह में साझेदारी पनपी ही थी कि दोनों में ग़लतफ़हमी हुई और महमूदुल्लाह को रनआउट होकर जाना पड़ा। पिच पर स्पिनर्स को मदद मिल रही थी और दोहरा उछाल भी था। बांग्लादेश की पूरी टीम मिलकर किसी तरह 106 रन का स्कोर खड़ा कर पाई।

हालांकि एक मुश्किल विकेट को देखते हुए नेपाल के लिए इस लक्ष्य को हासिल करना उतना आसान नहीं रहने वाला था। तंजीम हसन साकिब ने शुरुआत में एक ही ओवर में दो झटके देकर नेपाल को पीछे धकेल दिया। यह इस मैच में पहला और सबसे बड़ा टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ क्योंकि इस क्षण के बाद नेपाल बांग्लादेश को मुश्किल में नहीं डाल पाई।

हालांकि बीच में दीपेंद्र ऐरी और कुशल मल्ला के बीच अर्धशतकीय साझेदारी हुई और ऐसा प्रतीत हुआ कि यहां से बांग्लादेश को चुनौती मिल सकती है। लेकिन तभी मुस्तफ़िज़ुर रहमान ने मल्ला को चलता कर बांग्लादेश की वापसी करा दी। 19वें ओवर में भी मुस्तफ़िज़ुर ने ऐरी का विकेट लेने के साथ साथ मेडन ओवर किया और ऐसा कर के उन्होंने बांग्लादेश की जीत पर मुहर लगा दिया। मुस्तफ़िज़ुर ने तीन तो वहीं तंजीम ने चार विकेट झटके। मुस्तफ़िज़ुर ने एक ओवर मेडन डालते हुए सिर्फ़ सात रन दिए। जबकि तंजीम ने दो ओवर मेडन डालते हुए चार विकेट लिए। तंजीम का यह गेंदबाज़ी आंकड़ा टी20 वर्ल्ड कप में बांग्लादेश की ओर से सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज़ी आंकड़ा भी है। पहली बार बांग्लादेश ने इस टूर्नामेंट के इतिहास में किसी एक संस्करण में तीन मैच जीते हैं।

Euro 2024:

इंग्लैंड-सर्बिया के फैंस भिड़े, एक-दूसरे को कुर्सी-बोतलें फेंक कर मारी, सामने आया मारपीट का वीडियो

बर्लिन, एजेंसी। अल्बानिया के कुछ फैंस भी इस हिंसक झड़प में शामिल थे, जो गेल्सेंकिर्चेन के एक बार में हुआ। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, अल्बानियाई फैंस ने सर्बियाई फैंस के खिलाफ विवाद शुरू किया, जो उनके कट्टर प्रतिद्वंद्वी हैं। इंग्लैंड ने अपने यूरो 2024 अभियान की शुरुआत रविवार को गेल्सेनकिर्चेन के एरिना औफशाल्के में सर्बिया के खिलाफ जीत के साथ की। इस रोमांचक मुकाबले में जूड बेलिंघम ने निर्णायक गोल दागा और इसकी बदौलत इंग्लैंड ने सर्बिया को 1-0 से हराया। ग्रुप सी के इस मुकाबले में इंग्लैंड की टीम ने 13वें मिनट में ही बढ़त हासिल की और फुल टाइम तक इसी बढ़त को बनाए रखा। हालांकि इस मैच से पहले इंग्लैंड और सर्बिया के फैंस के बीच हिंसक कहासुनी हुई। इसका वीडियो भी सामने आया है। अल्बानिया के कुछ फैंस भी इस हिंसक झड़प में शामिल थे, जो गेल्सेंकिर्चेन के एक बार में हुआ। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, अल्बानियाई फैंस ने सर्बियाई फैंस के खिलाफ विवाद शुरू किया, जो उनके कट्टर प्रतिद्वंद्वी हैं। क्षण भर बाद इंग्लैंड के फैंस भी अल्बानिया के फैंस के साथ मिल गए और यह एक बड़ा विवाद बन गया। घटना के कई वीडियो और तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हुई, जिनमें टूटी हुई मेज, कुर्सियां और कांच की बोतलें दिखाई दे रही हैं।

एक प्रत्यक्षदर्शी के हवाले से कहा, अचानक से कैफे में हिंसा शुरू हो गई। यह कहां से शुरू और किसने क्या शुरू किया यह स्पष्ट नहीं है लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था कि इंग्लैंड के फैंस का एक समूह बार में गया और वहां पहले से ही सर्बियाई फैंस मौजूद थे। सबने एक दूसरे पर टेबल, कुर्सियां और बोतलें फेंकीं और फिर कुछ देर बाद विवाद खत्म हो गया। प्रत्यक्षदर्शी ने कहा, एक आदमी के सिर में चोट लगी थी और खून बह रहा था। मुझे लगता है कि वह इंग्लिश फैन था। इंग्लैंड और सर्बिया के बीच मैच को बाद में जर्मन पुलिस ने सख्त कदम उठाते हुए जगह को खाली कराया और फिर सात सर्बियाई फैंस को हिरासत में लिया।

मैच की बात करें तो जूड बेलिंगहम ने मिडफील्ड में काइल वॉकर को एक शानदार पास दिया। इसके बाद बेलिंगहम ने बुकायो साका के क्रॉस को एक शानदार डाइविंग हेडर के साथ गोल पोस्ट के अंदर पहुंचाया। इंग्लैंड के लिए लगातार किसी दूसरे मेजर टूर्नामेंट में बेलिंगहम ने गोल का खाता खोला है। इससे पहले कतर में 2022 विश्व कप में ईरान के खिलाफ इंग्लैंड के पहले मैच में भी बेलिंगहम ने ही गोल कर टीम का खाता खोला था। बेलिंगहम यूरो 2020 और 2022 फीफा विश्व कप में खेलने के बाद 21 साल के होने से पहले तीन मेजर टूर्नामेंटों में भाग लेने वाले पहले यूरोपीय खिलाड़ी हैं।

पांड्या और पंत का प्रदर्शन भारत के लिए सबसे सकारात्मक पहलू: हरभजन सिंह

नई दिल्ली, एजेंसी। टी20 विश्व कप के ग्रुप चरण में भारत के शानदार प्रदर्शन की सराहना करते हुए पूर्व ऑफ स्पिनर हरभजन सिंह ने कहा कि हार्दिक पांड्या का उम्मीद से बेहतर गेंदबाजी प्रदर्शन और ऋषभ पंत का तीसरे नंबर पर बल्ले से उपयोगी योगदान टीम के लिए सबसे बड़ी सकारात्मक चीजों में शामिल हैं। भारत ने आयरलैंड, पाकिस्तान और अमेरिका को हराकर सुपर आठ में अपनी जगह पक्की की। कनाडा के खिलाफ टीम का आखिरी मैच गीली आउटफील्ड के कारण रद्द हो गया था।

हरभजन ने कहा, 'टीम के लिए सबसे बड़ी सकारात्मक बात यह है कि हार्दिक पांड्या विकेट चटका रहे हैं। अगर आप उनके विकेटों की संख्या पर नजर डालें तो उन्होंने उम्मीद से कहीं बेहतर प्रदर्शन किया है। विश्व कप से पहले इंडियन प्रीमियर लीग में पांड्या का

प्रदर्शन खराब था लेकिन उन्होंने अमेरिका में ग्रुप चरण के तीन मैचों में सात विकेट लेकर अच्छी वापसी की।

पंत दिसंबर 2022 में एक भयानक कार दुर्घटना में गंभीर रूप से चोटिल हो गए थे। उन्होंने लंबे इलाज और रिहैबिलिटेशन के बाद इस साल आईपीएल से प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी की। टी20 विश्व कप में उन्होंने तीसरे क्रम पर बल्लेबाजी करते हुए मुश्किल पिच पर 124.67 की स्ट्राइक रेट से रन बनाए।

हरभजन ने कहा, 'पांड्या के अलावा ऋषभ पंत ने तीसरे क्रम पर बल्लेबाजी से प्रभावित किया। उनकी भूमिका पूरी तरह से बदल गयी। विश्व कप से पहले हम संजू सैमसन को टीम में शामिल करने के लिए कह रहे थे क्योंकि उन्होंने काफी रन बनाये थे। हरभजन ने कहा, 'पंत को तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी कराना बड़ी सकारात्मक बात है। जब वह तीसरे नंबर पर खेलते है तो दायें और बायें हाथ के बल्लेबाजों का संयोजन बनता है।

भारत सुपर आठ में अपने अभियान की शुरुआत 20 जून को बारबाडोस में अफगानिस्तान के खिलाफ करेगा। हरभजन ने कहा कि टीम के पास नयी परिस्थितियों की चुनौती का सामना करने की क्षमता है। उन्होंने कहा, 'टीम के साथ बहुत सारी सकारात्मक चीजें हैं। बेशक, चुनौतियां और कठिनाई है। लेकिन चुनौतियां उनके सामने आती हैं जो बेखौफ होते हैं। यह निडर खिलाड़ियों की टीम है। उन्होंने कहा, 'उन्होंने अच्छा संघर्ष किया (न्यूयॉर्क में मुश्किल पिच पर) और बहुत अच्छा खेले। इस वजह से वे ग्रुप में शीर्ष पर रहे।

हरियाणा की तीरंदाज भजन कौर को स्वर्ण के साथ ओलंपिक टिकट

अंकिता भकत ने भी हासिल किया कोटा

ओलंम्पिक क्वालिफायर

अंताल्या (तुर्की), एजेंसी। दूसरी वरीय दीपिका को अजरबेजान की तीरंदाज ने 6-4 (26-28, 25-27, 23-26, 24-25, 27-29) से मात दी। टीम के एक अधिकारी के मुताबिक, दीपिका को उपकरण संबंधित कोई दिक्कत नहीं थी, लेकिन खराब रिलीज के कारण ऐसा हुआ। यह दबाव के कारण या किसी और वजह से हो सकता है। हरियाणा के ऐलानाबाद की रहने वाली तीरंदाज भजन कौर ने ओलंपिक क्वालिफायर तीरंदाजी चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतकर पेरिस ओलंपिक का कोटा हासिल किया। भजन ने फाइनल में शीर्ष वरीय ईरान की मोबीना फलाह को 6-2 से पराजित किया। वह तीरंदाजी में ओलंपिक कोटा हासिल करने वाली दूसरी तीरंदाज हैं। इससे पहले बी धीरज पुरुषों में कोटा ले चुके हैं।

इससे पहले भारतीय तीरंदाज अंकिता भकत अंताल्या में ओलंपिक क्वालिफायर के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश करके पेरिस खेलों के लिए व्यक्तिगत कोटा जीता था। अंकिता ने रविवार को फिलीपींस की गैब्रियल मोनिका बिडौर को हराया और क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। साथ ही अगले महीने होने वाले पेरिस ओलंपिक के लिए महिला वर्ग में व्यक्तिगत कोटा हासिल कर लिया।

नौवीं वरीय अंकिता ने प्री क्वार्टर फाइनल में 40वीं वरीयता प्राप्त प्रतिद्वंद्वी गैब्रियल पर 6-0 (26-23, 28-22, 28-23) से जीत हासिल की। भारत ने इस तरह पुरुष और महिला दोनों वर्गों में व्यक्तिगत कोटा हासिल कर लिया है। धीरज बोम्मादेवरा ने इससे पहले एशियाई क्वालीफाइंग चरण से पुरुष व्यक्तिगत कोटा हासिल किया था। इससे पहले अंकिता ने इजराइल की शेली हिल्टन को 6-4 (24-26, 25-25, 28-20, 25-25, 27-25) और मिकाएला मोशे को 7-3 (28-25, 25-27, 27-27, 28-25, 26-25) से हराकर अंतिम 16 में जगह बनायी थी। अब वह क्वार्टरफाइनल में ईरान की शीर्ष वरीय मोबिना फलाह से भिड़ेंगी। व्यक्तिगत कोटे शीर्ष आठ देशों को दिए जाते हैं। प्रत्येक देश को एक व्यक्तिगत कोटा मिलता है।

दीपिका को मिली अप्रत्याशित हार

रैंकिंग राउंड में शीर्ष पर रहने वाली दीपिका कुमारी को पहले ही मुकाबले में अजरबैजान की यावलागुल से 4-0 की बढ़त के बावजूद 4-6 से अप्रत्याशित हार का सामना करना पड़ा। भजन ने सेमीफाइनल में माल्डोवा की अलेक्जांद्रा मिर्का को 6-2 से हराया था। भजन का कोटा मिलने से पेरिस ओलंपिक में भारत का मिश्रित स्पर्धा में भी खेलना तय हो गया है। धीरज और भजन की जोड़ी यहां उतर सकती है। हालांकि भारत के पास अभी पुरुष और महिला वर्ग में टीम का कोटा हासिल करने का मौका है। भारत अपनी रैंकिंग पर कायम रहा तो 24 जून को उसे दोनों वर्गों में टीम कोटा मिल सकता है।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के ऑन करें
www.pratahkiran.com
@Pratahkiran
epaper.pratahkiran.com
@Pratahkiran

संक्षिप्त समाचार

राजस्थान में भाजपा सरकार ने कितने फीसदी वादे किए पूरे? सीएम भजनलाल शर्मा ने बताया

जयपुर , एजेंसी। राजस्थान में भाजपा सरकार ने अब तक कितने वादे पूरे कर दिए हैं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बताया है। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार को कहा कि राज्य सरकार ने लोगों से संकल्प पत्र में किए 45 फीसदी वादों को पूरा कर दिया है। नीतियों और योजनाओं के माध्यम से युवा, किसान, महिलाओं का सशक्तिकरण और गरीब कल्याण करना सरकार की प्राथमिकता है। मुख्यमंत्री रविवार को किशनगढ़ में केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी के अभिनंदन समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वर्ष 2014 के बाद सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व विकास हुआ है। किसान कल्याण केन्द्र सरकार की प्राथमिकता रहा है। इसी क्रम में प्रधानमंत्री ने अपने तीसरे कार्यकाल में अजमेर से सांसद भागीरथ चौधरी को केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री के रूप में अहम जिम्मेदारी दी है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि उन्हें पूरा विश्वास है कि चौधरी किसानों के आर्थिक एवं सामाजिक कल्याण की अहम जिम्मेदारी को पूर्ण सफलता के साथ निभाएंगे। राज्य सरकार सभी वर्गों के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य कर रही है। राज्य सरकार ने पूर्वी राजस्थान की जल आवश्यकता को देखते हुए पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ईआरसीपी) के कार्य को गति प्रदान की है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि शेखावाटी के लिए यमुना जल समझौता एवं दक्षिण राजस्थान के जिलों के लिए देवास परियोजना को मूर्त रूप देने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य किया जा रहा है। पूर्ववर्ती सरकार के कार्यकाल में पेपरलीक प्रकरणों से युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ हुआ। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि मौजूदा सरकार ने इस पर अंकुश लगाने एवं दोषियों को सजा दिलाने के लिए विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन कर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की है। राजस्थान सरकार ने 100 दिवस की कार्ययोजना को अमलीजामा पहनाकर प्रदेश एवं आमजन के हित में विभिन्न जनकल्याणकारी फैसले लिए हैं, जिनसे आपणो अग्रणी राजस्थान की संकल्पना साकार होगी।

कोलकाता में भाजपा दफ्तर के बाहर मिला बम? मचा हड़कंप

कोलकाता , एजेंसी। पश्चिम बंगाल के कोलकाता में कल रात बीजेपी दफ्तर में बम जैसी चीज मिलने के बाद हड़कंप मच गया। हालांकि बम निरोधक दस्ते ने जांच के बाद यह जानकारी दी कि वह संदिग्ध चीज बम नहीं थी। बम मिलने की सूचना के बाद कोलकाता पुलिस के बम निरोधक दस्ते की टीम और डॉग स्क्वायड यहां पहुंचे थे। पुलिस के मुताबिक एक साजिश के तहत बम जैसी चीज को रस्सी में लपेटकर सड़क के बीच रख दिया गया था और इसे बम बताया गया था। पुलिस घटना के बाद छानबीन कर रही है। स्थानीय पुलिस सीसीटीवी फुटेज की भी जांच कर रही है। पुलिस का कहना है कि इस अफवाह के पीछे की वजह पश्चिम बंगाल में चुनावों के दौरान हुए हिंसा की जांच के लिए बनाई गई टीम को डराना था। गौरतलब हो कि लोकसभा चुनावों में पश्चिम हुई हिंसक घटनाओं की जांच के लिए बीजेपी ने चार सदस्यों की एक समिति का गठन किया है। समिति में पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद, त्रिपुरा के पूर्व सीएम बिप्लब कुमार देब, बृजलाल और कविता पाटीदार शामिल हैं। रविवार को पत्रकारों से बातचीत करते हुए रविशंकर प्रसाद ने चुनाव पूरे देश में हुए, लेकिन हिंसा की खबरें सिर्फ पश्चिम बंगाल से ही आई। उन्होंने कहा, पूरे देश में चुनाव होते हैं, लेकिन चुनाव के बाद सिर्फ बंगाल में ही हिंसा क्यों होती है? यहां ग्राम पंचायत चुनाव और विधानसभा चुनाव के दौरान भी हिंसा हुई थी। आज फिर हिंसा की खबरें आई है। उन्होंने आगे कहा, क्या वजह है कि हमारे कार्यकर्ता डरे हुए हैं, लोग डरे हुए हैं।

गुरुग्रामवासियों की बल्ले-बल्ले, नए बिजलीघर से 100 कॉलोनियों और सेक्टरों में सुधरेगी पावर सप्लाई

नईदिल्ली, एजेंसी।
भीषण गर्मी के बीच गुरुग्रामवासियों के लिए राहत भरी खबर आई है। गुरुग्राम के 100 कॉलोनियों और सेक्टरों के निवासियों को जुलाई माह में अघोषित बिजली कटौती से राहत मिल जाएगी। हरियाणा विद्युत प्रसारण निगम (एचवीपीएन) अधिकारियों के मुताबिक, सेक्टर-15 के पार्ट दो स्थित 220 केवीए बिजली सब-स्टेशन को 15 जुलाई तक शुरू कर दिया जाएगा।

इसके शुरू होने के बाद सेक्टर-52, 56, बादशाहपुर और दौलताबाद के 220 केवीए सब-स्टेशन पर बिजली का भार कम हो जाएगा। इसके बाद बिजली की समस्या खत्म हो जाएगी। एचवीपीएन ने करीब 52 करोड़ रुपये की लागत से इस सब-स्टेशन को तैयार कर लिया है, लेकिन सेक्टर-72 स्थित 400 केवीए बिजली सब स्टेशन से इस सब-स्टेशन को जोड़ने की प्रक्रिया चल रही है। मेदांता अस्पताल के आसपास हाईटेंशन टावर खड़े

किए जा रहे हैं। एचवीपीएन की 31 मई तक इस सब-स्टेशन का संचालन करने की योजना थी, लेकिन निर्माणाधीन एजेंसी के धीमी गति से काम करने के कारण इस समयावधि को बढ़ाना पड़ा है। अब दावा किया जा रहा है कि जुलाई माह के मध्य में यह सब-स्टेशन शुरू कर दिया जाएगा।

इस सब-स्टेशन के बनने के बाद दौलताबाद सब-स्टेशन को सबसे अधिक राहत मिलेगी। सेक्टर-21, 22, 23, पालम विहार, उद्योग विहार एरिया को सेक्टर-15 के बिजली सब-स्टेशन से बिजली मिलना शुरू हो जाएगी। ऐसा होने के बाद दौलताबाद सब-स्टेशन से ओल्ड गुरुग्राम की करीब 50 से अधिक कॉलोनियों को पर्याप्त मात्रा में बिजली मिल जाएगी। सेक्टर-81 से 115 तक विकसित रिहायशी और व्यवसायिक इलाकों को भी फायदा मिलेगा। इस तरह सेक्टर 15, 16, 17, 31, 32, झाड़सा की बिजली को बादशाहपुर सब-स्टेशन से नए सब-स्टेशन पर शिफ्ट कर दिया जाएगा। इससे बादशाहपुर सब-स्टेशन पर बिजली का भार कम हो जाएगा। सेक्टर-52 और सेक्टर-56 के बिजली सब-स्टेशन को भी राहत मिल जाएगी। सेक्टर-52 के सब-स्टेशन से बिजली भार कम होने से आरडी सिटी और वजीराबाद को फायदा मिलेगा। आरडी सिटी कॉलोनी के निवासी तो पिछले एक महीने से बिजली के अघोषित कट का सामना कर रहे हैं। पिछले सप्ताह तो रात-रातभर इस कॉलोनी में बिजली सप्लाई गुल रही। परेशान होकर कुछ लोग तो होटल में जाकर रात बिताने को मजबूर हो गए। इस तरह गांव वजीराबाद की 50 प्रतिशत आबादी ने बिजली कटौती का सामना किया। सुशांत लोक-दो-तीन में सेक्टर-56 के बिजली सब-स्टेशन से सप्लाई होती है। कभी केबल फुंकने तो कभी ट्रांसफार्मर में खराबी के चलते इस कॉलोनी के 10 हजार परिवारों को परेशानियों का सामना करना पड़ा।

गुरुग्राम सेक्टर-82 से 84 तक विकसित वाटिका सिटी में बिजली की अघोषित कटौती को लेकर अतिरिक्त उपायुक्त ने वाटिका ग्रुप को नोटिस जारी किया है। उनसे 33 केवीए बिजली सब-स्टेशन का संचालन अब तक नहीं होने को लेकर जवाब-तलब किया है। बीते सप्ताह वाटिका सिटी के निवासियों ने जिला उपायुक्त निशांत कुमार यादव से मुलाकात की थी। उन्हें बताया था कि 11 केवीए केबल से गांव गढ़ी हरसरू स्थित 66 केवीए बिजली सब-स्टेशन से बिजली आती है। 11 केवीए केबल भी अब खस्ता हाल हो चुकी है। बिल्डर ने 33 केवीए के बिजली सब-स्टेशन बनाने हैं,।

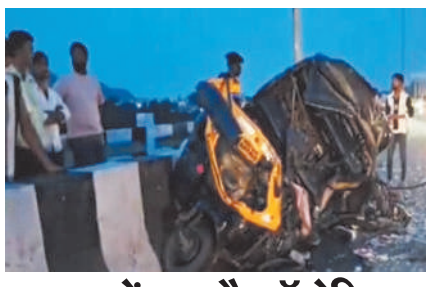

नागपुर में बस और ऑटोरिक्शा की जोरदार टक्कर, सेना के 2 जवानों की मौत और 6 घायल

नागपुर , एजेंसी। महाराष्ट्र में नागपुर के निकट रविवार शाम बस और ऑटोरिक्शा के बीच जोरदार टक्कर हो गई। इस दुर्घटना में सेना के 2 जवानों की मौत हो गई और 6 अन्य घायल हो गए, जिनमें से दो की हालत गंभीर है। पुलिस ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि शाम करीब 5 बजे कैम्पटी शहर के पास कन्हा नदी पुल पर हुई दुर्घटना में ऑटो चालक को भी गंभीर चोटें आईं। उन्होंने बताया कि दुर्घटना के कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है। नागपुर के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के अनुसार, 7 घायल व्यक्तियों का इलाज विभिन्न अस्पतालों में किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि ऑटो में सवार 8 जवानों में से विघ्नेश और धीरज राय ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस ने बताया कि अन्य घायल जवानों की पहचान दीन प्रधान, कुमार पी, शेखर जाधव, अरविंद, मुरुगन और नागरत्नम के रूप में हुई है। उसने बताया कि कैम्पटी के एक अस्पताल में भर्ती कुमार पी और नागपुर के सरकारी मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में इलाज करा रहे नागरत्नम की हालत गंभीर है।

गन्ने के जूस में थूक कर ग्राहकों को दे रहे थे दुकानदार

नोएडा एजेंसी। नोएडा सेक्टर 121 में स्थित क्लियो काउंटी सोसाइटी के पास गन्ने के जूस में थूक कर लोगों को देने का मामला सामने आया है। नोएडा पुलिस ने इस शिकायत पर तुरंत कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया है।

क्षितिज भाटिया ने पुलिस को बताया कि वह सेक्टर-121 के गढ़ी चौखंडी गांव के पास स्थित क्लियो काउंटी सोसाइटी में रहते हैं। वह शनिवार शाम पत्नी के साथ सोसाइटी के गेट नंबर एक के बाहर गन्ने के जूस की दुकान पर गए थे। वहां उन्होंने दो ग्लास गन्ने के जूस का ऑर्डर किया। उनका आरोप है कि जूस विक्रेता ने जूस के ग्लास में तीन से चार बार थूककर उन्हें जूस दिया। इसका विरोध करने पर आरोपी ने उनके साथ अभद्रता की। विरोध बढ़ने पर आरोपी अपना जूस का स्टॉल छोड़कर वहां से भाग गए। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने मुकदमा दर्ज करते हुए दो लोगों को थूक मिलाकर जूस बेचने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है।

केदारनाथ आपदा 2013 के 1 दशक के बाद भक्तों का हुजूम, बदलावों के साथ दर्शन का बढ़ा क्रेज

देहरादून , एजेंसी।
वर्ष 2013 की केदारनाथ आपदा के वक्त शायद ही किसी ने सोचा होगा कि केदारपुरी में फिर से रौनक दिखेगी। आपदा के बाद एक-दो साल तक ऐसा नजर भी आया, लेकिन अब लगभग एक दशक बाद न सिर्फ केदारपुरी नई आभा और दिव्यता के साथ उभर रही है। वहीं श्रद्धालुओं की संख्या भी ढाई गुना तक बढ़ गई।

इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि इस साल 16 जून तक केदारनाथ में 8.88 लाख श्रद्धालु आ चुके हैं। जबकि आपदा के साल इस दरमियान 3.33 लाख श्रद्धालु पहुंचे थे। आपदा से पहले 2012 में 5.73 लाख श्रद्धालु पूरे साल पहुंचे थे।

यह संख्या इस साल केदारनाथ में शुरुआत के दिनों में ही पार हो गई थी। आपदा के बाद 2014 में जरूर संख्या घटी थी, तब मात्र 40 हजार श्रद्धालु केदारनाथ आए थे। इसके बाद साल दर साल श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ने लगी। 2023 में संख्या 19. 28 लाख

पहुंच गई थी। केदारनाथ में रविवार शाम 7 बजे तक 8,87,883 यात्रियों ने दर्शन किए। पिछले 11 सालों में केदारनाथ मंदिर में आए नए बदलावों ने तीर्थस्थल को नया रूप दे दिया है। बाबा केदार के दर्शन को भक्तों की भारी भीड़ है।

दिव्य शिला बनी आस्था का नयाआपदा के दौरान आई बाढ़ ने केदारपुरी में हर तरफ तबाही मचा दी थी, लेकिन बाबा केदार के मंदिर का बाल भी बांका न हुआ। दरअसल बाढ़ के दौरान ही एक विशाल शिला ठीक मंदिर के पीछे कवच बनकर आ गई थी।

ग्यारह साल की अवधि में केदारनाथ मंदिर परिसर की तस्वीर भी पूरी तरह से बदल गई है। आदि गुरु शंकराचार्य की भव्य प्रतिमा, ओम का भव्य ढांचा परिसर में अलग ही भव्यता दे रहा है।

परिसर में यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था बढ़ी

केदारनाथ क्षेत्र में यात्रियों के ठहरने की क्षमता में भी लगातार सुधार हुआ है। वर्तमान में केदारनाथ में 10 हजार तक यात्रियों के ठहरने की क्षमता विकसित की जा चुकी है। टेंट कॉलोनी की वजह से इसमें सुधार आया है। एक अनुमान के अनुसार आपदा से पहले जहां घोड़े-खच्चर वालों का कारोबार 20 से 25 करोड़ रुपये तक ही रहता था। वो अब बढ़कर एक अरब रुपये से भी ज्यादा का हो चुका है। पिछले साल100 करोड़ की कमाई हुई।

ट्रंप ने किया इतिहास का सबसे बड़ा निर्वासन अभियान चलाने का वादा

बाइडन को दी दिमाग का टेस्ट कराने की सलाह

वॉशिंगटन, एजेंसी। इस साल अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव होने हैं। यहां राष्ट्रपति पद के लिए जो बाइडन और डोनाल्ड ट्रंप में कड़ी टक्कर है। दोनों उम्मीदवार एक दूसरे पर जमकर निशाना साधते रहते हैं। इस बीच पूर्व राष्ट्रपति ने मौजूदा राष्ट्रपति बाइडन पर तंज कसते हुए दावा किया कि वह फिर से सत्ता में आते हैं तो देश के इतिहास में सबसे बड़ा निर्वासन अभियान चलाया जाएगा। वहीं, बाइडन को सलाह दी है कि उन्हें दिमाग का टेस्ट लेना चाहिए। हालांकि, इस दौरान ट्रंप खुद व्हाइट हाउस के डॉक्टर का नाम गलत बोल गए।

मतदान करने का आह्वान

2024 के राष्ट्रपति पद की दौड़ में शामिल रिपब्लिकन उम्मीदवार ट्रंप ने वादा किया है कि अगर वह सत्ता में फिर से चुने जाते हैं तो सबसे बड़ा निर्वासन अभियान चलाएंगे। मिशिगन में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ट्रंप ने समर्थकों से नवंबर में होने वाले राष्ट्रपति के लिए मतदान करने का आह्वान किया।

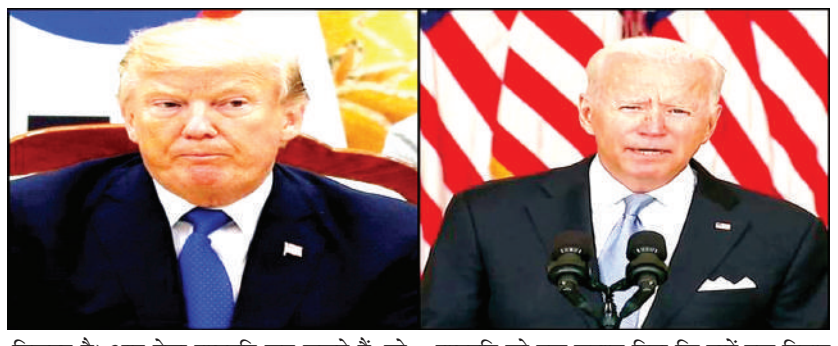

लोगों के पास दो विकल्प

उन्होंने कहा, नवंबर में हर मतदाता के पास

विकल्प है। आप ऐसा राष्ट्रपति चुन सकते हैं, जो हजारों चरमपंथी इस्लामी आतंकवादियों को हमारे देश में आने दें। या फिर आप एक ऐसा राष्ट्रपति बना सकते हैं, जो चरमपंथी इस्लामी आतंकवादियों को देश से बाहर निकाल देगा।

ट्रंप ने कहा, मेरे नए प्रशासन के पहले दिन हम अमेरिका के इतिहास का सबसे बड़ा निर्वासन अभियान शुरू करेंगे। हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। ट्रंप की यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब रिपब्लिकन खेमा प्रवासियों के हमले को उठाने की कोशिश कर रहा है। ट्रंप और उनके समर्थक चुनाव से पहले ही ऐसा माहौल बना रहे हैं कि डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति जो बाइडन ने अप्रवासियों के लिए अमेरिका आना आसान बना दिया है। इसके अलावा, डोनाल्ड ट्रंप ने शनिवार को मौजूदा राष्ट्रपति को एक सुझाव दिया कि उन्हें एक दिमाग का टेस्ट लेना चाहिए। हालांकि सुझाव के दौरान ट्रंप खुद व्हाइट हाउस के डॉक्टर का नाम भूल गए और डॉक्टर रॉनी जैक्सन को रॉनी जॉनसन कहकर बुलाने लगे। पूर्व राष्ट्रपति ने डेट्रायट में टर्निंग प्वाइंट एक्शन के एक कार्यक्रम में बाइडन पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, वह यह भी नहीं जानते कि मुद्रास्फीति शब्द का मतलब क्या होता है। मुझे लगता है कि उन्हें मेरी तरह संज्ञानात्मक परीक्षण लेना चाहिए। उन्होंने आगे कहा, डॉक्टर रॉनी जॉनसन। क्या कोई टेक्सास के सांसद रोनी जॉनसन को जानता है वह व्हाइट हाउस के डॉक्टर थे और उन्होंने महसूस किया था कि मैं इतिहास में सबसे स्वस्थ राष्ट्रपति था। इसलिए मैंने उन्हें वास्तव में बहुत पसंद किया।

दक्षिण चीन सागर में चीन और फिलीपींस के जहाज के बीच टक्कर, ड्रैगन ने पूरा आरोप मनीला पर मढ़ा

बीजिंग, एजेंसी। चीन दक्षिण चीन सागर को पूरी तरह से हड़पने के लिए लगातार दूसरे देशों से टकराता रहता है। पिछले कुछ महीनों से चीन और फिलीपींस के तटरक्षक बलों के बीच होने वाली झड़पें खबरों में रही हैं। हालांकि, इस बीच दक्षिण चीन सागर में विवादित स्प्रैटली द्वीप समूह के पास एक चीनी जहाज और एक फिलीपींस के आपूर्ति जहाज के बीच टक्कर होने की जानकारी सामने आई है। चीन के तटरक्षक बल ने बताया कि दक्षिण चीन सागर में विवादित स्प्रैटली द्वीप समूह के पास सोमवार को एक चीनी जहाज और एक फिलीपीन आपूर्ति जहाज टकरा गया। तटरक्षक बल ने आगे बताया कि फिलीपींस के आपूर्ति जहाज ने द्वितीय थॉमस शोल के निकट पानी में प्रवेश किया, जो स्प्रैटली द्वीप समूह में एक जलमग्न चट्टान है। चीनी तटरक्षक बल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म वीचैट पर कहा कि चीन बार-बार चेतावनी दे रहा था, लेकिन फिलीपींस के आपूर्ति जहाज ने गंभीर चेतावनियों को नजरअंदाज कर दिया। वहीं, एक चीनी जहाज के पास गैर-पेशेवर तरीके से खतरनाक तरीके से पहुंचा, जिसके परिणामस्वरूप टक्कर हो गई। आगे कहा कि इस पूरे मामले का जिम्मेदार फिलीपींस है। हालांकि, फिलीपींस की राजधानी मनीला का कहना है कि यह समुद्री तट, जो उसके तट से 200 समुद्री मील (370 किलोमीटर) से भी कम दूरी पर स्थित है, उसके अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त विशेष आर्थिक क्षेत्र में आता है और वह अक्सर 2016 के अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता के फैसले का हवाला देता है, जिसने ऐतिहासिक आधार पर दक्षिण चीन सागर में चीन के दावों को अमान्य कर दिया था। दक्षिण चीन सागर दुनिया के सबसे व्यस्त जलमार्गों में से एक है। यह समुद्री मार्ग से व्यापार एवं परिवहन के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्रवेश द्वार है।

मलावी उपराष्ट्रपति के शोक सभा के दौरान हादसा, काफिले के वाहन ने लोगों को रौंदा

चार की मौत, 12 लोग घायल

लिलोंग्वा, एजेंसी।
दक्षिण-पूर्वी अफ्रीकी देश मलावी के उपराष्ट्रपति की विमान हादसे में मौत के बाद आयोजित शोक सभा के दौरान हादसा हुआ है। जानकारी के मुताबिक मलावी के उपराष्ट्रपति सौलोस चिलिमा के पार्थिव शरीर को ले जा रहे काफिले में शामिल एक वाहन ने शोक मना रहे कुछ लोगों को रौंद दिया है। इस हादसे में 4 लोगों की मौत और 12 लोग घायल बताए जा रहे हैं। पुलिस के अनुसार मलावी के मध्य में एक गांव एनटचेउ में मौजूद भीड़ में अनियंत्रित वाहन जा घुसा।

राजधानी लिलोंग्वे से 180 किलोमीटर दक्षिण में चिलिमा के पैतृक गांव एनसिपे में सोमवार को उनका अंतिम संस्कार आयोजित था। इस दौरान कई वाहनों में सैन्य अधिकारी, पुलिस और नागरिक सवार थे। पुलिस के मुताबिक इस हादसे के दौरान पैदल जा रहे दो पुरुष और दो महिलाओं को गाड़ी ने टक्कर मारी,

जिससे उनके सिर में गंभीर चोंटे और आयी थी, जिनकी इलाज के दौरान मौत हो गई। वहीं इस दौरान करीब 12 लोग भी गंभीर रूप से घायल हो गए हैं।

मलावी उपराष्ट्रपति के पैतृक गांव में हजारों लोग सौलोस क्लॉस चिलिमा के अंतिम दर्शन के लिए सड़कों पर कतार में खड़े थे। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि एक तरफ भीड़ को बचाने के दौरान वाहन ने दूसरी तरफ मौजूद भीड़ पर चढ़ गया। चिलिमा के पार्टी के प्रवक्ता फेलिक्स नजावाला ने बताया कि रास्ते में कुछ लोग उपराष्ट्रपति के अंतिम दर्शन की मांग कर रहे थे। जिससे रास्ते में तनावपूर्ण माहौल हो गया था। फेलिक्स नजावाला ने आगे बताया कि डेडजा में लोगों ने रास्ते को बाधित किया और उपराष्ट्रपति के अंतिम दर्शन की मांग करने लगे, मौके पर कुछ लोगों की तरफ से काफिले पर पत्थरबाजी भी की गई थी।

बता दें कि मलावी उपराष्ट्रपति सौलोस क्लॉस चिलिमा और अन्य 8 लोगों की 10 जून को एक विमान हादसे में मौत हुई थी। जानकारी के मुताबिक एक सैन्य विमान घने कोहरे में मलावी के चिकंगावा वन में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, जिसका मलबा मंगलवार को मिला था। बता दें कि साल 2020 में चिलिमा की पार्टी यूनाइटेड ट्रांसफॉर्मेशन मूवमेंट ने 2020 के राष्ट्रपति चुनाव में राष्ट्रपति लाजरस चकवेरा की मलावी कांग्रेस पार्टी के साथ गठबंधन किया, और संयुक्त टिकट पर चुनाव लड़ा। वहीं रविवार को राष्ट्रपति लाजरस चकवेरा विमान हादसे के जांच की मांग की है।

शिकागो के इलिनोइस विश्वविद्यालय के एक छात्र ने अमेरिका, अमेरिकी सरकार और लोकतंत्र को कैंसर कहा

शिकागो, एजेंसी। शिकागो के इलिनोइस विश्वविद्यालय के एक मुस्लिम छात्र ने अमेरिका, अमेरिकी सरकार और लोकतंत्र को कैंसर कह दिया। इसके बाद छात्र को काफी आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है। कथित तौर पर छात्र ने यह बातें 3 मई, 2024 को दिए गए भाषण के दौरान कही थी। हालांकि वीडियो अब सामने आया है और खूब वायरल हो रहा है। न्यूज आउटलेट स्थ्रस्न्द्ध के मुताबिक छात्र का नाम मोहम्मद नुसैरत है। नुसैरत की लिंक्डइन प्रोफ़ाइल के मुताबिक वह इलियोनिस विश्वविद्यालय में बैचलर ऑफ़ साइंस - बीएस, डेटा साइंस के साथ कंप्यूटर साइंस की पढ़ाई कर रहा है। उसने विश्वविद्यालय के मुस्लिम स्टूडेंट एसोसिएशन के एक कार्यक्रम में दिए गए भाषण में कहा कि, अमेरिका कैंसर है। अमेरिका, अमेरिकी सरकार, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र, पूंजीवाद, ये ऐसे कैंसर हैं जिन्होंने अपनी बीमारी पूरी दुनिया में फैलाई है। उसने आगे कहा अब मुसलमान इस कैंसर से थक चुके हैं। वे अमेरिकी सरकार से थक चुके हैं। वे लोकतंत्र से थक चुके हैं। वे जीवन का एक नया तरीका देखना चाहते हैं। और मुसलमानों के रूप में, हमें यह समझना होगा कि हमारे पास जीवन का वह नया तरीका है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129, 9430990555